RNI: UPHIN/2015/60902

राजधानी से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

www.theachivertimes.com

डाक पंजीयन संख्या
एस.एस.पी.एल.डब्लू/एन
पी.439/2015-2017

वर्ष : 9 अंक : 221
पृष्ठ : 8 मूल्य : 3 रुपया
लखनऊ, सोमवार, 04 दिसम्बर, 2023

द अचीवर टाइम्स

एक नज़र

सीबीआई ने सीतापुर में इंडियन बैंक के मैनेजर और बिचौलिए को रिश्वत लेते दबोचा

लखनऊ। सीबीआई की एंटी करप्शन ब्रांच ने सीतापुर की मछरेहटा स्थित इंडियन बैंक की राठौरपुर शाखा के प्रबंधक विवेक कुमार सिंह और दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी अंकित कुमार को रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया। सीबीआई की एंटी करप्शन ब्रांच ने सीतापुर की मछरेहटा स्थित इंडियन बैंक की राठौरपुर शाखा के प्रबंधक विवेक कुमार सिंह और दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी अंकित कुमार को रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया। वह मिश्रिख निवासी कृषक विनोद कुमार से किसान क्रेडिट कार्ड का कर्ज मंजूर करने के बदले 13 हजार रुपये की रिश्वत मांग रहा था। कृषक विनोद कुमार ने इसकी शिकायत सीबीआई, लखनऊ में की थी, जिसके बाद एक टीम उसे ट्रैप करने के लिए शनिवार को सीतापुर भेजी गयी थी। जैसे ही विनोद कुमार ने अंकित कुमार को रिश्वत के 11 हजार रुपये दिए, नजदीक मौजूद सीबीआई के अधिकारियों ने उसे दबोच लिया। तत्पश्चात शाखा प्रबंधक विवेक कुमार सिंह को भी गिरफ्तार कर लिया गया। सीबीआई ने उसके प्रयागराज और सीतापुर स्थित आवास पर छापा भी मारा है। दोनों को रविवार को राजधानी स्थित सीबीआई के रिमांड मजिस्ट्रेट के सामने पेश करने के बाद जेल भेज दिया गया।

कोहरे से थमी रफ्तार, 14 उड़ानें लेट, ट्रेनें भी हुईं देरी की शिकार

लखनऊ। कोहरे के चलते ट्रेनों व विमानों का संचालन सामान्य नहीं हो पा रहा है। शनिवार को 14 फ्लाइटें लेट रहीं तो रेगुलर व स्पेशल ट्रेनें भी देरी से पहुंचीं। अमौसी से दिल्ली जाने वाली इंडिगो की रात 8.10 बजे की उड़ान 58 मिनट देरी से टेकऑफ कर सकी। दोपहर 3.10 बजे की फ्लाइट 35 मिनट, दोपहर डेढ़ बजे की उड़ान ढाई घंटे लेट रही। दिल्ली से लखनऊ आने वाली एयर इंडिया की शाम साढ़े सात बजे की उड़ान 40 मिनट, इंडिगो की शाम 6.16 बजे की फ्लाइट 46 मिनट, शाम 5.51 बजे की फ्लाइट सवा घंटे, सुबह 8.11 बजे की उड़ान 35 मिनट देरी से पहुंची। मुंबई जाने वाली इंडिगो की शाम 6.28 बजे की फ्लाइट दो घंटे, दोपहर 2.52 बजे का विमान एक घंटे 20 मिनट, बीती रात 12.34 बजे की फ्लाइट ढाई घंटे व शनिवार दोपहर 3.24 बजे की उड़ान डेढ़ घंटे देरी से रवाना हुई।

आज की जीत 2024 की हैट्रिक की गारंटी

इन परिणामों की गूंज दूर तक जाएगी: पीएम मोदी

एजेंसी

नई दिल्ली। मोदी ने कहा कि इस चुनाव में देश को जातियों में बांटने की बहुत कोशिशें हुईं लेकिन मैं लगातार कह रहा था कि मेरे लिए देश में 4 जातियां ही सबसे बड़ी जातियां है। जब मैं इन 4 जातियों की बात करता हूं तब हमारी नारी, युवा, किसान और हमारे गरीब परिवार इन 4 जातियों को सशक्त करने से ही देश सशक्त होने वाला है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और राजस्थान में भाजपा को मिली जीत को ईमानदारी, पारदर्शिता और सुशासन की जीत बताया है। उन्होंने दिल्ली में भाजपा के केंद्रीय कार्यालय में आयोजित भव्य समारोह में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि आज की विजय ऐतिहासिक है, अभूतपूर्व है। आज सबका साथ, सबका विकास की जीत हुई है।आज ईमानदारी, पारदर्शिता और सुशासन की जीत हुई है। उन्होंने कहा कि मैं अपनी माताओं-बहनों-बेटियों के सामने, मैं अपने युवा साथियों के सामने, मैं अपने किसान साथियों के सामने, मैं अपने गरीब परिवारों के सामने, उनके निर्णय के सामने नतमस्तक हूं।

मोदी ने कहा कि इस चुनाव में देश

जनता का दिल जीतने के लिए चाहिए राष्ट्रसेवा का जज्बा: मोदी

मोदी ने कहा, ऐसे लोग जो भ्रष्टाचार पर कड़ा प्रहार करने वाली जांच एजेंसियों पर प्रहार करने में जुटे हैं, वे समझ लें कि ये चुनाव नतीजे भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई का भी जनसमर्थन है। ये चुनाव नतीजे कांग्रेस और उसके घमंडिया गठबंधन के लिए बड़ा सबक है। ये सबक है कि सिर्फ कुछ परिवारवादियों के मंच पर एक साथ आ जाने से फोटो कितनी अच्छी निकल जाए, देश का भरोसा नहीं जीता। देश की जनता का दिल जीतने के लिए राष्ट्रसेवा का जज्बा होना चाहिए और घमंडिया गठबंधन में वो रत्ती भर भी नजर नहीं आता है।

जहां दूसरों से उम्मीद खत्म होती है, वहां से मोदी की गारंटी शुरु होती है: पी एम मोदी

नई दिल्ली। मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान और तेलंगाना विधानसभा चुनाव के आज नतीजे आ गए हैं। राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में भाजपा ने जबर्दस्त जीत हासिल की है वहीं तेलंगाना में भी उसके प्रदर्शन में सुधार हुआ है। इसी को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी कार्यकर्ताओं को संबोधित किया और विपक्षी दलों पर जबरदस्त तरीके से निशाना साधा। उन्होंने कहा कि जैसे-तैसे जीतने के लिए हवा-हवाई बातें करना और लोभ-लालच की घोषणाएं करना मतदाता पसंद नहीं करता। उन्होंने कहा कि भारत का वोटर ये जानता है कि जब भारत आगे बढ़ता है, तो राज्य आगे बढ़ता है, हर परिवार का जीवन बेहतर होता है। इसलिए वो बीजेपी को चुन रहा है, लगातार चुन रहा है।

जीत ने दे दी 2024 की हैट्रिक की गारंटी

उन्होंने कहा, कुछ लोग तो कह रहे हैं कि आज की इस हैट्रिक ने 2024 की हैट्रिक की गारंटी दे दी है। आज के जनादेश ने यह भी साबित किया है कि भ्रष्टाचार, तुष्टिकरण और परिवारवाद को लेकर देश के भीतर, देश के हर नागरिक के दिल में जीरो टॉलरेंस बन रही है। आज देश को लगता है कि इन तीन बुराइयों को खत्म करने में अगर कोई प्रभावी है, तो वह भाजपा ही है। भाजपा की केंद्र सरकार ने देश में भ्रष्टाचार के विरुद्ध जो अभियान छेड़ रखा है, उसको भारी जनसमर्थन मिल रहा है। यह उन दलों, नेताओं को मतदाता की साफ-साफ चेतावनी है, जो भ्रष्टाचारियों के साथ खड़े होने में जरा भी शर्म महसूस नहीं करते। उन लोगों को आज देश की जनता ने साफ-साफ संदेश दे दिया है।

को जातियों में बांटने की बहुत कोशिशें हुईं लेकिन मैं लगातार कह रहा था कि मेरे लिए देश में 4 जातियां ही सबसे बड़ी जातियां है। जब मैं इन 4 जातियों की बात करता हूं तब हमारी नारी, युवा, किसान और हमारे गरीब परिवार इन 4 जातियों को सशक्त करने से ही देश सशक्त होने वाला है। उन्होंने कहा कि मैं अक्सर कहता था कि नारी शक्ति यह ठान कर निकली है कि

आदिवासी समाज ने किया कांग्रेस का सफाया

पीएम मोदी ने कहा, चुनाव नतीजों ने एक बात और स्पष्ट की है। देश का युवा सिर्फ और सिर्फ विकास चाहता है। जहां भी सरकारों ने युवाओं के खिलाफ काम किया है, वह सरकारें सत्ता से बाहर हुई हैं। चाहे राजस्थान हो, छत्तीसगढ़ हो या तेलंगाना हो। ये सभी सरकारें पेपर लीक और भर्ती घोटालों के आरोपों में घिरी हुई थीं। परिणाम यह हुआ कि आज ये दल सत्ता से बाहर हैं। देश में भरोसा बढ़ रहा है कि भाजपा उसकी आकांक्षा को समझता है, उसके लिए काम करता है। प्रधानमंत्री ने आगे कहा, जिस कांग्रेस सरकार ने आदिवासी समाज को पूछा तक नहीं, उस आदिवासी समाज ने उसका सफाया कर दिया। आज यही भावना हमने छत्तीसगढ़, राजस्थान में देखी है। इन राज्यों में कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो गया है। आदिवासी समाज आज विकास के लिए आकांक्षी है। उसे भरोसा है कि इस आकांक्षा को सिर्फ और सिर्फ भाजपा ही पूरी कर सकती है।

भाजपा का परचम लहराएंगी। आज नारी शक्ति वंदन अधिनियम ने देश की माताओं-बेटियों के मन में नया विश्वास जगाया है।

मालवा निमाड़ ने भाजपा को सिर आंखों पर बैठाया

66 में से 48 सीटें जीती कांग्रेस के दिग्गज हारे

एजेंसी

इंदौर। मप्र विधानसभा चुनाव में मालवा निमाड़ को जीत की तिजोरी कहा जाता है। माना जाता है कि जिस भी पार्टी को यहां से बहुमत मिलता है वह प्रदेश में सरकार बना लेती है। इस बार के चुनाव में भाजपा को मालवा निमाड़ में 48 सीटें मिली हैं। यहां पर कुल 66 सीटें हैं जिसमें से एक सीट इस बार भारत आदिवासी पार्टी के खाते में भी गई है। कांग्रेस को 17 सीटों पर संतोष करना पड़ा है।

पिछली बार कांग्रेस को मिली थी 35 सीटें

पिछले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को मालवा निमाड़ से 35 विधानसभा सीटें मिली थी लेकिन इस बार कांग्रेस को 17 सीटों से ही संतोष करना पड़ा है। कांग्रेस के कई बड़े उम्मीदवार इस बार के चुनाव में हार गए हैं। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सज्जन सिंह वर्मा को भाजपा के राजेश सोनकर ने हरा दिया। सज्जन यहां के दिग्गज नेता माने जाते थे और उन्हें हराना आसान नहीं था। वहीं भाजपा से कांग्रेस में आए पूर्व मुख्यमंत्री कैलाश जोशी के बेटे दीपक जोशी भी खातेगांव से चुनाव हार गए। इंदौर में जीतू पटवारी को भी हार मिली है।

कई जिलों में एक भी सीट नहीं मिली

कांग्रेस को मालवा निमाड़ के कई जिलों में एक भी सीट नहीं मिली। इंदौर, बुरहानपुर, खंडवा, शाजापुर, नीमच और देवास में एक भी सीट नहीं मिली है, जबकि यह जिले पहले कांग्रेस का गढ़ माने जाते थे।

किसानों की 2000 एकड़ जमीन ली जाएगी

पूर्वांचल एक्सप्रेसवे के किनारे टाउनशिप बसाने का खाका तैयार

एजेंसी

लखनऊ। जिन गांवों की जमीन पर टाउनशिप बसाई जाएगी, उनमें चांद सराय, कासिमपुर बिरुहा, हबुआपुर, मोअज्जमनगर, सठवारा, पहाड़नगर टिकरिया, सिद्धपुरा, कबीरपुरम, मगहुआ, बेली एवं भटवारा शामिल हैं। उत्तर प्रदेश आवास विकास परिषद ने पूर्वांचल एक्सप्रेसवे के किनारे छह लाख की आबादी वाली टाउनशिप बसाने का खाका खींच लिया है। मोहनलालगंज क्षेत्र में स्थित नई जेल के पास यह टाउनशिप होगी। यहां लोगों को प्लॉट मिल सकेंगे। इसके लिए 11 गांवों के किसानों की 2000 एकड़ जमीन ली जाएगी। दावा किया जा रहा है कि एक माह में इसका ले-आउट भी तैयार हो जाएगा। उत्तर प्रदेश आवास विकास परिषद किसानों की जमीन के अधिग्रहण की तैयारी कर रही है। जिन गांवों की जमीन पर टाउनशिप बसाई जाएगी, उनमें चांद सराय, कासिमपुर बिरुहा, हबुआपुर, मोअज्जमनगर, सठवारा, पहाड़नगर

टिकरिया, सिद्धपुरा, कबीरपुरम, मगहुआ, बेली एवं भटवारा शामिल हैं। यहां के किसानों को नोटिस जारी करने का काम चल रहा है।

40 से 45 मीटर चौड़ी होंगी सड़कें

टाउनशिप में आधी जमीन तो सड़क, ड्रेनेज, नाली आदि बनाने में ही चली जाएगी। महज 50 फीसदी जमीन पर ही प्लॉट कटेंगे, जिसमें से 5 फीसदी व्यावसायिक होंगे। प्रमुख सड़कें 40 से 45 मीटर चौड़ी होंगी।

कॉम्प्लेक्स के साथ बनेंगे अपार्टमेंट

पूर्वांचल एक्सप्रेसवे के किनारे बसने वाले शहर में आवास विकास व्यावसायिक केंद्रों एवं रिहायशी मल्टी स्टोरी बिल्डिंग के निर्माण के लिए भी बड़े-बड़े प्लॉट काटेगा, जिस पर बिल्डर निर्माण करके बाजार और फ्लैट विकसित करेंगे। ऐसे प्लॉट अनुमानित 1000 एकड़ जमीन के पांच फीसदी हिस्से पर काटे जाएंगे।

स्कूल और अस्पताल के लिए भी होंगे प्लॉट

टाउनशिप में रहने वाले परिवारों के बच्चों को बेहतर शिक्षा मिल सके एवं बीमार होने पर अच्छा उपचार हो सके, इसके लिए प्राइमरी स्कूल, इंजीनियरिंग एवं प्रबंधन कॉलेजों के साथ ही अस्पतालों के लिए भी प्लॉट आरक्षित किए जाएंगे।

सर्किल रेट का चार गुना मुआवजा

आवास विकास सूत्रों ने बताया कि जिन गांवों के किसानों की जमीन का अधिग्रहण होगा, उनको सर्किल रेट का चार गुना मुआवजा मिलेगा। अफसरों का अनुमान है कि मुआवजा दर औसतन 45 लाख रुपये प्रति बीघा हो सकता है। दरअसल, अलग-अलग गांवों की जमीन का सर्किल रेट अलग-अलग है, जिससे मुआवजा दर भी अलग-अलग ही तय की जाएंगी।

इधर, एलडीए ने शासन से मांगी 2882 एकड़ जमीन के अधिग्रहण की मंजूरी

सुल्तानपुर रोड की आईटी सिटी एवं वेलनेस सिटी टाउनशिप को धरातल पर उतारने के लिए एलडीए ने 2882 एकड़ जमीन का अधिग्रहण करने के लिए शासन की मंजूरी मांगी है। एलडीए वीसी डॉ. इंद्रमणि त्रिपाठी ने बताया कि इस सिलसिले में अपर मुख्य सचिव आवास को पत्र भेजा गया है। 2882 एकड़ में से 1582 एकड़ में आईटी सिटी एवं 1300 एकड़ में वेलनेस सिटी विकसित होगी। दोनों टाउनशिप का ले-आउट भी तैयार हो चुका है।

आईटी सिटी एवं वेलनेस सिटी के लिए इन गांवों की जमीन ली जाएगी

सोनिकपुरवा, वीरमपुर, कुंवर बहादुर खेड़ा, जगमतखेड़ा, उम्मीदखेड़ा, जगन्नाथगंज, परेहटा, रकीबाबाद, आदमपुर एवं तकिया की जमीन का अधिग्रहण करने की अनुमति मांगी गई है। उम्मीद है कि दो सप्ताह में मंजूरी मिल जाएगी। इसके बाद अधिग्रहण की अधिसूचना जारी कर मुआवजा बांटने की प्रक्रिया शुरू होगी।

तेलंगाना से 2024 की जीत देख रही कांग्रेस

राहुल के 'RRR-जादू' ने कैसे दक्षिण में खोला एक और गेट

एजेंसी

तेलंगाना। तेलंगाना पर कब्जा करने के लिए कांग्रेस नेतृत्व और स्थानीय नेताओं की टीम ने बेहतर तालमेल के साथ चुनावी रणनीति तैयार की। भारत जोड़ो यात्रा के अलावा भी प्रदेश में अन्य यात्राएं प्लान की गईं, ताकि जनता तक पहुंचा जा सके। कांग्रेस ने जनता की भावना को समझा और प्रदेश में सीएम चंद्रशेखर राव को निशाना बनाया।

मध्य प्रदेश,राजस्थान और छत्तीसगढ़ में भाजपा सत्ता पर काबिज होने जा रही है। लेकिन, तेलंगाना ने कांग्रेस की इज्जत बचा ली। यहां कांग्रेस ने केसीआर की बीआरएस को पार्टी ने बड़े अंतर से हरा दिया है। लोकसभा चुनाव 2024 के लिहाज से देखें तो ये कांग्रेस के लिए बेहद अहम जीत है। सरल शब्दों में कहें तो तेलंगाना की जीत किसी जादू से कम नहीं है। इस जीत से कांग्रेस के लिए दक्षिण में एक और गेट खुल गया है। तेलंगाना की जीत से कांग्रेस आंध्र प्रदेश में भी बढ़त ले सकती है। क्योंकि राज्य में जगन मोहन रेड्डी और चंद्रबाबू नायडू की हालत कमजोर नजर आ रही है। तेलंगाना में कांग्रेस ने चुनाव की मजबूत तैयारी की थी। यहां चुनाव का ऐलान होने से एक साल पहले से ही पार्टी ने चुनाव प्रचार शुरू कर दिया था। चुनावी रणनीति की पूरी कमान कांग्रेस आलाकमान के पास थी। पिछले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को सिर्फ 6 सीटें मिली थीं, ऐसे में पार्टी इस चुनाव में कोई भी चूक नहीं करना चाहती थी। इसलिए राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा ने भी कर्नाटक की तरह तेलंगाना में भी लंबा वक्त गुजारा था। तेलंगाना पर कब्जा करने के लिए कांग्रेस नेतृत्व और स्थानीय नेताओं की टीम ने बेहतर तालमेल के साथ चुनावी रणनीति तैयार की। भारत जोड़ो यात्रा के अलावा भी प्रदेश में अन्य यात्राएं प्लान की गईं, ताकि जनता तक पहुंचा जा सके। कांग्रेस ने जनता की भावना को समझा और प्रदेश में सीएम चंद्रशेखर राव को निशाना बनाया। पार्टी ने आंतरिक सर्वे कराया और तेलंगाना में जिताऊ उम्मीदवारों की खोज कर उन्हें ही टिकट दिया जो जीत सके। कांग्रेस ने पूरा फोकस वेलफेयर मॉडल और डेवलपमेंट मॉडल पर रखा। पार्टी ने वादा किया है कि वो हर युवा को चार हजार रुपये हर महीना, महिलाओं को ढाई हजार रुपये, बुजुर्गों के लिए चार हजार रुपये पेंशन और किसानों को 15 हजार रुपये देगी। इसके अलावा तेलंगाना में जादू भी नजर आया। इस जादू का मतबल राहुल गांधी और रेवंत रेड्डी से है। चुनावी कैंपेन के दौरान राहुल गांधी ने तेलंगाना में करीब 26 रैलियां की थीं। प्रियंका गांधी ने भी यहां पूरा जोर लगाया हुआ था। पार्टी के बड़े दिग्गज के तौर पर जहां राहुल-प्रियंका ने मोर्चा संभाला था, वहीं जमीन पर रेवंत रेड्डी लगे हुए थे। रेवंत रेड्डी दो सीटों कोडांगल और कामारेड्डी से चुनाव लड़ रहे हैं। कोडांगल उनकी पारंपरिक सीट रही है जबकि कामारेड्डी में उनका मुकाबला सीधे मुख्यमंत्री केसीआर से रहा है।

बेरोजगार

कपड़ा व्यापारी को अगवा कर लूटने वाले दरोगा-हेड कांस्टेबल गिरफ्तार, थानेदार सस्पेंड

एजेंसी

लखनऊ। व्यापारी को अगवा कर लूटने व फिरौती मांगने के मामले में रविवार को आरोपी दरोगा और हेड कांस्टेबल को गिरफ्तार कर लिया गया। दोपहर बाद दोनों को कोर्ट में पेश किया गया। जहां से वह जेल भेजे गए। एफआईआर में नामजद बर्खास्त दरोगा समेत चार अन्य आरोपियों की तलाश में कई जगहों पर पुलिस ने दबिश दी। कुछ लोगों को हिरासत में भी लिया है। उधर मामले में लापरवाही बरतने वाले हसनगंज थानेदार इंस्पेक्टर राजकुमार को पुलिस कमिश्नर ने सस्पेंड कर दिया। बिजनौर निवासी इश्तियाक आजमगढ़ में कपड़ा बेचने गए थे। 29 नवंबर को बोलेरो सवार युवक उनको अगवा कर लाए थे। निराला नगर स्थित चरन गेस्ट हाउस में उनको बंधक बनाकर पीटा था। नकदी व कपड़े लूट लिए थे। फिर परिवार वालों को फोन कर 1.20 लाख की फिरौती मांगी थी। किसी तरह से उनके चंगुल से छूटकर इश्तियाक ने पुलिस को सूचना दी थी। तब खुलासा हुआ था कि उसको अगवा करने वालों में हसनगंज थाने में तैनात दरोगा अनुराग द्विवेदी, हेड कांस्टेबल युसुफ हुसैन, हिस्ट्रीशीटर दिनेश गुप्ता व नसीम, बर्खास्त सिपाही धीरेंद्र यादव, शेखर व एक अज्ञात पर एफआईआर दर्ज हुई थी। डीसीपी सेंट्रल अपर्णा रजत कौशिक ने बताया कि रविवार को आरोपी अनुराग व युसुफ की गिरफ्तारी कर ली गई है। अन्य की तलाश में टीमें लगाई गई हैं। जल्द उनकी भी गिरफ्तारी की जाएगी।

व्यापारी के दर्ज किए बयान

वारदात के बाद इश्तियाक अपने घर बिजनौर चले गए थे। तहरीर पर मोबाइल नंबर तक नहीं लिखा था। बिजनौर पुलिस की मदद से उनके बारे में जानकारी जुटाई गई। जिसके बाद लखनऊ पुलिस की एक टीम बिजनौर जाकर उनके बयान दर्ज किए। जिसमें उन्होंने पूरी घटना बताई। दरअसल इश्तियाक को आरोपियों ने धमकाया था। इस वजह से वह डरकर चले गए थे। सामने नहीं आ रहे थे।

बर्खास्त किए जाएंगे आरोपी पुलिसकर्मी

प्रकरण को उच्चाधिकारियों ने बेहद गंभीरता से लिया है। थाने स्तर पर लापरवाही बरती गई लेकिन जब अफसरों को जानकारी हुई तो जांच कर केस दर्ज किया गया। आरोपी पुलिसकर्मी निलंबित किए जा चुके हैं। अफसरों का कहना है कि विभागीय कार्रवाई कर इन पुलिसकर्मियों की बर्खास्तगी भी की जाएगी।

अपराधियों संग वर्दी में गए थे दोनों पुलिस वाले

पुलिस ने मामले में गहनता से जांच कर अहम साक्ष्य जुटाए हैं। सूत्रों के मुताबिक कई सीसीटीवी फुटेज में आरोपी कैद हुए हैं। ये भी साफ हो गया है कि आरोपी पुलिसकर्मी अपराधियों के साथ खुद आजमगढ़ गए थे। तब वह दोनों वर्दी में थे। साक्ष्यों को विवेचना में शामिल किया गया है।

लापरवाह थाना प्रभारी पर चला अधिकारियों का हंटर

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। आजमगढ़ के कपड़ा कारोबारी को अगवा कर निराला नगर के चरन गेस्ट हाउस में बंधक बनाकर लूटपाट के मामले में हिस्ट्रीशीटर समेत दरोगा व अन्य पुलिसकर्मियों पर लूट अपहरण समेत अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है इस पूरे खेल में इंस्पेक्टर की भूमिका को संदिग्ध देखते हुए। अपराध नियंत्रण में असफलता एवं पदीय कर्तव्यों के प्रति लापरवाही के दृष्टिगत राजकुमार सिंह को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया गया है। बता दे की आजमगढ़ जनपद के बिजनौर भोगनवाला निवासी इश्तियाक पुत्र जहूर गर्म कपड़ों के कारोबारी हैं इश्तियाक ने बीते 29 नवंबर को डायल 112 पर फोन कर सूचना दी कि उसे आजमगढ़ बस अड्डे से कुछ लोग खुद को पुलिसकर्मी बताते हुए अगवा कर लखनऊ के निराला नगर स्थित चरण गेस्ट हाउस लाये और बंधक बनाकर लूटपाट की अपहरण के इस मामले में हसनगंज इंस्पेक्टर राजकुमार सिंह के मुताबिक बीते 29 नवंबर को डायल 112 की सूचना मिलने के बाद पुलिस टीम के साथ वह मौके पर पहुंचे इश्तियाक के साथ उनका दोस्त शेखर उर्फ चुन्नू भी मौजूद था पूछताछ के दौरान पीड़ित ने पूरा घटनाक्रम बताते हुए पुलिस नें आरोपितों से बीस हज़ार की नगदी और पचास हजार कीमत के कपड़े लूट लिए और उसे छोड़ने के लिए एक करोड़ बीस लाख रुपए की फिरौती मांगी जांच के दौरान पता चला कि अपहरण में हसनगंज थाने में तैनात दरोगा अनुराग द्विवेदी मुख्य आरोपित युसूफ हुसैन हिस्ट्री सीटर दिनेश गुप्ता नसीम श्रवण साहू हत्याकांड में बर्खास्त सिपाही धीरेंद्र यादव और शेखर उर्फ चुन्नू सिंह नें वारदात को अंजाम दिया जांच में दोषी पाए जाने पर अधिकारियों के निर्देश पर इंस्पेक्टर हसनगंज राजकुमार ने लूट अपहरण बलवा समेत अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज कराया एडीसीपी मनीषा सिंह ने बताया कि मुकदमा दर्ज कर आरोपित पुलिसकर्मियों की जांच के आदेश दिए गए हैं जिसके बाद इंस्पेक्टर ने जो एफआईआर दर्ज कराई उसमें एक आरोपी शेखर उर्फ चुन्नू कुमार सिंह का नाम है जो पुलिस का पुराना मुखबिर है दरोगा के साथ वह भी आजमगढ़ गया था पुलिस के इस खेल की पोल उसके मुखबिर ने ही खोल दी बताया जा रहा है कि पुलिस टीम में रकम बंटवारे को लेकर विवाद हुआ था और शेखर नाराज हो गया जिसने इश्तियाक का साथ देते हुए पुलिस की पोल खोल दी शेखर नें इश्तियाक के साथ मीडिया कर्मियों को बयान दिया दोनों के बयान सोशल मीडिया पर वायरल हो गए इसके बाद पुलिस के इस खेल से पर्दा उठ गया और पुलिस अधिकारियों ने प्रभारी निरीक्षक हसनगंज को निलंबित करते हुए हिस्ट्रीसीटर समेत दरोगा व अन्य पुलिसकर्मियों पर मुकदमा दर्ज कर आगे की विधिक कार्यवाही सुनिश्चित की।

पुलिस को मिली गुमशुदा युवक की लाश

द अचीवर टाइम्स- नीरज शुक्ला

हैदरगढ़ बाराबंकी। प्राप्त जानकारी के अनुसार थाना सुबेहा के शुकुलपुर गांव निवासी सुरजीत कुमार उर्फ मोनू पुत्र कृष्ण कुमार अमेठी जनपद के कमरौली थाना अंतर्गत बीएचईएल स्थित ब्राइट मोटर्स कटोरा में नौकरी करता था। विगत 29 नवंबर को फोन आने पर अपनी मोटरसाइकिल से अपने गांव शुकुलपुर से निकला था ,और फिर एजेंसी पर मोटरसाइकिल खड़ी करके कहीं लापता हो गया था। काफी खोजबीन के बाद उसका कहीं पता नहीं चल सका, जिसके बाद परिजनों ने थाना कमरौली में युवक के गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। गत शनिवार को कमरौली पुलिस द्वारा भेजी गई फोटो से युवक की पहचान हो सकी। पता चला कि युवक की लाश 30 नवंबर को जनपद लखनऊ के थाना चिनहट क्षेत्र में बरामद हुई थी। मृतक के लावारिस होने की वजह से उसकी लाश को मेडिकल कॉलेज के मर्चरी हाउस में रखवा दिया गया था। सूचना मिलने के बाद परिजन शनिवार को ही लाश को लेने के लिए लखनऊ रवाना हो गए , जहां पर आवश्यक लिखा पढ़ी के बाद युवक के शव को परिजनों के हवाले कर दिया गया। युवक का शव गांव पहुंचते ही परिवार में कोहराम मच गया। युवक की मौत की खबर मिलते ही बड़ी संख्या में उनके जानने वाले रिश्तेदार आदि लोग घर पहुंचे और अंतिम संस्कार में हिस्सा लिया। अंतिम संस्कार में ब्लॉक प्रमुख हैदरगढ़ रामदेव सिंह, प्रधान संतोष सिंह,प्रधान प्रतिनिधि विनोद शुक्ला, पूर्व डीडीसी रणविजय सिंह पिंकू, भाजपा पूर्व मंडल अध्यक्ष रन बहादुर सिंह, विवेक मिश्रा, रामदीन, प्रधान प्रतिनिधि विक्रम सिंह, प्रधान सोनू सिंह,प्रधान महाराजदीन पांडेय, अजय तिवारी नन्हे, मुन्ना सिंह सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

कुत्ते को बचाने में पलटी बाइक पलटी, युवक की मौत

भादर (अमेठी)। पीपरपुर थाना क्षेत्र के अयोध्या-प्रयागराज हाईवे पर शनिवार की रात सामने आए कुत्ते को बचाने के चक्कर में बाइक अनियंत्रित होकर पलट गई। इसमें बाइक सवार एक भाई की मौत हो गई, जबकि बाइक चला रहा दूसरा भाई बाल-बाल बच गया। रामगंज कस्बा निवासी बृजेश सोनी अपने बड़े भाई राकेश सोनी (30) को सुल्तानपुर से लेकर शनिवार की रात बाइक से घर जा रहा था। रात करीब नौ बजे पीपरपुर थाना क्षेत्र के अयोध्या-प्रयागराज हाईवे पर स्थित पीपरपुर रेलवे स्टेशन मोड़ पर अचानक सामने कुत्ता आ गया। उसे बचाने के चक्कर में बाइक असंतुलित होकर पलट गई। बाइक पर पीछे बैठा उसका बड़ा भाई राकेश सोनी (30) गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना की जानकारी मिलते ही परिजन उसे जिला अस्पताल सुल्तानपुर ले गए। चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। परिजन शव को लेकर घर चले आए। रविवार की सुबह अंतिम संस्कार कर दिया गया।

एक नज़र

जिलाधिकारी ने किया निर्वाचन कार्यालय का निरीक्षण

हिमांशु त्रिपाठी (द अचीवर टाइम्स)

हरदोई। जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह ने जिला निर्वाचन कार्यालय का निरीक्षण कर प्रभारी निर्वाचन कार्यालय एसडीएम राकेश सिंह को निर्देश दिया कि कार्यालय में साफ सफाई की व्यवस्था को बेहतर बनाया जाए। टूटे हुए फर्नीचर को हटाया जाए, दस्तावेजों के रखरखाव की उचित व्यवस्था बनायी जाए। इस मौके पर जिला सूचना अधिकारी संतोष कुमार आदि संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

राहुल गांधी को जनता नेता के रूप में स्वीकार ही नहीं करती है : खन्ना

परिवारवाद की वजह से कांग्रेस पार्टी पर लदे हुए हैं : खन्ना

द अचीवर टाइम्स दीपक सिंह

शाहजहांपुर। तीन राज्यों में भाजपा की जीत के बाद शाहजहांपुर पहुंचे यूपी के वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने कांग्रेस के राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए कहा कि जनता राहुल गांधी को सीरियस ही नहीं लेती है और जनता राहुल पर भरोसा भी नहीं करती है। उन्हे नेता के रूप में स्वीकार भी नही करती है जनता। यूपी के वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने कहा कि राहुल गांधी अपने खानदान का नाम डुबो रहे हैं। वह तो सिर्फ परिवारवाद की वजह से कांग्रेस पार्टी पर लदे हुए हैं। शायराना अंदाज में यूपी के वित्त मंत्री ने राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए कहा कि वह अपने खानदान का नाम डुबो रहे हैं ।जबकि मोदी जी के नाम से ही तीन राज्यों में जीत दर्ज हुई है। मोदी जी का विश्वास जनता पर और बढ़ा है।

लकड़ी ढेकी पर सो रहे युवक की गला रेत कर हत्या

द अचीवर टाइम्स, नीरज शुक्ला बाराबंकी। कोतवाली देवा क्षेत्र की पुलिस चौकी मित्तई अंतर्गत ग्राम खेवली में बीती रात लकड़ी की ढेकी पर सो रहे एक युवक की धारदार औजार से गला रेत कर हत्या कर दी गई।सूचना पाकर मौके पर पहुंचे पुलिस के आला अधिकारियों ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्स्टम हेतु जिला मुख्यालय भेज दिया।शांति व्यवस्था कायम रखने हेतु गांव में पुलिस बल तैनात है। जानकारी के मुताविक खेवली निवासी लाल मोहम्मद पुत्र शफीक प्रतिदिन की भांति गांव के पश्चिम नरसिंह दरबार के निकट अपने निजी जमीन पर लकड़ी ढेकी रूप में जलौनी लकड़ी बेचने का कारोबार करता था ।उसी के बगल स्थित खेत में मटर आदि की फसल की रखवाली हेतु मचान बनाकर उसी पर रात को लेटता था।बीती रात किन्ही अज्ञात लोगों द्वारा मचान के समीप पुवाल की खरही की आड़ में लाल मोहम्मद की धारदार औजार से गला रेतकर हत्या कर दी गयी।सुबह जब मृतक अपने घर चाय नास्ता करने नहीं गया तो छोटा भाई ताज़ मोहम्मद ढेकी पर पहुंचकर आवाज लगाई और इधर उधर देखा तो अपने भाई की खून से लथ पथ लाश को देखकर चिल्लाने लगा।इतने पर परिवारीजन व अमाम ग्रामीण भी इकट्ठा हो गये।मृतक के बड़े भाई मोहमद अहमद की सूचना पर घटना स्थल पर अपर पुलिस अधीक्षक उत्तरी आसुतोष मिश्रा,क्षेत्राधिकारी नगर बीनू सिंह,क्षेत्राधिकारी फतेहपुर रघुवीर सिंह,महिला थानाध्यक्ष मुन्नी सिंह,देवा कोतवाल प्रदीप कुमार सिंह,जहाँगीराबाद कोतवाल अजीत कुमार विद्यार्थी सहित फतेहपुर व कुर्सी के कोतवाल मय फोर्स के आनन फानन में पहुँच गये।घटना स्थल पर डॉग स्क्वाड व फोरेंसिक टीम द्वारा भी घटना के खुलासा हेतु प्रयास किया गया।परन्तु खबर लिखे जाने तक घटना का खुलासा नहीं हो सका।पुलिस सभी विन्दुओं को दृष्टिगत रखते हुए जाँच पडताल में जुटी है।वही गांव में शांति व्यवस्था कायम रखने हेतु पुलिस बल तैनात है।ग्रामीणों के अनुसार मृतक का अगली 19 फरवरी को विवाह भी होना तय था।मृतक अपने चार भाइयों में तीसरे नंबर पर था दूसरे नंबर का भाई तौफीक सहित सभी परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है।

सुपरवाइजर की मौत मामले की पुलिस ने खंगाली सीसीटीवी फुटेज

जगदीशपुर (अमेठी)। कठौरा के शो-रूम के सुपरवाइजर का शव लखनऊ के चिनहट में मिलने के बाद पुलिस ने जांच तेज कर दी है। पुलिस सीसीटीवी फुटेज व मोबाइल कॉल डिटेल खंगाल रही है। पुलिस का कहना है कि जांच के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। बाराबंकी के शुकुलपुर के रहने वाले सुजीत कुमार तिवारी कठौरा में एक कंपनी के शो-रूम में सुपरवाइजर था। वह बुधवार को लखनऊ एक बरात में शामिल होने गया था। उसके बाद से वह गायब था।

डीएम ने लक्ष्य के अनुरूप फॉर्म प्राप्त न करने पर जताई नाराजगी बीएलओ को दिए निर्देश

हिमांशु त्रिपाठी (द अचीवर टाइम्स)

हरदोई। डीएम मंगला प्रसाद सिंह ने विशेष संक्षिप्त मतदाता पुनरीक्षण अभियान के अंतर्गत हरदोई के वेणीमाधव विद्यापीठ में बूथों पर कार्यरत बीएलओ के कार्य का निरीक्षण किया। डीएम के अनुरुप लक्ष्य के अनुरूप फॉर्म प्राप्त न करने पर कड़ी नाराजगी जताई। साथ ही उन्होंने बीएलओ को निर्देश दिये कि इपी रेशियो व जेंडर रेशियो को ध्यान में रखते हुए फॉर्म भरने की प्रगति बढ़ाई जाए। 18-19 आयुवर्ग में फार्मों की कम संख्या पर नाराजगी जताते हुए उन्होंने सभी चारों बीएलओ को चेतावनी जारी करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि घर घर जाकर लोगों से संपर्क किया जाए। डीएम ने कहा कि यदि किसी बीएलओ को कार्य करने में कोई समस्या आती है, तो तत्काल अपने उच्चाधिकारियों को बताएं। वेणीमाधव विद्यापीठ के उपरांत उन्होंने राम जूनियर स्कूल में बने बुथों को देखा। उन्होंने कहा कि सभी प्राप्त फार्मों को तत्काल ऑनलाइन किया जाए। लक्ष्य के अनुरूप फॉर्म प्राप्त किये जायें, इसके पश्चात डीएम ने चकबन्दी प्रशिक्षण संस्थान में बने बूथों का निरीक्षण कर फॉर्म भरने की प्रगति को देखा। उन्होंने बीएलओ को बैठने की व्यवस्था को अधिक बेहतर बनाने के निर्देश दिए। इस अवसर पर जिला सूचना अधिकारी संतोष कुमार सहित अन्य सभी संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

आरोग्य मेले में नहीं बना गोल्डन कार्ड, वापस हुए लोग

भादर (अमेठी)। रामगंज स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर मुख्यमंत्री जन आरोग्य मेले में गोल्डन कार्ड नहीं बन सका। दरअसल, यहां पर इसकी व्यवस्था न होने की बात कहकर चिकित्सकों ने अपना पीछा छुड़ा लिया। इसके कारण कार्ड बनवाने आए लोगों को वापस होना पड़ा। बेलसौना निवासी सत्यम ने बताया कि आयुष्मान भारत के तहत गोल्डन कार्ड बनवाने आए थे, मौजूद चिकित्सा कर्मियों ने कहा कि कार्ड नहीं बन रहा है। इसी वजह से वापस जाना पड़ रहा है। प्रतापगंज निवासी विजय चौरसिया जन आरोग्य मेले में इलाज करवाने आए थे। गांठ में दर्द था, बताया की चिकित्सक ने जांचकर दवाई दी है। रामपुर की गर्भवती पुष्पा देवी ने बताया कि खून की जांचकर एएनएम ने चिकित्सक के परामर्श से आयरन गैस की दवाइयां देकर पौष्टिक भोजन लेने की सलाह दी है।

पाल महासभा पाल विकास शिक्षा एवं सामाजोत्थान समिति की संयुक्त मासिक बैठक

द अचीवर टाइम्स मुकेश राजपूत

उन्नाव। अखिल भारतीय पाल महासभा व पाल विकास शिक्षा एवं सामाजोत्थान समिति की संयुक्त मासिक बैठक पाल तिराहा काशीराम कॉलोनी में रामनारायण पाल जी के आवास पर संपन्न हुई बैठक में मुख्य रूप से 25 दिसंबर को होने वाले मेधावी छात्र सम्मान समारोह कार्यक्रम पर चर्चा परिचर्चा विस्तार पूर्वक की गई कार्यक्रम की अध्यक्षता शैलेंद्र पाल पूर्व युवा अध्यक्ष अखिल भारतीय पाल महासभा उन्नाव व संचालन संतोष पाल जिला महामंत्री अखिल भारतीय पाल महासभा उन्नाव ने किया बैठक में मुख्य रूप से पाल विकास शिक्षा एवं समाजोत्थान समिति के प्रदेश अध्यक्ष एडवोकेट रामकिशोर पाल जी सचिव रामसजीवन पाल जी कोषाध्यक्ष रामाधीन पाल जी सलाहकार कमलेश पाल जी मन्साराम पाल जी विजय पाल जी प्रेम शंकर पाल जी देवांश में पाल (शिव) प्रदीप पाल जी पुष्पराज पाल जी जिला उपाध्यक्ष अखिल भारतीय पाल महासभा उन्नाव दिलीप पाल जी श्याम बाबू पाल, हिमांशु पाल, जगरूप पाल, देवनारायण पाल।

05 से 20 दिसम्बर के मध्य किया जायेगा राशन का वितरण- जिला पूर्ति अधिकारी

हिमांशु त्रिपाठी (द अचीवर टाइम्स)

हरदोई। जिला पूर्ति अधिकारी कमल नयन सिंह ने बताया है कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना के अंतर्गत दिसम्बर (2023) के सापेक्ष आवंटित खाद्यान्न को अन्त्योदय कार्डधारकों को 14 कि0ग्रा0 गेहूँ व 21 कि0ग्रा0 चावल (कुल 35 कि0ग्रा0 प्रति कार्ड) एवं पात्र गृहस्थी कार्डधारकों को 02 कि0ग्रा0 गेहूँ व 03 कि0ग्रा0 चावल (कुल 05 कि0ग्प्र0 प्रति यूनिट) निःशुल्क एवं माह अक्टूबर 2023, नवम्बर, 2023 व दिसम्बर, 2023 के सापेक्ष चीनी का सशुल्क 18.00 रू0 प्रति कि0ग्रा0 प्रति अन्त्योदय कार्ड पर कुल 03 कि0ग्रा0 कुल 54.00 रु0 में का वितरण 05 दिसम्बर से 20 दिसम्बर 2023 के मध्य किया जायेगा। खाद्यान्न के वितरण में पोर्टेबिलिटी ट्रांजेक्शन की सुविधा उपलब्ध रहेगी। विक्रेता अपने उपलब्ध स्टॉक की सीमा तक पोर्टेबिलिटी ट्रांजेक्शन कर सकेंगे। योजनान्तर्गत वितरण की अन्तिम तिथि 20 दिसम्बर 2023 होगी, जिस दिन आधार प्रमाणीकरण के माध्यम से खाद्यान्न प्राप्त न कर सकने वाले उपभोक्ताओं हेतु मोबाईल ओ0टी0पी0 वेरीफिकेशन के माध्यम से वितरण सम्पन्न किया जा सकेगा।

सपा कार्यालय पर राष्ट्रपति एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद की जयन्ती को अधिवक्ता दिवस के रूप में मनाया गया

द अचीवर टाइम्स निर्मल सैनी

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के जिला कार्यालय, 6 लाजपत राय भवन, कैसरबाग, लखनऊ पर भारत के प्रथम राष्ट्रपति एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद जी की जयन्ती को अधिवक्ता दिवस के रूप में मनाया गया। जिसमें जिलाध्यक्ष जयसिंह 'जयन्त' एवं नवनियुक्त अधिवक्ता सभा जिलाध्यक्ष अंजनी प्रकाश यादव के साथ अन्य अधिवक्ताओं द्वारा डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद जी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उनकी जयंती मानाई गयी। साथ ही समाजवादी पार्टी के नवनियुक्त जिलाध्यक्ष अधिवक्ता सभा अंजनी प्रकाश यादव का जिलाध्यक्ष जयसिंह 'जयन्त' एवम अधिवक्ता सभा प्रदेश अध्यक्ष सिकंदर यादव के साथ पार्टी के अधिवक्ताओं द्वारा माला पहनाकर भव्य स्वागत किया गया। इस मौके पर जिलाध्यक्ष अधिवक्ता सभा अंजनी प्रकाश यादव ने कहा कि हम सभी को डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद जी के बताये रास्ते पर चलना चाहिए, जिससे समाज में हम सभी एकता एवं भाईचारे का संदेश दे सकें। साथ ही उन्होंने कहा कि हम सभी अधिवक्ताओं को आगामी लोकसभा चुनाव 2024 में समाजवादी पार्टी को सेक्टर एवं बूथ स्तर तक एकजुट होकर पार्टी को मजबूत करने का काम करेंगे। साथ ही अधिवक्ता शुभम शुक्ला के आकस्मिक निधन पर 2 मिनट का मौन रखकर उनकी आत्मा की शांति के लिया प्रार्थना की गई। कार्यक्रम में मुख्य रूप से राष्ट्रीय महासचिव अधिवक्ता सभा सिराज अहमद खान, अधिवक्ता अजय यादव, अरूण यादव, अजीत कुमार पाण्डेय, अंसार अली, कृष्ण गोपाल यादव, मनोज कुमार, सुजीत कुमार, अमित, पियूष यादव, अभिनेश, रिजवी, विजय कुमार, पंकज कुमार सहित दर्जनों कार्यकर्ता मौजूद रहे।

बीएलओ बताएं, एप खुद चलाते हैं या किसी और से चलवा रहे

जगदीशपुर(अमेठी)। जाफरगंज में मतदाता पुनरीक्षण शिविर का जायजा लेने पहुंचे अयोध्या मंडल के आयुक्त गौरव दयाल ने बीएलओ से सीधा सवाल पूछा कि एप काम कर रहा है या नहीं, जवाब मिला कि चल रहा है। अगला सवाल यह रहा कि एप खुद चला रहे हैं या किसी और से ऑपरेट करवा रहे हैं। बीएलओ ने खुद एप चलाकर दिखाया। बीएलओ देवी प्रसाद शुक्ला व अमित कुमार मौर्य से 80 वर्ष से अधिक आयु के मतदाताओं के सत्यापन के बारे में भी जानकारी ली। यहां से एएच इंटर कॉलेज कॉलेज, जगदीशपुर पहुंचे आयुक्त ने बीएलओ आदित्य नारायण तिवारी, रामकुमार यादव, आशा देवी व प्रभा गुप्ता से 80 वर्ष से ऊपर के मतदाताओं की जानकारी ली। नये मतदाताओं का नाम शामिल करने के साथ एप के बारे में पूछताछ की। महिला मतदाताओं की संख्या बढ़ाए जाने को कहा।

विकसित भारत संकल्प यात्रा का आयोजन किया गया

द अचीवर टाइम्स मुकेश राजपूत

उन्नाव। विकास खंड सफीपुर क्षेत्र के पावा में विकसित भारत संकल्प यात्रा का आयोजन किया गया कार्यक्रम में पहुंचे सफीपुर विधायक ने अपने संबोधन में कहा कि इस यात्रा को प्रधानमंत्री ने 15 नवंबर 2023 को जनजातीय गौरव व आदिवासी गौरव बिरसा मुंडा की जयंती पर झारखंड के खूंटी से शुरू किया था।

यह यात्रा शुरुआत में महत्वपूर्ण जनजातीय आबादी वाले जिलों से शुरू हुई और 25 जनवरी, 2024 तक देश भर के सभी जिलों को कवर करेगी।

विकसित भारत संकल्प यात्रा का उद्देश्य

इस संकल्प यात्रा का उद्देश्य भारत सरकार के योजनाओं के बारे में जनता के बीच जागरूकता बढ़ाना और अधिक से अधिक लोगों, विशेषकर कमजोर वर्गों के लोगों को इन कार्यक्रमों के दायरे में लाना है। इस संकल्प यात्रा लोगों तक स्वच्छता सुविधाएं, आवश्यक वित्तीय सेवाएं, बिजली कनेक्शन, एलपीजी सिलेंडर तक पहुंच, गरीबों के लिए आवास, खाद्य सुरक्षा, उचित पोषण, विश्वसनीय स्वास्थ्य देखभाल और स्वच्छ पेयजल इत्यादि जैसी कल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्रदान करने पर केंद्रित है। विकसित भारत संकल्प यात्रा समावेशी विकास हासिल करने के लिए नागरिकों और सरकार के सहयोगात्मक प्रयासों को मजबूत करता है। इस मौके पर एसडीएम सफीपुर बंबालाल दिवाकर विधायक डा, रामरतन रविकर ग्राम प्रधान, संतोष कुमार राजपूत सहित लोग एवम् महिलाए मौजूद रही।

50 हजार किसानों को मिलेगी सहूलियत

ऊंचाहार (रायबरेली)। तहसील क्षेत्र के लगभग 50 हजार किसानों को फसल की उपज बेचने के लिए पट्टीरहस कैथवल गांव में बनने वाली नवीन मंडी का निर्माण शुरू हो गया। यह मंडी लगभग पांच करोड़ की लागत से साढ़े चार बीघे क्षेत्रफल में बनाई जा रही है। दरअसल, ऊंचाहार तहसील क्षेत्र में सब्जी व अनाज की बड़े स्तर पर खेती की जाती है, लेकिन फसलों की उपज को बेचने के लिए तहसील स्तर पर मंडी नहीं बनी थी। इससे किसानों को अपनी उपज बेचने के लिए दूसरी मंडियों में जाना पड़ता था, जिसके चलते समय के साथ ही अधिक खर्च होता था। कम मुनाफे में उपज बिकने से आर्थिक नुकसान होता था, लेकिन कुछ दिन पहले सरकार ने तहसील के किसानों की समस्या को देखकर मंडी का तोहफा दिया था। इसी साल 20 जुलाई को मंडी की आधारशिला रखी गई थी, जिसका निर्माण भी शुरू हो गया है।

मंदिर से ढाई किलो तांबे के नाग देवता की प्रतिमा और दान पात्र से 10हजार रुपए लेकर चोर हुए रफू चक्कर

द अचीवर टाइम्स- नीरज शुक्ला

हैदरगढ़ बाराबंकी। स्थानीय कोतवाली क्षेत्र के गोमती तट स्थित बीती रात अज्ञात चोरों ने प्राचीन अवसानेश्वर महादेव मंदिर से ढाई किलो तांबे के नाग देवता की प्रतिमा और दान पात्र से 10 हजार रुपए लेकर चोर रफू चक्कर हो गए। तहरीर के मुताबिक शनिवार शाम को पूजा पाठ व संध्या आरती के बाद रोज की भांति मंदिर के कपाट बंद कर दिए गए और पुजारी अपने घर चले गए। रविवार सुबह जब मंदिर खोलने पहुंचे पुजारी ने देखा तो मंदिर का कपाट खुला हुआ था और उसका ताला टूटा हुआ था मंदिर के अंदर रखे दो दान पात्र के शीशे टूटे हुए थे, और उसमें रखी नगदी नदारत थी। इसके अलावा ढाई किलो वजनी पीतल के नाग देवता की प्रतिमा भी गायब थी। सुरक्षा की दृष्टि से मंदिर परिसर में लगे सीसीटीवी कैमरे को जब खंगाला गया तो उसमें दो चोर चोरी करते हुए दिखाई पड़ रहे हैं लेकिन उनकी पहचान नहीं हो पा रही है। मंदिर के पुजारी ने चोरी की तहरीर कोतवाली हैदरगढ़ में देकर उचित कार्यवाही की मांग की है पुलिस घटना की तफ्तीश कर रही है।

यूपी में आदतन यातायात नियम तोड़ने वालों का रद्द होगा ड्राइविंग लाइसेंस

वाहन किए जाएंगे सीज

संवाददाता

लखनऊ। मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में शनिवार उप्र राज्य सड़क सुरक्षा परिषद की बैठक हुई। इसमें उन्होंने दुर्घटनाओं और इनमें होने वाली मौतों को न्यूनतम करने के लिए ठोस प्रयास पर जोर दिया। कहा कि वाहन चलाने वाले हर व्यक्ति को यातायात नियमों का पालन करना होगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आदतन यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों के ड्राइविंग लाइसेंस रद्द किए जाएं। उनके वाहन भी सीज होने चाहिए। साथ ही कहा कि स्पीड ब्रेकर बनाते समय लोगों की सुविधाओं का ध्यान रखा जाए। मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में शनिवार उप्र राज्य सड़क सुरक्षा परिषद की बैठक हुई। इसमें उन्होंने दुर्घटनाओं और इनमें होने वाली मौतों को न्यूनतम करने के लिए ठोस प्रयास पर जोर दिया। कहा कि वाहन चलाने वाले हर व्यक्ति को यातायात नियमों का पालन करना होगा। पहले लोगों को जागरूक करें और पुनः उल्लंघन पर पेनाल्टी लगाएं। सीएम ने कहा कि कोहरे में हादसों को कम करने के लिए जागरूकता, प्रवर्तन, इंजीनियरिंग और इमरजेंसी केयर पर फोकस करने की आवश्यकता है। कहा, आगामी 15 दिसंबर से 31 दिसंबर तक 'सड़क सुरक्षा पखवारे' के रूप में मनाया जाए। गृह, परिवहन, पीडब्ल्यूडी, बेसिक, माध्यमिक शिक्षा, एक्सप्रेसवे और हाइवे प्राधिकरण आदि के बेहतर

समन्वय के साथ इसे सफल बनाना होगा। सीएम ने कहा कि यूपी देश का पहला राज्य है, जिसने सड़क दुर्घटना जांच योजना प्रारंभ की है। इसमें तीन या इससे अधिक मृत्यु वाली दुर्घटना की जांच अनिवार्य रूप से समिति के माध्यम से करनी होगी।

यातायात पुलिस के साथ लगाएं पीआरडी जवान

सीएम ने कहा कि यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाने के लिए सरकार द्वारा होमगार्डों की तैनाती की गई है। स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप इसमें पीआरडी जवानों की तैनाती की जाए। दुर्घटना की स्थिति में 'आपदा मित्रों' की सेवाएं ली जाएं।

कमर तोड़ने वाले न हों स्पीड ब्रेकर

उन्होंने कहा कि खराब रोड इंजीनियरिंग बड़ी दुर्घटनाओं का कारण बनती है। पीडब्ल्यूडी, स्टेट हाईवे और एनएचएआई के मार्गों पर चिह्नित ब्लैक स्पॉट सुधार के काम शीघ्र पूरे हों। स्पीड ब्रेकर कमर तोड़ने वाले न बनाए जाएं।

लखनऊ में होगी ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट की स्थापना

सीएम ने कहा कि यातायात विभाग लखनऊ में ट्रेनिंग एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट की स्थापना करे। डाटा विश्लेषण प्रणाली की स्थापना का काम भी किया जाए। संचालित व प्रस्तावित सभी इंटीग्रेटेड ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम को यूपी 112 से जोड़ा जाए।

यह निर्देश भी

- ट्रॉमा सेंटर में अन्य सेवाओं के साथ ऑर्थोपेडिक और न्यूरो सर्जन की तैनाती जरूर हो।

- हर जिले में एआरटीओ (रोड सेफ्टी) की तैनाती हो। पदों के सृजन का प्रस्ताव यथाशीघ्र भेजा जाए।

- कानपुर, आगरा, मेरठ, झांसी, प्रयागराज व गोरखपुर मेडिकल कॉलेज में कौशल विकास केंद्र की स्थापना का कार्य शीघ्र पूरा करें।

- भारी वाहन के चालकों के ड्राइविंग लाइसेंस नवीनीकरण के समय आंखों की जांच जरूर हो।

- स्थानीय प्रशासन अवैध टैक्सी स्टैंड की समस्या का स्थायी समाधान करे।

- बेसिक विद्यालयों में बच्चों को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक किया जाए। माध्यमिक में निबंध लेखन व भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हो।

एक नज़र

चार राज्यों में मतगणना: यूपी की राजनीति भी तय करेगी बीजेपी की जीत और हार, सीएम योगी की प्रतिष्ठा का भी सवाल

संवाददाता

लखनऊ। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव परिणाम के साथ ही लोकसभा चुनाव की तैयारियों का बिगुल बज जाएगा। जैसा की एग्जिट पोल बता रहे यदि भाजपा राजस्थान और छत्तीसगढ़ में सरकार बनाने और मध्यप्रदेश में सरकार बचाने में सफल रही तो यूपी में भाजपा कार्यकर्ताओं और नेताओं का हौंसला बुलंद होगा। हिन्दी पट्टी के राज्य मध्यप्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ के विधानसभा चुनाव की मतगणना रविवार को होगी। तीनों राज्यों के चुनाव नतीजे लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश की भी राजनीतिक दशा तय करेंगे। तीनों राज्यों में भाजपा, कांग्रेस, सपा और बसपा ने मुकाबला किया है, लिहाजा चुनाव के नतीजे चारों ही प्रमुख दलों पर असर डालेंगे। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव परिणाम के साथ ही लोकसभा चुनाव की तैयारियों का बिगुल बज जाएगा। जैसा की एग्जिट पोल बता रहे यदि भाजपा राजस्थान और छत्तीसगढ़ में सरकार बनाने और मध्यप्रदेश में सरकार बचाने में सफल रही तो यूपी में भाजपा कार्यकर्ताओं और नेताओं का हौंसला बुलंद होगा। पार्टी को जनता के बीच विपक्षी दलों के खिलाफ माहौल बनाने में आसानी होगी। वहीं यदि नतीजे भाजपा के पक्ष में नहीं आए तो कार्यकर्ताओं का मनोबल कमजोर होगा। विपक्षी दल प्रभावी होने पर पार्टी को लोकसभा चुनाव के लिए माहौल तैयार करने में कड़ी मशक्कत करनी पड़ेगी।

विधानसभा और लोकसभा में जीतेगी भाजपा

भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष विजय बहादुर पाठक का कहना है कि तीनों राज्यों के विधानसभा चुनाव में भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार बनेगी। उन्होंने कहा कि तीनों राज्यों के चुनाव परिणाम लोकसभा चुनाव पर असर नहीं डालेंगे। लोकसभा चुनाव में जनता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चेहरे और नेतृत्व पर मतदान करेगी। उन्होंने कहा कि 2018 विधानसभा चुनाव में भी इन दिनों राज्यों में कांग्रेस की सरकार बनी थी लेकिन 2019 लोकसभा चुनाव में यूपी, राजस्थान, एमपी और छत्तीसगढ़ में भाजपा को प्रचंड जीत मिली थी।

यूपी के नेताओं के राजनीतिक कौशल की भी परीक्षा

तीनों राज्यों के चुनाव में यूपी भाजपा के नेताओं के राजनीतिक कौशल की भी परीक्षा होगी। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, जलशक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह, सहकारिता राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार जेपीएस राठौर, आयुष मंत्री दयाशंकर मिश्रा दयालु, राज्यसभा सदस्य लक्ष्मीकांत बाजपेयी, प्रदेश महामंत्री गोविंद नारायण शुक्ला, एमएलसी महेंद्र सिंह, प्रदेश प्रवक्ता राकेश त्रिपाठी सहित अन्य नेता चुनाव प्रचार और प्रबंधन में जुटे थे।

योगी का कद और लोकप्रियता बढ़ेगी

राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में यदि लोकसभा चुनाव के नतीजे भाजपा के पक्ष में रहते हैं तो इससे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का राष्ट्रीय राजनीति में कद और बढ़ेगा। साथ ही उनकी लोकप्रियता भी पहले से ज्यादा होगी। राजस्थान में 200 में से 182 विधानसभा क्षेत्रों में योगी की सभा, रैली और रोड शो की मांग हुई थी। योगी ने सबसे अधिक समय भी राजस्थान में ही दिया है।

आने वाले दिनों में और बढ़ेगा कोहरा, मौसम विभाग ने बारिश को लेकर जारी किए पूर्वानुमान

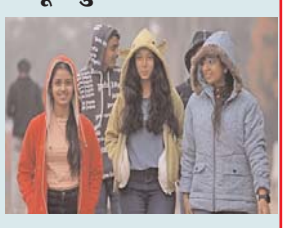

लखनऊ। आंचलिक मौसम विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह के मुताबिक, अरब सागर से लगातार नमी का संचार हो रहा है। इसके कारण पुरवा हवा चल रही है। यूपी के मौसम में बदलाव जारी हैं। सुबह और शाम को ठंड पड़ती है तो दिन में धूप की वजह से गर्मी होती हैं। बादलों की आवाजाही भी अभी बनी हुई है। मौसम अभी पूरी तरह से साफ नहीं हो सका है। मौसम विभाग ने आने वाले दिनों के लिए भविष्यवाणी की है। भले ही शनिवार को दिन चढ़ने के साथ-साथ मौसम खुल गया और धूप निकल आई हो पर सुबह और शाम होते ही कोहरा छा जाता है। मौसम में बढ़ती नमी का अहसास होने लगता है। मौसम विभाग के अनुसार एक-दो दिनों के दौरान राजधानी लखनऊ समेत प्रदेश में कुछ स्थानों पर मध्यम से घना कोहरा छाया रहेगा। आंचलिक मौसम विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह के मुताबिक, अरब सागर से लगातार नमी का संचार हो रहा है। इसके कारण पुरवा हवा चल रही है। इसका असर 3 दिसंबर को दिखेगा। कहीं-कहीं छिटपुट से हल्की बारिश की संभावना है। जबकि प्रदेश के सुदूर दक्षिणी हिस्से में आगामी 5-6 दिनों के दौरान बारिश के आसार हैं।

प्रदेश में गहराने लगा कोहरा

पूर्वी उत्तर प्रदेश में शनिवार की सुबह कहीं-कहीं घना तो कहीं ज्यादा घना कोहरा छाया रहा। बलिया में 25 मीटर दृश्यता रही, प्रयागराज में 35 मीटर रही। लखनऊ में न्यूनतम दृश्यता 400 मीटर तक रही। कोहरे का असर ट्रेन और विमान की सेवाओं पर भी पड़ रहा है। सुबह और देर रात चलने वाली बसों की रफ्तार भी कम हुई है।

तीन राज्यों में जीत के रुझान से उत्साहित भाजपा नेता बोले- भारत के मन में मोदी

संवाददाता

लखनऊ। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में भाजपा की जीत से स्पष्ट हो गया है कि देश की राजनीति में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का डंका बज रहा है। राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में भाजपा की जीत से उत्साहित यूपी के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा है कि इन नतीजों से साफ है कि भारत के मन में मोदी है। मोदी के मन में भारत है। उन्होंने कहा कि कमल खिलने का मतलब सुशासन और विकास की गारंटी है। उन्होंने कहा कि भाजपा और प्रधानमंत्री

मोदी के नेतृत्व का पूरे देश की राजनीति में डंका बज रहा है...आज पूरे आत्मविश्वास से हम कह सकते हैं कि भारत के मन में मोदी जी हैं और मोदी जी के मन में भारत है...मध्य प्रदेश में हमारी सरकार प्रचंड बहुमत के साथ फिर वापस आ रही है। राजस्थान और छत्तीसगढ़ में कमल खिल गया है... कमल खिलने का मतलब है सुशासन और विकास की गारंटी। अभी तक आए रुझानों में कांग्रेस को सिर्फ तेलंगाना में ही जीत मिली है। मध्य प्रदेश और राजस्थान में हार के साथ ही छत्तीसगढ़ उसके हाथों से निकल गया है।

लोकसभा चुनाव से पहले प्रदेश को मिल सकती हैं पांच नई ट्रेनें, पटना और देहरादून के लिए चलेंगी वंदेभारत

संवाददाता

लखनऊ। लखनऊ से पुरी के लिए अभी नीलांचल एक्सप्रेस चलाई जा रही है। ऐसे में पुरी के लिए एक और ट्रेन मिल जाने से यात्रियों को राहत मिलेगी। इस ट्रेन का रूटमैप तैयार किया जा रहा है। लोकसभा चुनाव से पहले लखनऊ को पांच नई ट्रेनों की सौगात मिल सकती है। लखनऊ से मुंबई, पुरी, कटरा, देहरादून व पटना के लिए नई ट्रेनें शुरू कराने की तैयारी है। लखनऊ से पटना व देहरादून के लिए वंदेभारत एक्सप्रेस चलाई जाएंगी, तो दूसरी ओर गोमतीनगर स्टेशन से पुरी, कटरा व मुंबई की ट्रेनें पटरी पर उतरेंगी। पूर्वोत्तर रेलवे लखनऊ मंडल का गोमतीनगर रेलवे स्टेशन भव्य व अत्याधुनिक बनाया जा रहा है। पूर्व पीएम अटल बिहारी वाजपेयी ने इस स्टेशन की नींव रखी थी। गोमतीनगर से कामाख्या व जयपुर के लिए ट्रेनें शुरू हो चुकी हैं। जबकि अगले चरण में पुरी, मुंबई व कटरा की ट्रेनें पटरी पर उतारी जानी हैं। लखनऊ से पुरी के लिए अभी नीलांचल एक्सप्रेस चलाई जा रही है। ऐसे में पुरी के लिए एक और ट्रेन मिल जाने से यात्रियों को राहत मिलेगी। इस ट्रेन का रूटमैप तैयार किया जा रहा है। लखनऊ से श्रीमाता वैष्णो देवी कटरा के लिए नई ट्रेन शुरू करने की घोषणा गत जून में ही हो चुकी है। इसको पटरी पर उतारने के लिए नोटिफिकेशन का इंतजार किया जा रहा है। ऐसे ही यहां से मुंबई के लिए डायरेक्ट ट्रेन भी शुरू करने की उम्मीद है।

देहरादून, पटना के लिए वंदेभारत चलेंगी

रेलवे अफसर बताते हैं कि पूर्वोत्तर रेलवे की पहली वंदेभारत एक्सप्रेस गोरखपुर से लखनऊ के बीच शुरू हो चुकी है। ऐसे में उत्तर रेलवे लखनऊ मंडल को भी वंदेभारत ट्रेनें मिलनी हैं। लखनऊ से पटना व लखनऊ से देहरादून वाया मुरादाबाद वंदे भारत चलाई जाएंगी। इनके टाइमटेबल पर काम किया जा रहा है।

पीएम मोदी दे सकते हैं सौगात

रेलवे प्रशासन की तैयारी है कि वंदेभारत एक्सप्रेस को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हरी झंडी दिखाएं। वहीं, गोमतीनगर से पुरी, कटरा व मुंबई की ट्रेनों को रेलमंत्री, चेयरमैन रेलवे बोर्ड हरी झंडी दिखा सकते हैं।

सीएम योगी बोले, जब भी अवसर मिला दिव्यांगजनों ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सामान्य नागरिक की तुलना में दिव्यांगजनों का प्रदर्शन हमेशा बेहतरीन रहता है। विश्व दिव्यांग दिवस के अवसर पर उन्होंने दिव्यांगजनों के लिए प्रदेश में चलाई जा रही योजनाओं का भी वर्णन किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि दिव्यांगजनों को जब भी अवसर मिला उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। ऋषि अष्टावक्र, मध्यकालीन संत सुकरात, वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग और जगतगुरु स्वामी रामभद्राचार्य इसके उदाहरण हैं। चीन में संपन्न हुए पैरा एशियाई खेलों को ही देखें तो हमारे पैरा खिलाड़ियों ने 111 मेडल जीते हैं। उन्होंने कहा कि सामान्य नागरिक की तुलना में दिव्यांगजनों का प्रदर्शन हमेशा बेहतरीन रहता है। सीएम योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दुनियाभर के दिव्यांगजनों को सम्मान देने के लिए उन्हें विकलांग की जगह एक नया शब्द दिव्यांग दिया। सीएम योगी ने रविवार को डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय के अटल ऑडिटोरियम में आयोजित विश्व दिव्यांग दिवस के कार्यक्रम को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने 2016 में दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम देश में लागू किया था। उसी कड़ी में राज्य सरकार के द्वारा भी इस अधिनियम को पूर्ण रूप से अंगीकार किया गया। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने दिव्यांगजन कल्याण से जुड़ी हुई योजनाओं की धनराशि में वृद्धि की है। पहले दिव्यांगजनों को 300 रुपए प्रतिमाह पेंशन की सुविधा मिलती थी। वर्तमान में इसे बढ़ाकर हमने 1000 रुपए मासिक कर दिया

है। आज प्रदेश के लगभग 10 लाख दिव्यांगजन इस सुविधा का लाभ प्राप्त कर रहे हैं। सीएम योगी ने कहा कि 2016-17 के बजट में प्रदेश के दिव्यांगजनों के कल्याण के लिए मात्र 312 करोड़ रुपए का प्रावधान था। वर्तमान में हमारी सरकार ने इसे बढ़ाकर 1120 करोड़ रुपए कर दिया है। कुष्ठ रोग से जो ग्रसित दिव्यांगजनों को पहले ढाई हजार रुपए की पेंशन मिलती थी। इसे बढ़ाकर हमने तीन हजार रुपए कर दिया है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2022-23 में प्रदेश के अंदर कुल 305000 दिव्यांगजनों को कृत्रिम अंग उपकरण वितरण की कार्रवाई को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाया गया है। साथ ही प्रदेश की सभी 80 लोकसभा क्षेत्रों में 8000 मोटराइज्ड ट्राई साइकिल का वितरण किया गया है। उन्होंने कहा कि दिव्यांगजनों की यात्रा के लिए राज्य सरकार प्रतिवर्ष 40 करोड़ रुपए परिवहन विभाग को दे रही है। साथ ही 4342 दिव्यांगजनों को शादी प्रोत्साहन की राशि उपलब्ध करवाई गई है। सीएम योगी ने कहा कि मानसिक दिव्यांगजन के लिए पूरे प्रदेश में पहले मेरठ, बरेली और गोरखपुर को मिलाकर कुल तीन राजकीय आश्रय गृह थे। वर्तमान में हमारी सरकार ने 6 नवीन केंद्रों की स्थापना की कार्रवाई को आगे बढ़ाया है। सीएम योगी ने कहा कि दिव्यांगजनों को उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा में अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराने के लिए डॉक्टर शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय के संचालन के साथ ही साथ प्रभु श्रीराम की पावन तपो भूमि चित्रकूट में भी जगतगुरु दिव्यांग विश्वविद्यालय को राज्य विश्वविद्यालय के रूप में मान्यता दी जा चुकी है। उत्तर प्रदेश देश का पहला राज्य है, जहां दिव्यांगजनों के लिए दो विश्वविद्यालय संचालित हैं।

राज्य स्तरीय पुरस्कार का किया वितरण

कार्यक्रम में सीएम योगी ने सामाजिक संस्थाओं एवं विशेष विद्यालयों द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। साथ ही उन्होंने दिव्यांगजन सशक्तीकरण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों/संस्थाओं, नियोक्ताओं, सर्वश्रेष्ठ दिव्यांग कर्मचारियों को राज्य स्तरीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया। इसके अलावा सीएम योगी ने कार्यक्रम में दिव्यांगजन को कृत्रिम अंग व सहायक उपकरण भी वितरित किए। साथ ही उन्होंने विशेष विद्यालयों के मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया। कार्यक्रम में पिछड़ा वर्ग कल्याण एवं दिव्यांगजन सशक्तीकरण के राज्य मंत्री, स्वतंत्र प्रभार नरेन्द्र कश्यप, मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र, प्रमुख सचिव दिव्यांगजन सशक्तीकरण सुभाष चंद्र शर्मा, डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर आर केपी सिंह, अध्यापक, छात्र-छात्राएं और अन्य गणमान्य लोग मौजूद थे।

सरकार के खिलाफ साजिश में डॉ. कफील समेत छह पर केस

किताब में नफरती बातों के जिक्र का आरोप

संवाददाता

लखनऊ। किताब लोकसभा चुनाव से पहले विशेष समुदाय के हर शख्स तक पहुंचाने की बात कर रहे थे। यह भी कह रहे थे कि किसी भी कीमत पर सरकार को उखाड़ फेंकना है गोरखपुर मेडिकल कॉलेज के पूर्व चिकित्सक कफील खान व पांच अज्ञात के खिलाफ कृष्णानगर थाने में शुक्रवार को एफआईआर दर्ज की गई है। आरोप लगे हैं कि डॉ. कफील व उनके साथी सरकार के खिलाफ साजिश रच रहे हैं और दंगा फैला सकते हैं। इसके लिए वे अपनी किताब विशेष समुदाय में बंटवा रहे हैं। किताब में सरकार विरोधी व भड़काऊ बातें लिखी गई हैं।

पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। एलडीए कालोनी सेक्टर ई- निवासी व्यापारी मनीष शुक्ला के मुताबिक शुक्रवार को वह किसी काम से माताजी की बगिया गए थे। वहां गुमटी के पीछे चार-पांच लोग बातचीत कर रहे थे। वे सभी राज्य सरकार, उनके मंत्रियों व वरिष्ठ अफसरों को लेकर अभद्र भाषा का इस्तेमाल कर रहे थे। कह रहे थे कि डॉ. कफील ने गुप्त रूप से एक किताब छपवाई है। उसे प्रदेश भर में बांटा जा रहा है। किताब लोकसभा चुनाव से पहले विशेष समुदाय के हर शख्स तक पहुंचाने की बात कर रहे थे। यह भी कह रहे थे कि किसी भी कीमत पर सरकार को उखाड़ फेंकना है। चाहे इसके लिए दंगा ही क्यों न करवाना पड़े। पुलिस ने डॉ. कफील को नामजद करते हुए पांच अज्ञात पर दो समुदायों के बीच नफरत पैदा करने, फर्जी दस्तावेज तैयार करने, समुदायों के बीच घृणा पैदा करने और धार्मिक भावनाओं को आहत करने समेत अन्य धाराओं में रिपोर्ट दर्ज की

डॉ. कफील की किताब में नफरती बातें

मनीष के मुताबिक जब वह सरकार के खिलाफ साजिश रचने वालों की बातें सुन रहे थे तभी उन्हें इस बात की भनक लग गई। इसके बाद आरोपी मौके से भागने लगे। उनके पास जो किताब थी वह गिर गई, जिसे उन्होंने पुलिस को सौंपा दिया है।मनीष ने बताया कि जो किताब मिली उसके मुख्य पेज पर डॉ. कफील खान गोरखपुर अस्पताल त्रासदी अस्पताल से जेल तक शीर्षक लिखा था। पीछे भाग पर अस्पताल से जेल तक निर्दोष डॉक्टर की आपबीती... लिखा था। मनीष का आरोप है कि किताब में मौत का तांडव, हाहाकार मोटी चमड़ी खुलती हुई कड़ियां, निर्दोष डॉ. ऑन रोड्स...जैसे भड़काऊ व नफरती अध्याय हैं। किताब में सरकार के खिलाफ झूठी बातें लिखी गई। वहीं, खुद को निर्दोष बताया गया। मालूम हो गोरखपुर मेडिकल कॉलेज में कई बच्चों की मौत के मामले डॉ. कफील जेल गए थे।

कक्षा छह की छात्रा ने फांसी लगा की खुदकुशी, स्कूल से लौटकर चुपचाप चली गई थी कमरे में

लखनऊ। पुलिस के मुताबिक इमरान व इकरार कैटरिंग का काम करते हैं। वह अपनी मां आसिया बानो व छह बहनों के साथ रहते हैं। इसमें उनकी 11 साल की बहन अरजीना भी शामिल थी। लखनऊ के आशियाना के भदरुख इलाके में कक्षा छह की छात्रा ने घर के बाथरूम में फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। मौके से कोई सुसाइड नोट बरामद नहीं हुआ। न ही परिवारीजन खुदकुशी की वजह बता सके। बहरहाल पुलिस ने शनिवार को पोस्टमार्टम कराकर शव परिवारीजनों को सौंप दिया। पुलिस के मुताबिक इमरान व इकरार कैटरिंग का काम करते हैं। वह अपनी मां आसिया बानो व छह बहनों के साथ रहते हैं। इसमें उनकी 11 साल की बहन अरजीना भी शामिल थी। अरजीना पास के ही भदरुख उच्च प्राथमिक विद्यालय में कक्षा छह की छात्रा थी। शुक्रवार को वह स्कूल गई थी।

टहनियों तक जाये बिना सर्वोत्तम फल नहीं मिलेगा।

मंजिल मिल ही जाएगी भटकते हुए ही सही, गुमराह तो वो हैं जो घर से निकले ही नहीं। लोग नई चीजें हासिल करने के बजाय आसान चीजों में लग जाते हैं। लोग नई चीजों का आविष्कार करने या अपना खुद का स्टार्टअप बनाने के बजाय और सुरक्षित नौकरियों में चले जाते हैं। इसके अलावा, डर से आत्मविश्वास और अपने ऊपर भरोसे की कमी भी हो सकती है। जो व्यक्ति लगातार डर के साथ जी रहे हैं, वे अपनी क्षमताओं पर संदेह करते हैं और जोखिम लेने के साथ आने वाली चुनौतियों के लिए खुद को तैयार नहीं पाते हैं। सिडनी बॉक्सिंग डे टेस्ट में सचिन तेंदुलकर पहली पारी में अपनी कम क्षमता के कारण नहीं बल्कि ऑफ स्टंप के बाहर की गेंद के डर के कारण आउट हुए। अगली पारी में उन्होंने किसी भी ऑफ स्टंप से बाहर की गेंद को न खेलने का जोखिम उठाने के लिए मानसिक रूप से तैयारी की और इसके परिणामस्वरूप ऐतिहासिक दोहरा शतक बनाया। 13वीं शताब्दी ई. में एक दर्जन से अधिक जहाज़ के कप्तान छोटे-छोटे मार्गों से होने वाले समुद्री व्यापार और खोज में व्यस्त थे। लेकिन लंबी यात्रा का डर, मौसम की अनिश्चितता का डर, समुद्र का डर और अंततः अज्ञात के डर ने उन्हें लम्बी समुद्री यात्रा में जाने से रोक दिया। बहादुर और साहस वाले व्यक्ति ने समुद्र की इस चुनौती को स्वीकार किया और लंबी तथा असंभव यात्रा शुरू की। उन्होंने सभी प्रतिकूलताओं के खिलाफ जाने और नई दुनिया की खोज करने का जोखिम उठाया। इसके परिणामस्वरूप एक नए समुद्री मार्ग की खोज हुई और भारतीय उपमहाद्वीप के साथ यूरोपीय व्यापार शुरू हुआ। जोखिम उठाने का परिणाम उन्हें न केवल थोड़े समय में अधिशेष व्यापार के रूप में मिला, बल्कि लंबे समय तक उनका नाम भारतीय उपमहाद्वीप में आने वाले पहले व्यक्ति के रूप में इतिहास के पन्नों पर अंकित हो गया और उनका नाम है वास्को डी गामा। डर एक प्राकृतिक मानवीय भावना है जो अक्सर जोखिम लेने में बाधा के रूप में कार्य करती है । यह एक शक्तिशाली प्रभाव है जो व्यक्तियों को पंगु बना सकती है, उन्हें उनकी वास्तविक क्षमता प्राप्त करने से रोक सकती है। यह शोध किया गया है कि कैसे डर के साथ रहना हमें जोखिम लेने से रोक सकता है, विकास और सफलता के अवसरों से वंचित कर सकता है। हालाँकि, यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि अपने आराम क्षेत्र से बाहर निकले बिना, हम कभी भी जीवन में सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त नहीं कर पाएंगे। जोखिम लेने के सकारात्मक पहलुओं की जांच करके, हम डर पर काबू पाने और व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास के अवसरों को अपनाने के महत्व को समझ सकते हैं। जोखिम लेने की क्षमता में सबसे बड़ा स्पीड ब्रेकर- डर डर विभिन्न रूपों में प्रकट हो सकता है, जैसे असफलता, अस्वीकृति या अज्ञात का डर। यह व्यक्तियों को अलग-अलग तरह से प्रभावित करता है और उनकी निर्णय लेने की क्षमता पर असर डाल सकता है। हमारे पास पानीपत की तीसरी लड़ाई का एक बड़ा उदाहरण है जहां दुश्मन का डर खुद से ज्यादा शक्तिशाली था। इसने मराठों को मानसिक रूप से बीमार बना दिया और उनके निर्णय खंडित हो गए, और इससे मराठाओं की सबसे बड़ी हार हुई। लोग अक्सर अपनी वर्तमान परिस्थितियों के साथ सहज हो जाते हैं, जोखिम लेने के बजाय अपने आराम क्षेत्र के दायरे में रहना पसंद करते हैं। असफलता का डर व्यक्तियों को पीछे धकेल देता है, क्योंकि वे शर्मिंदगी, निराशा या वित्तीय नुकसान जैसे संभावित परिणामों से डरते हैं। डॉक्यूमेंट्री 14 पीक्स में , हम उस आदमी को देखते हैं जिसे किसी चीज का डर नहीं है, वह आसानी से जोखिम ले सकता है और कल्पना से परे जा सकता है। उस एक युवा ने मजबूत मानसिकता के साथ 14 चोटियों पर विजय प्राप्त की। साथ ही, यह डर एक बाधा बन जाता है, जो उन्हें नई संभावनाएं तलाशने से रोकता है। लोग नई चीजें हासिल करने के बजाय आसान चीजों में लग जाते हैं। लोग नई चीजों का आविष्कार करने या अपना खुद का स्टार्टअप बनाने के बजाय और सुरक्षित नौकरियों में चले जाते हैं। इसके अलावा, डर से आत्मविश्वास और अपने ऊपर भरोसे की कमी भी हो सकती है। जो व्यक्ति लगातार डर के साथ जी रहे हैं, वे अपनी क्षमताओं पर संदेह करते हैं और जोखिम लेने के साथ आने वाली चुनौतियों के लिए खुद को तैयार नहीं पाते हैं। सिडनी बॉक्सिंग डे टेस्ट में सचिन तेंदुलकर पहली पारी में अपनी कम क्षमता के कारण नहीं बल्कि ऑफ स्टंप के बाहर की गेंद के डर के कारण आउट हुए। अगली पारी में उन्होंने किसी भी ऑफ स्टंप से बाहर की गेंद को न खेलने का जोखिम उठाने के लिए मानसिक रूप से तैयारी की और इसके परिणामस्वरूप ऐतिहासिक दोहरा शतक बनाया। डर व्यक्तियों को किसी भी स्थिति के नकारात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करता है, जिससे जोखिम के विपरीत मानसिकता पैदा होती है । वे अज्ञात क्षेत्र में जाने की बजाय यथास्थिति पर कायम रहने के इच्छुक हो सकते हैं। जोखिम लेने के प्रति यह नापसंदगी किसी की क्षमता को सीमित कर सकती है और व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों में प्रगति में बाधा उत्पन्न कर सकती है। जोखिम उठाएं और सार्थक परिणाम पाएं हालाँकि डर के साथ जीना सुरक्षित और आरामदायक लग सकता है, लेकिन यह अंततः व्यक्तियों को जीवन से सर्वश्रेष्ठ प्राप्त करने से रोकता है। महात्मा गांधी ने बिल्कुल नई तरह का सत्याग्रह शुरू करने का जोखिम उठाया। कई लोगों ने उनकी आलोचना की लेकिन उनके अनोखे विचार ने न केवल उन्हें महानतम नेताओं में से एक बनाया बल्कि देश की आजादी हासिल करने में भी मदद की। व्यक्तिगत विकास, नवाचार और सफलता के लिए जोखिम उठाना आवश्यक है। जोखिम उठाना व्यक्तियों को अपने आराम क्षेत्र से बाहर निकलने की चुनौती देता है, जिससे उन्हें नए अवसरों और अनुभवों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। मैडम क्यूरी का उदाहरण यहाँ उपयुक्त है। उसने रेडियोऐक्टिविटी का प्रयोग करने का जोखिम उठाया। किसी ने भी उन पर विश्वास नहीं किया लेकिन उनके सकारात्मक दृष्टिकोण से रेडियोधर्मी तत्वों पर सफल परिणाम मिले और उन्हें अपने अनुकरणीय कार्य के लिए दो नोबेल पुरस्कार मिले। इसके अलावा, जोखिम उठाना व्यक्तिगत विकास, लचीलापन और अनुकूलन क्षमता को बढ़ावा देने के लिए एक मंच प्रदान करता है। हंगरी की एथलीट कैरोली टाकाक्स इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। द्वितीय विश्व युद्ध में एक हाथ खोने के बाद उन्होंने साहस दिखाया और फिर से ओलंपिक में भाग लेने का जोखिम उठाया। खुद लगातार मेहनत और जीत के सकारात्मक रवैये ने ओलंपिक में स्वर्ण पदक दिला दिया। इसके अतिरिक्त, केवल जोखिम लेने में संलग्न होकर ही व्यक्ति अपने सच्चे जुनून और क्षमता की खोज कर सकते हैं। यह व्यक्तियों को अपनी सीमाओं का परीक्षण करने के लिए प्रेरित करता है, उन्हें असफलताओं से सीखने और उन सबक को अपनाने में सक्षम बनाता है जो अन्यथा संभव नहीं होते। क्या डर हमेशा बुरा होता है? प्रतिपक्ष पर सोच उत्तर है- नहीं। डर का आयाम सापेक्ष भी है और व्यक्तिपरक भी। बचपन में हम बच्चों को सजा का डर दिखाते हैं। इससे वे अधिक अनुशासित हो जाते हैं । इसलिए जीवन में कुछ डर जरूरी हैं। कानून का डर कानून व्यवस्था को प्रभावशाली बनाता है, समाज का डर लोगों को जिम्मेदार और जवाबदेह बनाता है और विफलता का डर लोगों को कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित करता है। कल्पना से परे जाना आप जो कुछ भी चाहते हैं वह डर के दूसरी तरफ है जबकि जोखिम लेने के फायदे स्पष्ट हैं, यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि डर पर काबू पाना कहना जितना आसान है, करने में उतना आसान नहीं है। डर मानव मनोविज्ञान में गहराई से समाया हुआ है और इसका पूर्ण उन्मूलन संभव नहीं है। हालाँकि, व्यक्ति डर को कम करने और जोखिम लेने की मानसिकता विकसित करने के लिए रणनीतियाँ अपना सकते हैं। डर अक्सर संभावित परिणामों के नकारात्मक दृष्टिकोण से उत्पन्न होता है। अपनी मानसिकता को नए सिरे से तैयार करके और जोखिम लेने के सकारात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करके, हम डर को कम कर सकते हैं और आत्मविश्वास को मजबूत कर सकते हैं। यहां शिक्षा व्यवस्था और परिवार की भूमिका सामने आती है। शिक्षा प्रणाली को स्वयं में संशोधन करने और छात्रों को असफलताओं से सीखने और जोखिम लेने, विकल्प खोजने और पाठ्यक्रम से परे जाने की शिक्षा देने की आवश्यकता है। असफलताओं को असफलता के रूप में देखने के बजाय, उन्हें सफलता और सीखने के अवसरों की दिशा में कदम के रूप में देखा जा सकता है। अगली महत्वपूर्ण बात लचीलापन विकसित करने के बारे में है। लचीले व्यक्ति विकास और सुधार के लिए ईंधन के रूप में असफलताओं का उपयोग करके असफलताओं, रुकावट और अस्वीकृति से उबर सकते हैं। हमारे पास स्पेसक्स का एक बहुत बढ़िया उदाहरण है। हमें दूसरों को लाभ पहुंचाने की दिशा में मार्गदर्शन करने के लिए दैनिक जीवन में नैतिकता की आवश्यकता है। इसीलिए भारतीय समाज में हम प्रार्थना करते हैं। डर के साथ जीना निस्संदेह व्यक्तियों को जोखिम लेने से रोक सकता है। विफलता, अस्वीकृति और अज्ञात का डर अक्सर एक बाधा के रूप में कार्य करता है, जो व्यक्तियों को उनकी पूरी क्षमता तक पहुंचने से रोकता है। हालाँकि, व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास में जोखिम लेने के महत्व को पहचानना आवश्यक है। अपने आराम क्षेत्र से बाहर निकलकर, अवसरों को अपनाकर और अपनी सीमाओं को चुनौती देकर, हम व्यक्तिगत विकास प्राप्त कर सकते हैं, नवाचार में योगदान दे सकते हैं और सफलता प्राप्त कर सकते हैं। डर पर काबू पाने के लिए अपना दृष्टिकोण बदलना, लचीलापन बनाना, विकास की मानसिकता अपनाना, यथार्थवादी लक्ष्य निर्धारित करना और समर्थन प्राप्त करना आवश्यक है। ऐसा करने से, हम जोखिम लेने वाली मानसिकता विकसित कर सकते हैं, जो हमें जीवन में मिलने वाले सर्वोत्तम परिणामों तक पहुंचने में सक्षम बना सकती है।

एक अंतहीन और भयावह त्रासदी के 39 बरस

खतरनाक बात ये है कि हमने % भोपाल% से कोई सबक नहीं लिया है। भारत में मई 2020 से जून 2021 के बीच औद्योगिक हादसो में 231 मजदूरों की मौत हुई। आंध्रप्रदेश के विशाखापत्तनम के एलजी प्लांट से जहरीली गैस के रिसाव से एक दर्जन मौतों से लेकर के थर्मल पावर प्लांट विस्फोट में 20 मौतों और विरूधनगर पटाखा फैक्ट्री में आग से 21 लोगों की जान चली जाने के हादसे इसमें शामिल हैं। 39 बरस पूरे हो गए हैं विश्व की भीषणतम औद्योगिक त्रासदी यानी भोपाल गैसकांड को शुरू हुए। दो और तीन दिसंबर 1984 की दरम्यानी स्याह और सर्द रात को भोपाल में यूनियन कारबाइड के कारखाने से निकली प्राणघातक गैस के नासूर को रिसते तीन लाख 41हजार 660 घंटे से ज्यादा अर्सा बीत गया है। लेकिन तंत्र की तंद्रा अब तक भंग नहीं हुई है। कुछ सवाल उस रात मौतों की चीत्कार सुनकर ठिठक कर खड़े हो गए थे, वे अब तक वहीं खड़े हैं। आखिर ये 'भोपाल' क्यों घटा? किसने घटने दिया? और किसने दोषियों को 'कवच कुंडल' दिए? प्रश्नों के उत्तर जहां से आने हैं, वहां चुप्पी के ताले हैं और उस रात शुरू हुआ सतत हादसे का अंतहीन दौर अब तक जारी है, न्याय की बात तो कौन करे, जिंदा बच गए लोग अपने सीने में दफ्न गैस पीढ़ी दर पीढ़ी सौंपने को अभिशप्त हैं। उन्हें संवेदनहीन तंत्र ने पल-पल मौत का संत्रास झेलते-झेलते मौत की आखिरी पेशी की आवाज सुनने के लिए अभिशप्त कर दिया है। खतरनाक बात ये है कि हमने % भोपाल% से कोई सबक नहीं लिया है। भारत में मई 2020 से जून 2021 के बीच औद्योगिक हादसो में 231 मजदूरों की मौत हुई। आंध्रप्रदेश के विशाखापत्तनम के एलजी प्लांट से जहरीली गैस के रिसाव से एक दर्जन मौतों से लेकर के थर्मल पावर प्लांट विस्फोट में 20 मौतों और विरूधनगर पटाखा फैक्ट्री में आग से 21 लोगों की जान चली जाने के हादसे इसमें शामिल हैं। देश में साल 2021 जनवरी से जून तक छह माह में औद्योगिक हादसों में 117 मौतों का आंकड़ा बताता है कि न जाने कितने भोपाल सतत घट रहे हैं। आए दिन गैस रिसाव के हादसे सामने आते रहते हैं । कोई नहीं जानता कि 39 साल पहले 2 और 3 दिसम्बर की दरम्यानी रात घटे भोपाल हादसे की उम्र कितनी लंबी होगी, संततियां विकलांग और बीमार पैदा होने की बात तो आईसीएमआर की पहली रिपोर्ट में हादसे के तीन बरस बाद ही 1987 में बता दी थी। हादसे में रिसी गैस को मिथाइल आइसोसाइनाइड इंगित करने वाली यह रिपोर्ट बताती है कि गर्भवती स्त्रियों में से 24.2 प्रतिशत गर्भपात का शिकार हो गई थीं। जो जन्में उनमें से 60.9 प्रतिशत शिशु भी ज्यादा दिन जीवित नहीं रह सके। मौत के पंजे से बच निकले शिशुओं में से भी 14.3 प्रतिशत शिशु दुनिया में शारीरिक विकृति लेकर आए। यह विकृति भी उन शिशुओं में ज्यादा पाई गई जो गैस रिसाव के समय गर्भ में तीन से लेकर नौ माह तक की अवस्था में थे। इतना ही नहीं हादसे के वक्त पांच बरस तक के रहे बच्चों पर भी गैस का घातक असर हुआ। वे उम्र बढ़ने के साथ ही सांस की तकलीफ के बढ़ने का शिकार भी हुए। यानी आज जो 39 बरस से 46 बरस की उम्र के गैस पीड़ित हैं, उनकी तकलीफें मुसलसल जारी हैं। यह भी दहला देने वाली हकीकत है कि राज्य सरकार के मेडिको लीगल संस्थान में गैस हादसे के पीड़ितों के सैंपल तक सुरक्षित नहीं रह पाए। सियासत की बात करें तो उस वक्त की सूबे की और केंद्र की सरकारों ने क्या किया था, जबकि उन्हें करना क्या चाहिए था? यह सवाल अब तक अनुत्तरित हैं। दोनों ही कांग्रेस की सरकारें थीं। प्रधानमंत्री थे राजीव गांधी और मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह। सरकारों ने गिरफ्तार आरोपी वारेन एंडरसन को सुरक्षित और सम्मान सहित अमेरिका जाने का इंतजाम किया था। इस पर सियासत से लेकर बौद्धिक बहसों के अनेक कारवां गुजर चुके हैं। भाजपा तो भोपाल में बकायदा गैस हादसे और पीड़ितों की समस्या को दो दशक तक चुनावी मुद्दा बनाती रह चुकी है। गैस त्रासदी और उस वक्त के पूरे वार्डों यानी समूचे शहर को गैस पीड़ित मानने पर जोर देती रही यह पार्टी बीते करीब दो दशक से प्रदेश की सत्ता में हैं, लेकिन गैसकांड वाले मुद्दे पीछे छूट गए हैं। बीते चार विधानसभा चुनाव में किसी भी सियासी जमात ने गैस कांड पीड़ितों के मुद्दे को चुनावी मुद्दा ही नहीं माना। हालांकि जब अदालती फैसले की वजह से गैस कांड और एंडरसन का मामला चर्चा में आया,तो जांच के लिए कमेटियां बना दी गई। वर्तमान सरकार ने भी अब से करीब 12 साल पहले न्यायिक जांच कमेटी बनाई थी। न तो हादसे का मुख्य आरोपी वारेन एंडरसन इस दुनिया में है, न ही उसके भारतीय साझेदार और न ही उसके मददगार बने तत्कालीन सरकारों के मुखिया। गैस पीड़ितों की उस वक्त मदद करने वाले लोगों के संगठन भी छिन्न-भिन्न होकर नेताओं की संख्या उतनी संख्या तक जा पहुंचे ही है जितनी बरसियां बीतती जा रही हैं। न तो गैस त्रासदी के लिए जिम्मेदारों को सजा ही मिली और न ही पीड़ितों को राहत महसूस कर सकने लायक न्याय। 'भोपाल' को लेकर सियासत बदस्तूर जारी है। यक्ष प्रश्न यह है कि हमने और दुनिया ने विश्व की भीषणतम युद्ध त्रासदी हिरोशिमा नागासाकी की ही तरह विश्व की भीषणतम औद्योगिक त्रासदी भोपाल गैस कांड से क्या सीखा? ये हादसा दुनिया के रहबरों के माथे पर सिकन पैदा नहीं कर पाया था, लेकिन इससे सबक लिए बिना दुनिया का भला नहीं हो सकता। गैस त्रासदी में एक रात में काल कवलित हुए साढ़े तीन हजार और सैतीस साल से लगातार जारी हादसे में तिल तिलकर मृत हुए करीब 35 हजार लोगों को सही मायने में श्रृद्धांजलि यही होगी कि जो बचे हैं उन्हें बेहतर इलाज और मुआवजे से महरूम रह गए लोगों को उनका हक मिले, वर्ना हर साल बरसी में हम संख्या की एक एक गिरह बढ़ाते जाएंगे, होगा कुछ नहीं। हालांकि यह भी हौलनाक सच है कि गैस कांड की बरसी पर अब मातम के लिए जुटने वालों की तादाद 20 लाख की आबादी वाले भोपाल में ही सैकड़ों से ज्यादा नहीं होती। जाहिर है हम न सबक ले रहे हैं, न हादसे को लेकर गम बचा है।

कैसे बना विष्णु का सुदर्शन चक्र और शिव का त्रिशूल

सूर्यदेव को एहसास हुआ कि उनके तेज प्रकाश और ताप के कारण उनकी पत्नी संज्ञा के लिए उनके साथ रहना कठिन हो गया था। परंतु अपने ताप को कम करना सूर्य के वश में नहीं था। देवताओं के शिल्पकार विश्वकर्मा की एक कन्या थी। नाम था संज्ञा। विश्वकर्मा ने उसका विवाह सूर्यदेव से कर दिया। सूर्यदेव और संज्ञा की तीन संतान हुई। वैवस्वत, यमुना और यमदेव। उनका वैवाहिक जीवन वैसे तो सुखमय था किंतु संज्ञा से सूर्य का कठोर ताप और तेज सहन नहीं होता था। संज्ञा ने बहुत प्रयास किया किंतु वह अधिक देर तक सूर्य के निकट नहीं रह पाती थी। यहाँ तक संज्ञा की त्वचा भी काली पड़ने लगी थी। एक दिन संज्ञा के संयम का बांध ढह गया। हालांकि इसमें सूर्यदेव का कोई दोष नहीं था फिर भी संज्ञा ने निश्चय किया कि वह सूर्यदेव के साथ तब तक नहीं रहेगी जब तक उनका ताप कम नहीं हो जाता। परंतु सूर्य को अचानक छोड़कर जाना भी संज्ञा के लिए सहज नहीं था। तब उसे एक युक्ति सूझी। संज्ञा ने एक स्त्री को प्रकट किया, जो बिल्कुल उसी की तरह दिखती थी। संज्ञा की प्रतिच्छाया होने के कारण संज्ञा ने उसका नाम भी छाया रखा। फिर संज्ञा ने छाया को सूर्य की पत्नी बनकर रहने के लिए मना लिया और उसे अपनी पहचान छिपाकर रखने का आदेश दिया। छाया ने भी संज्ञा को आश्वासन दिया कि वह किसी को यह रहस्य नहीं बताएगी किंतु यदि किसी ने उसके केश खींचे तो फिर वह सच बोल देगी। छाया को सूर्यदेव के पास छोड़कर संज्ञा, अपने पिता विश्वकर्मा के घर लौट आई। पिता के पूछने पर संज्ञा ने उन्हें सारी बात बता दी। विश्वकर्मा के अनेक बार समझाने पर भी संज्ञा अपने पति के पास लौटने के लिए तैयार नहीं हुई। इधर छाया, सूर्य की पत्नी बनकर रहने लगी। यहां तक कि सूर्य से छाया ने तापी नाम की पुत्री और सावर्णी एवं शनि नाम के दो पुत्रों को भी जन्म दिया। छाया की अपनी संतान हो गई तो उसका लगाव संज्ञा के बच्चों के प्रति कम होने लगा। समस्त संसार को प्रकाशित करने वाले सूर्यदेव से भला क्या छिप सकता था! उन्हें छाया पर संदेह हो गया तो एक दिन उन्होंने पूछताछ की। छाया ने असल बात छिपाने का बहुत प्रयास किया। फिर सूर्यदेव को क्रोध आ गया और उन्होंने छाया के केश पकड़ लिए। तभी छाया ने सूर्यदेव को सारी बात सच-सच बता दी। संज्ञा ने जो किया, उसे सुनकर सूर्य को दुख हुआ और क्रोध भी आया। वह तुरंत विश्वकर्मा के पास पहुंचे। विश्वकर्मा ने संज्ञा के व्यवहार के लिए सूर्य से क्षमा तो मांग ली किंतु उन्होंने संज्ञा को सूर्य के ताप और प्रकाश से होने वाली परेशानी के विषय में भी बता दिया। तब जाकर सूर्यदेव को एहसास हुआ कि उनके तेज प्रकाश और ताप के कारण उनकी पत्नी संज्ञा के लिए उनके साथ रहना कठिन हो गया था। परंतु अपने ताप को कम करना सूर्य के वश में नहीं था। उन्होंने विश्वकर्मा से ही इस समस्या का हल निकालने का अनुरोध किया। 'मैं छाया के साथ नहीं, अपितु संज्ञा के साथ रहना चाहता हूं। आप ही बताइए कि मुझे क्या करना चाहिए?' सूर्य ने पूछा। इस पर विश्वकर्मा ने सूर्य से कहा , 'यह आपके अत्यधिक तेज और ताप का परिणाम है। मैं आपके तेज का कुछ अंश काटकर अलग कर देता हूँ। चमक और ताप में कमी आ जाएगी तो संज्ञा की परेशानी भी दूर हो जाएगी।' सूर्य ने विश्वकर्मा की बात मान ली।

एक अंतहीन और भयावह त्रासदी के 39 बरस

खतरनाक बात ये है कि हमने भोपाल से कोई सबक नहीं लिया है। भारत में मई 2020 से जून 2021 के बीच औद्योगिक हादसो में 231 मजदूरों की मौत हुई। आंध्रप्रदेश के विशाखापत्तनम के एलजी प्लांट से जहरीली गैस के रिसाव से एक दर्जन मौतों से लेकर के थर्मल पावर प्लांट विस्फोट में 20 मौतों और विरूधनगर पटाखा फैक्ट्री में आग से 21 लोगों की जान चली जाने के हादसे इसमें शामिल हैं। 39 बरस पूरे हो गए हैं विश्व की भीषणतम औद्योगिक त्रासदी यानी भोपाल गैसकांड को शुरू हुए। दो और तीन दिसंबर 1984 की दरम्यानी स्याह और सर्द रात को भोपाल में यूनियन कारबाइड के कारखाने से निकली प्राणघातक गैस के नासूर को रिसते तीन लाख 41हजार 660 घंटे से ज्यादा अर्सा बीत गया है। लेकिन तंत्र की तंद्रा अब तक भंग नहीं हुई है। कुछ सवाल उस रात मौतों की चीत्कार सुनकर ठिठक कर खड़े हो गए थे, वे अब तक वहीं खड़े हैं। आखिर ये 'भोपाल' क्यों घटा? किसने घटने दिया? और किसने दोषियों को 'कवच कुंडल' दिए? प्रश्नों के उत्तर जहां से आने हैं, वहां चुप्पी के ताले हैं और उस रात शुरू हुआ सतत हादसे का अंतहीन दौर अब तक जारी है, न्याय की बात तो कौन करे, जिंदा बच गए लोग अपने सीने में दफ्न गैस पीढ़ी दर पीढ़ी सौंपने को अभिशप्त हैं। उन्हें संवेदनहीन तंत्र ने पल-पल मौत का संत्रास झेलते-झेलते मौत की आखिरी पेशी की आवाज सुनने के लिए अभिशप्त कर दिया है। खतरनाक बात ये है कि हमने भोपाल से कोई सबक नहीं लिया है। भारत में मई 2020 से जून 2021 के बीच औद्योगिक हादसो में 231 मजदूरों की मौत हुई। आंध्रप्रदेश के विशाखापत्तनम के एलजी प्लांट से जहरीली गैस के रिसाव से एक दर्जन मौतों से लेकर के थर्मल पावर प्लांट विस्फोट में 20 मौतों और विरूधनगर पटाखा फैक्ट्री में आग से 21 लोगों की जान चली जाने के हादसे इसमें शामिल हैं। देश में साल 2021 जनवरी से जून तक छह माह में औद्योगिक हादसों में 117 मौतों का आंकड़ा बताता है कि न जाने कितने भोपाल सतत घट रहे हैं। आए दिन गैस रिसाव के हादसे सामने आते रहते हैं । कोई नहीं जानता कि 39 साल पहले 2 और 3 दिसम्बर की दरम्यानी रात घटे भोपाल हादसे की उम्र कितनी लंबी होगी, संततियां विकलांग और बीमार पैदा होने की बात तो आईसीएमआर की पहली रिपोर्ट में हादसे के तीन बरस बाद ही 1987 में बता दी थी। हादसे में रिसी गैस को मिथाइल आइसोसाइनाइड इंगित करने वाली यह रिपोर्ट बताती है कि गर्भवती स्त्रियों में से 24.2 प्रतिशत गर्भपात का शिकार हो गई थीं। जो जन्में उनमें से 60.9 प्रतिशत शिशु भी ज्यादा दिन जीवित नहीं रह सके। मौत के पंजे से बच निकले शिशुओं में से भी 14.3 प्रतिशत शिशु दुनिया में शारीरिक विकृति लेकर आए। यह विकृति भी उन शिशुओं में ज्यादा पाई गई जो गैस रिसाव के समय गर्भ में तीन से लेकर नौ माह तक की अवस्था में थे। इतना ही नहीं हादसे के वक्त पांच बरस तक के रहे बच्चों पर भी गैस का घातक असर हुआ। वे उम्र बढ़ने के साथ ही सांस की तकलीफ के बढ़ने का शिकार भी हुए। यानी आज जो 39 बरस से 46 बरस की उम्र के गैस पीड़ित हैं, उनकी तकलीफें मुसलसल जारी हैं। यह भी दहला देने वाली हकीकत है कि राज्य सरकार के मेडिको लीगल संस्थान में गैस हादसे के पीड़ितों के सैंपल तक सुरक्षित नहीं रह पाए। सियासत की बात करें तो उस वक्त की सूबे की और केंद्र की सरकारों ने क्या किया था, जबकि उन्हें करना क्या चाहिए था? यह सवाल अब तक अनुत्तरित हैं। दोनों ही कांग्रेस की सरकारें थीं। प्रधानमंत्री थे राजीव गांधी और मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह। सरकारों ने गिरफ्तार आरोपी वारेन एंडरसन को सुरक्षित और सम्मान सहित अमेरिका जाने का इंतजाम किया था। इस पर सियासत से लेकर बौद्धिक बहसों के अनेक कारवां गुजर चुके हैं। भाजपा तो भोपाल में बकायदा गैस हादसे और पीड़ितों की समस्या को दो दशक तक चुनावी मुद्दा बनाती रह चुकी है। गैस त्रासदी और उस वक्त के पूरे वार्डों यानी समूचे शहर को गैस पीड़ित मानने पर जोर देती रही यह पार्टी बीते करीब दो दशक से प्रदेश की सत्ता में हैं, लेकिन गैसकांड वाले मुद्दे पीछे छूट गए हैं। बीते चार विधानसभा चुनाव में किसी भी सियासी जमात ने गैस कांड पीड़ितों के मुद्दे को चुनावी मुद्दा ही नहीं माना। हालांकि जब अदालती फैसले की वजह से गैस कांड और एंडरसन का मामला चर्चा में आया,तो जांच के लिए कमेटियां बना दी गई। वर्तमान सरकार ने भी अब से करीब 12 साल पहले न्यायिक जांच कमेटी बनाई थी। न तो हादसे का मुख्य आरोपी वारेन एंडरसन इस दुनिया में है, न ही उसके भारतीय साझेदार और न ही उसके मददगार बने तत्कालीन सरकारों के मुखिया। गैस पीड़ितों की उस वक्त मदद करने वाले लोगों के संगठन भी छिन्न-भिन्न होकर नेताओं की संख्या उतनी संख्या तक जा पहुंचे ही है जितनी बरसियां बीतती जा रही हैं। न तो गैस त्रासदी के लिए जिम्मेदारों को सजा ही मिली और न ही पीड़ितों को राहत महसूस कर सकने लायक न्याय। 'भोपाल' को लेकर सियासत बदस्तूर जारी है। यक्ष प्रश्न यह है कि हमने और दुनिया ने विश्व की भीषणतम युद्ध त्रासदी हिरोशिमा नागासाकी की ही तरह विश्व की भीषणतम औद्योगिक त्रासदी भोपाल गैस कांड से क्या सीखा? ये हादसा दुनिया के रहबरों के माथे पर सिकन पैदा नहीं कर पाया था, लेकिन इससे सबक लिए बिना दुनिया का भला नहीं हो सकता। गैस त्रासदी में एक रात में काल कवलित हुए साढ़े तीन हजार और सैतीस साल से लगातार जारी हादसे में तिल तिलकर मृत हुए करीब 35 हजार लोगों को सही मायने में श्रृद्धांजलि यही होगी कि जो बचे हैं उन्हें बेहतर इलाज और मुआवजे से महरूम रह गए लोगों को उनका हक मिले, वर्ना हर साल बरसी में हम संख्या की एक एक गिरह बढ़ाते जाएंगे, होगा कुछ नहीं। हालांकि यह भी हौलनाक सच है कि गैस कांड की बरसी पर अब मातम के लिए जुटने वालों की तादाद 20 लाख की आबादी वाले भोपाल में ही सैकड़ों से ज्यादा नहीं होती। जाहिर है हम न सबक ले रहे हैं, न हादसे को लेकर गम बचा है।

तीन राज्यों में जीत पर अल्पसंख्यक मोर्चा ने बाटी मिठाई

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

रायबरेली। भारतीय जनता पार्टी की तीन राज्यों में हुई प्रचंड जीत पर आज रायबरेली शहर के अल्पसंख्यक मोर्चा जिला मीडिया प्रभारी भाजपा सेराज अहमद और जिला महामंत्री सहरे आलम और जिला अध्यक्ष मोहम्मद शरीफ व कार्यकर्ताओं ने कहारों के अड्डे पर 51 किलो मिठाई बाट कर जीत की एक दूसरे को बधाई दी वही जिला मीडिया प्रभारी सेराज अहमद ने कहा कि ये जीत जनता की जीत है और जनता ने तीनो राज्यो में बता दिया कि देश की जनता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ है जिस तरह से कांग्रेस के लोग कह रहे थे कि की कांग्रेस मध्य प्रदेश राजस्थान छत्तीसगढ़ के साथ तेलंगना में चुनाव जीत रही है तो मैं उन लोगों को बता दु की चुनाव की हार और जीत का

फैसला जनता करती है और जनता ने बता दिया कि देश की जनता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ है और हमारी पार्टी 2024 के लोकसभा के चुनाव में भी जीत हासिल करके इतिहास रचेगी वही जिला अध्यक्ष अल्पसंख्यक मोर्चा मोहम्मद शरीफ ने कहा कि देश की जनता को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर पूरा भरोसा है और यही कारण है जो हमारी पार्टी ने तीन राज्यो में कांग्रेस को धूल चटा दी क्योंकि जनता ने प्रधानमंत्री के काम पर वोटिंग की थी हमारी पार्टी एक ऐसी पार्टी है जो सभी धर्मों को साथ लेकर चलती है और हमारी पार्टी का मिशन है कि सबका साथ सबका विकास और सबका विश्वास हमारी पारी सबका साथ सबका विकास करती है तो जनता हमारी पार्टी पर विश्वास करती है ये जीत देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और देश की जनता की जीत है वही युवा नेता शादाब खान अली मिया कालोनी ने कहा कि ये जीत देश की जनता की जीत है सत्य की जीत है सबका साथ सबका विकास की जीत है ये जीत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जीत है देश की जनता को भाजपा के तीन राज्यो में प्रचण्ड बहुमत से जीत की बधाई इस मौके पर सहरे आलम, एखलाक अहमद नगर अध्यक्ष, मोहम्मद जहीर नगर उपाध्यक्ष, मोहम्मद आरिफ नगर अध्यक्ष, सरदार परम जीत जिला मंत्री, मोहम्मद वसीम आईटी सेल, आदि लोग मौजूद रहे

शहर कोतवाल अजय कुमार त्रिपाठी ने ऑनलाइन ठगी करने वाले गिरोह का किया पर्दाफ़ाश

❖ ठगों के पास से 6 मल्टीमीडिया मोबाइल फोन, 11 एटीएम कार्ड, 12 बैंक चेक बुक व 5 प्री एक्टिवेटेड सिम कार्ड बरामद।

द अचीवर टाइम्स अनुराग मेहरोत्रा

बाराबंकी। वादी अबू शहमा अंसारी पुत्र हाफिज फकीर मोहम्मद निवासी रामपुर भवानीपुर थाना सफदरगंज जनपद (कपड़ा व्यापारी) ने थाना कोतवाली नगर में शिकायत दर्ज कराई थी कि वह अपने व्यापार को बड़ा करने के लिए लोन कराने के सम्बन्ध में अपने परिचित मो0 शाह हसन से बात कर रहे थे कि तभी एक अंजान व्यक्ति द्वारा उन्हें बताया गया कि वह बैंक से लोन जल्दी मंजूर करवा देता है उसकी बात पर विश्वास करके उनके द्वारा अपना मोबाइल नंबर उपलब्ध करा दिया गया। उनके मोबाइल पर एक नम्बर से कॉल आयी और हज्ञक्क

की जानकारी कर बताया गया कि 02-03 दिन में लोन आ जायेगा। आईसीआईसीआई बैंक जैदपुर के शाखा प्रबन्धक द्वारा बताया गया कि उनके खाते में 1 करोड़ 23 लाख रूपये आया है और उसी दिन उनके खाते से अज्ञात व्यक्ति द्वारा धोखे से ओटीपी नंबर लोन कराने के बहाने लेकर फ्राड किया गया। पुलिस अधीक्षक दिनेश कुमार सिंह ने घटना का तत्काल संज्ञान लिया गया व घटना का सफल अनावरण करने एवं अभियुक्तों की तत्काल गिरफ्तारी के आदेश के क्रम में स्वाट/सर्विलांस व थाना कोतवाली नगर की संयुक्त पुलिस टीम द्वारा डिजिटल डेटा एवं मैनुअल इंटेलीजेन्स की मदद से ऑनलाइन ठगी करने वाले गिरोह के 5 अभियुक्तों अंकित त्रिपाठी पुत्र नवीन तिवारी निवासी अतरवारी नेवादा खुर्द जनपद प्रतापगढ़, कीर्तन अडापला पुत्र श्रीकांत अडापला निवासी हाउस नंबर 72 रोड नंबर 12 लोटस पाउंड बंजारा हिल्स हैदराबाद ,आनंद कुमार सिंह पुत्र विश्वनाथ सिंह निवासी शिव सहोद्रा निवास नालापार काटी फैक्ट्री राजेंद्र नगर पटना, बिहार , शाह हसन पुत्र स्वर्गीय नसीर अहमद निवासी नई बाजार सहादतगंज थाना मसौली व रमन प्रताप सिंह पुत्र रविंद्र सिंह निवासी बदनपुर थाना किशनी जनपद मैनपुरी को असैनी मोड़ से गिरफ्तार किया गया। अभियुक्तगण के कब्जे से 6 मल्टीमीडिया मोबाइल फोन, 11 एटीएम कार्ड, 12 बैंक चेक बुक व 5 प्री एक्टिवेटेड सिम कार्ड बरामद किया गया। गिरफ्तार अभियुक्तगण द्वारा जनपद बाराबंकी के अलावा आस-पास के अन्य जनपदों में भोली भाली जनता को गुमराह करके लालच देकर एकाउंट खुलवाया जाता था और उनके खाते से रूपये का लेनदेन इंटरनेट के माध्यम से कराया जाता हैं। गिरफ्तार अभियुक्तों द्वारा पुलिस की पूछताछ में बताया कि ये लोग छत्तीसगढ़ के रहने वाले महेंद्र जाखर के लिए काम करते हैं। इनके द्वारा एकाउंट कलेक्ट करके महेंद्र जाखर को दिया जाता है जो एकाउंट देखता रहता हैं। महेंद्र जाखर के द्वारा एकाउंट में रूपये भेजे जाते हैं इसके बदले में इन लोगों को दस हज़ार रूपये मिल जाते है। गिरोह के सदस्यों द्वारा फ्राड करके वादी उपरोक्त के साथ 1 करोड़ 23 लाख रूपये व अन्य खातों से करोड़ो रूपयों का फ्राड किया गया है। गिरफ्तार करने में पुलिस टीम- उ0नि0 अजय सिंह प्रभारी स्वाट टीम, उ0नि0 संजीव प्रकाश सिंह, उ0नि0 अभिमन्यु सिंह, उ0नि0 तनवीर अहमद, प्रभारी निरीक्षक अजय कुमार त्रिपाठी ,अंजेश सिंह, उ0नि0 संदीप दुबे सहित अन्य पुलिस कर्मी रहे मौजूद ।

एक नज़र

रायबरेली जिलाधिकारी हर्षिता माथुर ने देर रात रेन बसेरों का किया निरीक्षण

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

रायबरेली। कड़ाके की ठंड शुरू होने से पहले रायबरेली जिला प्रशासन ने मुख्यमंत्री के निर्देश पर गरीबो के लिए रैन बसेरे बना लिए है। नगर पालिका क्षेत्र में बने तीन रैन बसेरों की स्थिति जानने के लिए जिला अधिकारी हर्षिता माथुर ने देर रात में रैन बसेरों का औचक निरीक्षण किया। नगर पालिका द्वारा अस्पताल चौराहा, सुपर मार्केट और रेलवे स्टेशन पर अस्थाई रेन बसेरे बनाये गए हैं। जिलाधिकारी हर्षिता माथुर ने अस्थायी रैन बसेरों में रात गुजार रहे लोगों से वहाँ मिलने वाली सुविधाओं के बारे में जानकारी ली साथ ही अधिकारियों को रैन बसेरे में रुकने वाले लोगों को सभी सुविधाएं देने के निर्देश दिए गए हैं।

मोटे अनाजों के प्रशिक्षण के लिए 50 किसानों का जत्था हैदराबाद के लिए रवाना

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

रायबरेली। जिलाधिकारी हर्षिता माथुर ने दो दिवसीय प्रशिक्षण के लिए 50 किसानों के जत्थे को हरी झंडी दिखाकर रायबरेली से हैदराबाद के लिए किया रवाना। केंद्र सरकार व प्रदेश सरकार के निर्देश पर मोटे अनाजो को बढ़ावा देने के लिए उत्तर प्रदेश मिलेट पुनरोद्वार योजना कार्यक्रम के तहत जिले से 50 किसानों का जत्था बस से हैदराबाद के लिए रवाना किया गया। जिले के ये सभी किसान आईआईएमआर हैदराबाद के रिसर्च इंस्टिट्यूट में मिलेट की खेती को किस तरह से अच्छी गुणवत्ता के साथ किया जाए इसका दो दिन तक प्रशिक्षण लेंगे। जिससे किसानों की आय बढ़ने के साथ ही लोगों के स्वास्थ्य में सुधार हो। जिलाधिकारी ने कलेक्ट्रेट परिसर में स्थित बचत भवन से किसानों के जत्थे को हरी झंडी दिखाकर बस को रवाना किया।

भाजपा की तीन राज्यों में प्रचंड जीत पर रोहन नागर ने बांटी मिठाई

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

हापुड़। जनपद हापुड़ में भाजपा कार्यकर्ताओं ने आपस में मनाई खुशी मनाई आपको बता दे कि चार राज्यों के चुनाव में भाजपा ने एकबार फिर सरकार बनाई है इस खुशी में भाजपा कार्यकर्ताओं ने आपस में एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर खुशी मनाई तो रोहन नागर ने कहा कि यह भाजपा के प्रत्येक कार्यकर्ता व भाजपा के शीर्ष नेतृत्व की जीत है देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश में सुशासन और रामराज्य की स्थापना का विश्वास से ही देश में पूर्ण बहुमत हासिल कर जनता का आशीर्वाद प्राप्त हो रहा है हमें हमारे यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का मार्गदर्शक होना हमारे लिए गर्व महसूस होता है। इस मौके पर यतेन्द्र प्रधान,सुधीर फौजी, सुरेन्द्र चौधरी, विशाल,अभय सिंह, जयभगवान, पिनटू आदि लोग मौजूद रहे।

महावीर विनोद राणा ने बनाया विश्व रिकॉर्ड

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

हापुड़। जनपद हापुड़ के तहसील धौलाना के छोटे से गांव सपनावत निवासी महावीर विनोद राणा ने भारत को विश्व स्तर पर कई बार गोल्ड मेडल दिए हैं। जिन्हें आज अपनी मेहनत और अपने अभ्यास के बदौलत भारत का दूसरा एकलव्य कहते हैं। आप लोग ने हुनर तो बहुत देखे होंगे लेकिन ऐसा हुनर सायद ही देखने को मिले। जिन्होंने कई खेलों में राष्ट्रीय स्तर से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक भारत को गोल्ड मेडल दिए हो। ऐसे खिलाड़ी दुनिया में कही कही ही मिल पाते हैं। जहाँ महावीर विनोद राणा ने विदेशी धरती पर अपने भारत का राष्ट्रीय गान एक बार बजवाया था। तो वही 2022 में भी महावीर विनोद राणा ने बॉक्सिंग स्पीड में 1 मिनट में 430 पंच मारकर विश्व रिकॉर्ड बना चुके हैं। फिर से महावीर विनोद राणा ने सपाटे और पुष्पअप विश्व रिकॉर्ड बनाया है। महावीर विनोद राणा ने 11 हजार सपाटे व पुशअप लगातार 11 घंटे में लगाए हैं जिनका विश्व रिकॉर्ड में नाम दर्ज हो गया और यह रिकॉर्ड वर्ल्ड वाइड बुक ऑफ़ रिकार्ड्स और इंडियाज वर्ल्ड ऑफ रिकॉर्ड्स में भी दर्ज हो चुका है। तो वहीं महावीर विनोद राणा को जनपद हापुड़ के लोगों के साथ साथ अन्य जनपदों से शुभकामनाएं देने वालों का तांता बना हुआ है।

उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के नव निर्वाचित महामंत्री एवं प्रांतीय संगठन मंत्री संजय सिंह का स्वागत किया गया

द अचीवर टाइम्स दीपक सिंह

शाहजहांपुर। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के नव निर्वाचित महामंत्री एवं प्रांतीय संगठन मंत्री जनपद आगमन पर शिक्षक शिक्षिकाओं ने चांदी का मुकुट और फूल-मालाएं पहनाकर जोरदार स्वागत किया। नवनिर्वाचित प्रांतीय महामंत्री संजय सिंह ने कहा प्रदेश के शिक्षकों के साथ हो रहे अन्याय के विरुद्ध सभी शिक्षक आंदोलन के लिए तैयार है। क्योंकि संघ शिक्षकों के साथ अन्याय किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं करेगा। बहादुरगंज स्थित रोटी गोदाम परिषदीय विद्यालय के परिसर में आयोजित स्वागत समारोह में स्वागत के उपरांत नवनिर्वाचित प्रांतीय के महामंत्री श्री सिंह ने कहा कि वर्तमान समय में विभाग के उच्च अधिकारी नए आदेश करके शिक्षकों

का उत्पीड़न करने कर रहे हैं जिससे पूरे प्रदेश का शिक्षक आक्रोशित है यदि समय रहते इसमें सुधार न किया गया तो पूरे प्रदेश का समस्त शिक्षक ऐतिहासिक आंदोलन करने को विवश होंगे। समारोह को संबोधित करते हुए नव निर्वाचित प्रांतीय संगठन मंत्री अर्चना तिवारी ने कहा कि इस जनपद में प्रांतीय दो पदाधिकारी होने के कारण जनपद के शिक्षकों का दायित्व बढ़ गया है इसलिए संगठन के आवाहन पर प्रत्येक आंदोलन ऐतिहासिक होना चाहिए। स्वागत समारोह में संघ के जिला मंत्री देवेश बाजपेई, जिला कोषाध्यक्ष रविंद्र पाल प्रजापति, मुनीश मिश्रा, राजकुमार तिवारी, अरुण सिंह भदोरिया, कौशलेंद्र सिंह भदौरिया, शिव किशोर मिश्रा, आदेश अवस्थी, सरताज अली, राजकुमार सिंह , अरविंद त्रिपाठी, आदेश सिंह तोमर, अरविंद सिंह नरेंद्र मिश्रा अरविंद गौतम, धर्मेंद्र सिंह चौहान, धर्मवीर सिंह, विकास मिश्रा, इमरान सईद, नितिन मिश्र, विजय प्रताप सिंह, संजय मिश्रा, शैलेन्द्र सिंह, सचिन अवस्थी, अश्विनी अवस्थी, अरविंद सिंह, राकेश रोशन,संजय भारती, वारिस अली, समर खान, प्रेमलता शुक्ला, सीमा सिंह शैली चौधरी, बबिता श्रीवास्तव, विनीता चौरसिया, पूजा भार्गव सहित सैकड़ों शिक्षकों ने स्वागत किया।

विश्व दिव्यांगजन दिवस पर जिलाधिकारी ने बच्चों को किया पुरस्कृत

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

रायबरेली। राजकीय इंटर कॉलेज में विश्व दिव्यांग जन दिवस पर खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यक्रम धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ ज़िलाधिकारी हर्षिता माथुर ने माँ शारदा का माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर के किया।

इस अवसर पर खेल प्रतियोगिता का शुभारम्भ अस्थि दिव्यांग बच्चों की दौड़ प्रतियोगिता एवं छू कर पहचानओ प्रतियोगिता से हुआ। इस अवसर पर दौड़, कुर्सी दौड़, छू कर पहचानो, योगा, गुब्बारा फुलाओ, रस्साकस्सी प्रतियोगिता, चित्रकला आदि भी आयोजित की गई। जिलाधिकारी ने कार्यक्रम की प्रसंशा की एवं सभी का उत्साहवर्धन् किया। ज़िलाधिकारी ने कहा की दिव्यांग बच्चे किसी से

कम नहीं है।आज दिव्यांग बच्चे पूरी दुनिया में भारत का नाम रोशन कर रहे है। जीवन के हर क्षेत्र में दिव्यांग अपनी प्रतिभा से अपना लोहा मनवा रहे है। कार्यक्रम में विजित दिव्यांग बच्चों को जिलाधिकारी ने पुरस्कृत भी किया । कार्यक्रम का संचालन डॉ अभिषेक द्विवेदी ने किया। बेसिक शिक्षा अधिकारी ने बच्चों का उत्साहवर्धन किया। साथ ही कहा कि विभाग दिव्यांग बच्चों के विकास के लिए कृतसन्कल्प् है।शासन की मंशा के अनुरूप विशेष शिक्षक, दिव्यांग बच्चों को गुणवत्ता परक शिक्षा प्रदान कर रहे है।

लखनऊ में बॉडी मसाज की आड़ में चल रहा गंदा धंधा फोन कर दो हजार में फुल मस्ती की दे रहे गारंटी

द अचीवर टाइम्स राज जायसवाल

लखनऊ। मसाज तो अतीत से होता रहा है लेकिन मौजूदा समय मसाज के नाम पर जो परोसा जा रहा है उसे सामाजिक मान्यता नहीं मिली है। पुरुष की मसाज कम उम्र की लड़कियां कर रही हैं। हैलो सर, गुड ऑफ्टरनून। आप बॉडी मसाज कराना चाहते हैं। सर हमारे यहां दो हजार रुपये में एक घंटा फुल बॉडी मसाज के साथ इंटरटेमेंट (मनोरंजन) इंज्वॉय (मस्ती) भी है। आधा घंटे का फेसियल भी होगा। सर आप कब आ रहे हैं? मोबाइल फोन पर सुरीली आवाज में एक युवती मसाज से जुड़ी जानकारी दे रही थी। उससे पूछा गया कि मसाज तो समझ में आ गया, यह इंटरटेंमेंट

और इंज्वॉयमेंट क्या है? जब आइएगा तो सब पता चल जाएगा। हम बता नहीं पाएंगे। बहुत कुरेदा गया तो युवती ने फोन काट दिया। फिर फोन मिलाया तो युवती ने कहा, आप आइए तो? सब कुछ पता चल जाएगा। आप कहां से बोल रहे हैं? चिनहट तिराहा सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया के सेकंड फ्लोर से। यह बताइए कि मसाज कौन करेगा? विदेशी युवतियां हैं? नहीं भारतीय युवतियां हैं। 20 से 21 साल की। आपके सामने कई लड़कियां आएंगी, जिसे आप पसंद करेंगे उसे भेज दिया जाएगा। पैकेज में इतना ही है या फिर कुछ और? वह भी हो जाएगा, जो आप पूछना चाह रहे हैं, हम फोन पर बता नहीं पाएंगे। कुछ जगह उसके लिए मना कर देते हैं? नहीं हमारे यहां ऐसा कुछ नहीं है। सब हो जाएगा। कुछ अलग से चार्ज? उसी समय बता दिया जाएगा। अगर हम 2 लोग आएं तो इंतजार तो नहीं करना पड़ेगा? नहीं हो जाएगा, जितने लोग आइए। सुबह 11 से रात सात बजे तक ही इंट्री है। लखनऊ चिनहट तिराहा के समीप सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया के सेकंड फ्लोर में हमारा स्पा पार्लर है। इससे कोई कम का पैकेज नहीं है? अब इससे सस्ता क्या होगा? बहुत मस्ती होती है। आयल कौन का लगाएंगी? लुक लोटस का, अरे आप आइए तो सब पता चल जाएगा। सीसीटीवी तो नहीं लगा है? अरे नहीं यह सब कुछ नहीं है। कोई परेशानी नहीं होगी। स्पा के नाम पर चल रहे खेल और युवा वर्ग में गलत संगत के प्रभाव पर ही हमारा रिपोर्टर ने इसकी पड़ताल की। कई ऐसे लोगों से भी बात की तो पता चला कि वहां मसाज के नाम पर बहुत कुछ हो रहा है।

क्या है मसाज का राज

मसाज तो अतीत से होता रहा है, लेकिन मौजूदा समय मसाज के नाम पर जो परोसा जा रहा है, उसे सामाजिक मान्यता नहीं मिली है। पुरुष की मसाज कम उम्र की लड़कियां कर रही हैं। मसाज का राज जानने की कोशिश की गई तो बदसूरत तस्वीर के साथ करीब 25 मिनट की वीडियो सामने आई। कुछ लोगों ने बताया कि मसाज के साथ मस्ती और मनोरंजन की बात कही जा रही है और यह ही सब कुछ ही परदे को हटा रही है, जो वहां हो रहा है। यहां युवा वर्ग के साथ ही कम उम्र के लड़े भी जा रहे हैं। इतना शोर शराबा के साथ मसाज की आड़ में सेक्स भरोसा जा रहा है जिसकी वीडियो रिपोर्टर के मोबाइल में कैद हुई है वीडियो इतना साफ नहीं है क्योंकि रूम में लाइट जल नहीं रही थी हालांकि बहुत कुछ साफ दिख रहा और आवाज़ बहुत खूबसूरली आ रही है लखनऊ के थाना चिनहट मैं मसाज के परदे के पीछे जिस्म फिरोशी का खुलेआम धंधा चल रहा है हालांकि रिपोर्टर ने खुद जाकर अंदर की पड़ताल की है आप देखने वाले दिलचस्प बात ही होगी चिनहट पुलिस इस पूरे मामले में क्या कार्रवाई करती है हाल ही में एक दिन पहले विभूति खंड थाना क्षेत्र में मसाज की आड में जिस फिरोजी का खेल चल रहा था इसमें तीन लड़कियां सहित छा लड़के पकड़े गए हैं!

धर्मेंद्र हत्याकांड, हत्याकांड को अंजाम देने वाला मुख्य आरोपी गिरफ्तार

क्राइम

खुटार पुलिस ने घटना का किया खुलासा, भेजा जेल

द अचीवर टाइम्स दीपक सिंह

खुटार शाहजहांपुर। पीलीभीत के गजरौला निवासी धर्मेंद्र की हत्या के मुख्य आरोपी शिवम राठौर को थाना पुलिस ने किया गिरफ्तार। पूछताछ में उसने स्वीकार किया । कि 26 नवंबर से उसकी बहन लापता है उसे पूरा शक था कि मामले में अमरजीत को संलिप्तता हैं। उसने पुलिस को तहरीर भी सौंपी पर कोई कार्रवाई नहीं की गई। इस कारण वह अमरजीत की हत्या करना चाहता था गोली धोखे से धर्मेंद्र को लग गई और उसकी जान चली गई। 30 नवंबर को गांव

कुसुमा निवासी शिवम ने पीलीभीत के गांव गजरौला निवासी धर्मेंद्र को गोली मारकर हत्या कर दी थी धर्मेंद्र फुफेरे भाई अमरजीत के साथ तिकुनिया चौराहे पर मोबाइल फोन ठीक करने आया था धर्मेंद्र के पिता दिनेश भारती को तहरीर पर रिपोर्ट दर्ज करने के बाद पुलिस ने शनिवार को शिवम को मोहनापुर तिराहे से के गिरफ्तार किया है। उसके पास से घटना को अंजाम देने के दौरान इस्तेमाल किया गया 315 बोर देशी कट्टा, एक कारतूस,एवं एक खोखा किया बरामद किया।

सुरक्षा के लिए हाईकोर्ट पहुंची शिवम की बहन

खुटार। शिवम की जिस बहन को लेकर धर्मेंद्र की हत्या की गई उसने हाई कोर्ट में सुरक्षा के लिए शरण ली है हाई कोर्ट से एक वकील को खुटार पुलिस के पास मोबाइल फोन पर कॉल आई वकील ने शिवम की बहन के गांव कुसुमा में रहने को लेकर जानकारी मांगी थी अभी पुलिस को वहां नहीं पता चल रहा है की शिवम की बहन ने हाई कोर्ट में किस कारण सुरक्षा मांगी है और किसी से जान का खतरा बताया था थाना प्रभारी ने बताया कि इस मामले में जानकारी का प्रयास किया जा रहा है।

दूसरे दिन भी गांव में तैनात रही पुलिस

धर्मेंद्र हत्याकांड के बाद गांव में अभी भी दहशत का माहौल है परिजन सभी आरोपियों के जल्द जेल भेजने की मांग कर रहे हैं आरोपियों के घर केवल महिलाएं की मौजूद है शनिवार को भी पुलिस तैनात रही

शिवम ने पुवायां से खरीदे थे कारतूस

पुलिस पूछताछ में शिवम ने बताया कि उसे कारतूस पुवायां के गांव धारा के एक व्यक्ति ने किसी से लेकर दिए थे उसके बाद पुलिस ने धारा गांव में दबिश दी। कारतूस देने वाले के पुवायां जाने की जानकारी पाकर पुलिस ने रास्ते में घेराबंदी कर उसे पकड़ लिया और थाने लाई उससे पूछताछ की जा रही है। एक आरोपी को हिरासत में लिया गया है जल्द पटना के बारे में पूरा खुलासा किया जाएगा पंकज पंत सीओ पुवायां।

सेन्ट्रल एकेडमी की छात्रा को हिंदी बाल श्रेष्ठ सम्मान समारोह से विभूषित किया गया

द अचीवर टाइम्स अनुराग मेहरोत्रा

बाराबंकी। हिंदी विकास संस्थान दिल्ली द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड 2023 में प्रतिष्ठित विद्यालय के कई विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया गया था, जिसमें दस बच्चों को स्वर्ण पदक और दूसरे कई विद्यार्थियों को रजत पदक प्राप्त हुए 7 छात्रा अनन्या मिश्रा ने इसमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उच्च स्थान प्राप्त करके संस्थान द्वारा बाल श्रेष्ठ सम्मान को प्राप्त किया, जिसका आयोजन तीन मूर्ति भवन प्रधान मंत्री संग्रहालय में किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि प्रो. सुनील बाबूराव निदेशक केंद्रीय संस्थान शिक्षा मंत्रालय, शिक्षा निदेशक हिमांशु गुप्ता तथा सी.बी.एस.ई. परीक्षा नियंत्रक डॉ. संयम भारद्वाज जी की उपस्थिति में अनन्या को ट्रॉफी तथा स्वर्ण पदक के अलंकृत किया गया। आज दिनांक 2-12-2023 को दिल्ली से वापस विद्यालय में उपस्थित होने पर विद्यालय की प्रधानाचार्या डॉ. पूजा आनंद जी ने अनन्या का मुंह मीठा कराते हुए फूल माला पहनाकर उत्साह वर्धन किया तथा उसके उज्जवल भविष्य की कामना की। प्रधानाचार्य जी ने हिंदी अध्यापिका रजनी बाला पाठक जी का धन्यवाद किया और सराहना की जिन्होंने बच्चों को हिंदी के प्रति उत्साहित किया।

जिला पंचायत सदस्य रेनू भारती ने ग्रामीण क्रिकेट प्रतियोगिता का अयोजन किया

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

माल/मालिहाबाद। द्वितीय ग्रामीण क्रिकेट प्रतियोगिता नौबस्ता 2023 का आयोजन जिला पंचायत सदस्य रेनू भारती पत्नी रामचरन भास्कर द्वारा कराया गया। इस प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 20 नवंबर 2023 को टिल्ला (जिंदबाबा) नौबस्ता सालेहनगर माल लखनऊ के मैदान पर किया गया। प्रतियोगिता का फाइनल मैच आज 3 दिसंबर 2023 को देवरीगजा की टीम और हुसैनपुर की टीम के बीच खेला गया। फाइनल मैच में देवरीगजा की टीम ने 7 विकेट से जीत दर्ज की। पहले बल्लेबाजी करते हुए हुसैनपुर की टीम ने 12 ओवर में 178 रनों का पहाड़ सा लक्ष्य रखा। जिसके जवाब में देवरीगजा की टीम ने 11 ओवर में 4 विकेट के नुकसान से लक्ष्य को हासिल कर विजय प्राप्त किया। मैच में शानदार प्रदर्शन के लिए अजीत वर्मा को मैन ऑफ द मैच घोषित किया गया। मैन ऑफ द सीरीज अजीत वर्मा ही रहे। टीम की जीत पर देवरीगाजा के कप्तान महेंद्र गुप्ता ने ट्रॉफी उठाई और जीत का पूरा श्रेय अपनी टीम के एकजुट प्रदर्शन को दिया । जबकि हुसैनपुर के कप्तान सकील ने हार का कारण खराब फील्डिंग को ठहराया। विजेता और उपविजेता टीमों को आयोजक सदस्य जिला पंचायत प्रतिनिधि रामचरन भास्कर द्वारा ट्राफी के साथ साथ नगद राशि भी प्रदान की गई। देवरीगजा की फाइनल विजेता टीम इस प्रकार रही। महेंद्र गुप्ता(कप्तान), कपिल गुप्ता(उपकप्तान), नरेश गुप्ता, आशुतोष सिंह, अजीत रावत, परीक्षित सिंह, सूर्यप्रताप शुक्ला, उमेश गुप्ता, नितीश शुक्ला, सोनू गुप्ता, अभय गुप्ता। प्रतियोगिता की आयोजक रेनू भारती पत्नी रामचरन भास्कर द्वारा सभी नियमों का पालन कराया गया। प्रतियोगिता के आयोजन से क्षेत्र के सभी खेल प्रेमियों में खुशी का माहौल रहा ।प्रतियोगिता में भाग लेने आई सभी टीमों द्वारा प्रतियोगिता के आयोजक रेनू भारती पत्नी रामचरन भास्कर का बहुत-बहुत धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित किया गया और भविष्य में इस प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन होता रहे एसी कामना सभी टीमों के खिलाड़ियों द्वारा की गई। इस शुभ अवसर पर नौबस्ता के वरिष्ठ सदस्य रामकुमार सिंह, देवरीगजा प्रधान राहुल शुक्ला जिन्दना प्रधान अनीश सिंह, अमलौली प्रधान अनावर अहमद, विश्वजीत सिंह रंजीत रावत, नरेंद्र सिंह, इंद्रजीत रावत, मनोज सिंह, रामबरन भास्कर, और हजारों की संख्या में लोग उपस्थित रहे

थाना मझगई द्वारा वांछित अभियुक्त को गिरफ्तार किया

द अचीवर टाइम्स। रमेश चन्द्र

लखीमपुर खीरी। पुलिस अधीक्षक खीरी गणेश प्रसाद साहा के निर्देशन व अपर पुलिस अधीक्षक खीरी के निकट पर्यवेक्षण में संपूर्ण जनपद में अपराध की रोकथाम व वांछित/वारंटी अभियुक्तों की गिफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के अन्तर्गत आज दिन रविवार को मु0अ0सं0 136/2023 धारा 304 भादवि व 15(3) भारतीय चिकित्सा परिषद अधिनियम थाना मझगई जनपद खीरी से सम्बंधित वांछित अभियुक्त सेवकराम नि0 ग्राम चौरी खुर्द मजरा बबौरा थाना मझगई जनपद खीरी को नौगवां चौराहे से गिरफ्तार कर अग्रिम विधिक कार्यवाही जारी कर दिया है। उ0नि0 कमरुद्दीन खां,का0 कमल कुमार के द्वारा अभियुक्त को पकड़ कर जेल भेजा गया।

जिलाधिकारी ने की महादेवा महोत्सव की समीक्षा बैठक

द अचीवर टाइम्स- नीरज शुक्ला

रामनगर बाराबंकी। लोधेश्वर महादेवा मेला मैदान में आज अगहनी मेला को लेकर जिलाधिकारी सत्येंद्र कुमार ने समीक्षा बैठक की। महादेवा महोत्सव को महज तीन दिन कराए जाने की घोषणा सुनकर क्षेत्रीय जनों तथा विभिन्न पार्टियों के प्रतिनिधियों के अपील के बाद प्रशाशन ने आखिरकार पूर्व की भांति महोत्सव को सात दिवसीय करने का फैसला लिया है। सुप्रसिद्ध तीर्थस्थल लोधेश्वर धाम महादेवा में अगहनी मेला ग्यारह दिसम्बर से लेकर सत्रह दिसंबर पूरे सात दिन तक चलेगा। जिसमे कवि सम्मेलन, दंगल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, ब्रज की होली, फूलों की होली खेली जाएंगी। सभी कार्यक्रम महादेवा मेला मैदान में सम्पन्न होंगे। इसके बाद ग्रामीणों ने जिलाधिकारी से अपनी बात कहते हुए कहा है कि महादेवा में मंदिर परिसर, पुलिस चौकी, पीएचसी, पंचायत भवन आदि स्थान होने के बाद यहां पर सिर्फ दो ही सफाईकर्मी नियुक्ति है जिसमे से एक दिव्यांग बताया जा रहा है ऐसे में महादेवा की साफ सफाई व्यवस्था निरंतर बदहाल होती जा रही है। जिसके चलते ग्रामीणों व क्षेत्र वाशियों ने महादेवा धाम में सफाईकर्मियों की संख्या बढ़ाने की मांग की है। इस बैठक के दौरान पुलिस अधीक्षक दिनेश कुमार सिंह, एडीएम, उपजिलाधिकारी, क्षेत्राधिकारी, एवं सभी विभाग के अधिकारी व कर्मचारी सहित क्षेत्र की जनता मौजूद रही।

एक नज़र

अनूशा ने किया राधना इनायातपुर का नाम रौशन

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

हापुड़। जनपद हापुड़ के समीप किठौर से 2 किलोमीटर बसे राधना निवासी सदाकत अली की पुत्री अनूशा को राजिस्थान के स्यान उदय फाउंडेशन द्वारा इंडियन आइकॉन अवार्ड्स से सम्मानित किया गया , जिसे इसकी सूचना अनुशा के परिवार को मिली तो आस पास के घरों में खुशियों का माहौल हो गया , ग्राम प्रधान मतलुब जब्बार ने घर जाकर मुबारकबाद दी अनूशा गुगल गर्ल के नाम से जाने जानी वाली ज़किया हयात के साथ मिलकर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ शिक्षा के तहद लोगों को जागरूक कर रही हैं अनूशा कक्षा 8 की छात्र है और अनुशा आई एस बना चाहती है गांव और जिले का नाम रौशन करना चाहती है।

अज्ञात कारणों से लगी आग, पन्द्रह बीघा फसल जलकर राख

द अचीवर टाइम्स (नीरज शुक्ला)

रामनगर बाराबंकी। थानाक्षेत्र के अंतर्गत ग्राम बिठौरा के खेतों में गन्ने की फसल में अज्ञात कारणों से आग लग गयी। आग इतनी भीषण थी कि लगभग पन्द्रह बीघे गन्ने की फसल जलकर राख हो गयी। आग लगने के बाद लोगों ने देखा तो पूरे क्षेत्र में हड़कंप मच गया। किसानों ने आनन-फानन सबसे पहले इसकी सूचना पीआरवी 112 को दी, उसके बाद फायर स्टेशन रामनगर को इसकी सूचना दी गयी। सूचना पर पहुंचे फायर ब्रिगेड के कर्मियों ने जलती हुई आग बुझाने लगे काफी मेहनत करने के बाद दमकल कर्मियों ने आग पर काबू पाया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार रामनारायण सिंह निवाशी रमवापुर, राजकुमार सिंह निवाशी रमवापुर, उमेश निवाशी सेमराय, उमानाथ सिंह निवाशी सेमराय आदि लोगो के खेत में गन्ने की फसल लगभग पन्द्रह बीघा जलकर राख हो गयी। इस घटना को लेकर किसानों का रो-रो लर बुरा हाल है।

फांसी लगाने के मामले में युवक पर मुकदमा दर्ज

द अचीवर टाइम्स- नीरज शुक्ला/ संदीप मौर्या

सिरौलीगौसपुर बाराबंकी। थानाक्षेत्र के अंतर्गत ग्राम पासिन पुरवा मजरे शेषपुर टुटरु की एक लडकी के फांसी लगाने के मामले में चाचा ने गांव के ही सुनील नामक युवक के विरुद्ध कोतवाली बदोसराय में मुकदमा दर्ज कराया है। बताते चलें कि थाना बदोसराय क्षेत्र के ग्राम पासिन पुरवा मजरे शेषपुर टुटरु की मनीषा पुत्री बरसाती ने फांसी लगा ली थी। लडकी के चाचा दिनेश कुमार रावत पुत्र जगन्नाथ ने कोतवाली पुलिस को तहरीर देकर गांव के ही सुनील पुत्र रमेश पर आरोप लगाया है कि मनीषा सुनील से बात चीत किया करती थी 20 नवम्बर को उसकी भतीजी को सुनील ने मारा-पीटा था उसका मोबाइल छीन लिया था और अन्य कारणों को लेकर सुनील द्वारा मानसिक शारीरिक उत्पीड़न से त्रस्त उसकी भतीजी ने फांसी लगाकर जान दे दी है। दिनेश रावत की तहरीर पर थाना बदोसराय पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर अभियुक्त की तलाश शुरू कर दी है।

जबरन शारिरिक संबंध बनाने को लेकर पीड़िता ने की शिकायत,मुकदमा दर्ज

द अचीवर टाइम्स- नीरज शुक्ला/ संदीप मौर्या

सिरौली गौसपुर बाराबंकी। जबरन शारीरिक संबंध बनाने को लेकर पीड़िता की शिकायत पर कोतवाली पुलिस ने पति समेत चार के विरुद्ध संबंधित धाराओं में मुकदमा पंजीकृत किया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार कोतवाली बदोसराय क्षेत्र के एक गांव की रहने वाली विवाहिता ने ससुर तथा दो जेठो व पति पर जबरन शारीरिक संबंध बनाए जाने को लेकर शिकायत दर्ज कराई है। जिस पर कोतवाली पुलिस ने चारों लोगों के विरुद्ध गंभीर धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कर लिया है। इस संबंध में थानाध्यक्ष प्रफुल्ल कुमार ने बताया कि मामले की जांच कराई जा रही है।

सनफोर्ड हॉस्पिटल की तरफ से लगाया गया निशुल्क स्वास्थ्य कैंप

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के 169 विधानसभा क्षेत्र बक्शी का तालाब के ग्राम पंचायत दौलतपुर में सनफोर्ड हॉस्पिटल के द्वारा निशुल्क स्वास्थ्य कैंप का आयोजन किया गया जो कि किसान मंच के प्रदेश प्रवक्ता राहुल पांडे के आग्रह पर सनफोर्ड हॉस्पिटल के डायरेक्टर रिजवान खान मैनेजमेंट डायरेक्टर डॉक्टर हिमांशु तिवारी द्वारा कैंप का आयोजन किया गया इस मौके पर कई ग्रामीणों को निशुल्क स्वास्थ्य दवा का लाभ दिया गया इस मौके पर किसान मंच के प्रदेश प्रवक्ता राहुल पांडे बीकेटी ब्लॉक अध्यक्ष कुशाग्र पाठक राधेश्याम रावत अरुण कुमार तिवारी शांति प्रकाश तिवारी प्रकाश तिवारी फकीर गौतम आत्म प्रकाश तिवारी विशाल रावत आंचल रावत आदि ग्रामीण उपस्थित हुए और ग्रामीणों ने दवा को लेकर सनफोर्ड हॉस्पिटल की काफी प्रशंसा की डायरेक्टर डाक्टर रिजवान खान मैनेजमेंट डायरेक्टर डा. हिमांशु तिवारी ने कहा गरीब असहाय लोगों की मदद करने में सुकून मिलता है इसलिए हमारे हॉस्पिटल की तरफ से निशुल्क स्वास्थ्य कैंप का आयोजन किया गया।

शैरपुर में बड़ी धूमधाम से मनाया गया चन्द्रशेखर आजाद (रावण) का जन्म दिन

द अचीवर टाइम्स - महेन्द्र कुमार

हसनगंज (उन्नाव)। विकासखण्ड हसनगंज की ग्राम पंचायत सैरपुर में बड़ी धूमधाम से मनाया गया चंद्रशेखर आजाद रावण का जन्म उत्सव भारत के शोषितों, वंचितों, दलित, पिछड़ों एवं अल्पसंख्यकों के एकमात्र निर्भिड़ तथा शेर के भांति लड़ने वाले परम श्रद्धेय एड. चंद्रशेखर आजाद जी के जन्म उत्सव के अवसर पर ग्राम पंचायत सैरपुर तहसील हसनगंज जिला उन्नाव भीम आर्मी के सकड़ो करकर्ता मौजूद रहे आजाद आशीष गौतम जिला महासहिव भीम आर्मी, आशीष रावत जिला सह संयोजक , जीतू , सनराज, ग्राम प्रधान प्रतिनिधि ओम प्रकाश राठौर, मोनू , बलराम, प्रमोद, दीपू, विशाल, संदीप, राजेश ,महेश व अन्य लोग उपस्थित रहे। भीम आर्मी चीफ मा चंद्रशेखर आजाद, विनय रतन, कुलदीप भार्गव ,जिला अध्यक्ष रवि बौद्ध , जय भीम भीम आर्मी जिन्दाबाद के नारे गूंजे।

जनकल्याणकारी दिवस के रूप में मनाया भीम आर्मी चीफ़ एवं आसपा प्रमुख चंद्रशेखर आज़ाद का जन्मदिन

जिलाध्यक्ष एडवोकेट सुशील आज़ाद के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने केक काटकर एक दूसरे को खिलाया

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

हापुड़। भीम आर्मी एकता मिशन के चीफ़ एवं आज़ाद समाज पार्टी के प्रमुख चंद्रशेखर आज़ाद का 37वां जन्मदिन जिलाध्यक्ष एडवोकेट सुशील कुमार आज़ाद के नेतृत्व में सैंकड़ों कार्यकर्ताओं ने रामलीला मैदान स्तिथ जिला कार्यालय पर जनकल्याणकारी दिवस के रूप में मनाया। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने उनका केक काटकर एक दूसरों को खिलाया और उनकी दीर्घायु की कुदरत से कामना की। जिलाध्यक्ष एडवोकेट सुशील कुमार आज़ाद ने कहा कि आज पूरे भारतवर्ष में बहुजन समाज के लिए अकेले बड़े भाई चंद्रशेखर आजाद ही संघर्ष कर रहे हैं, तो ऐसे प्रिय संघर्षशील नेता के जन्मदिन को हम सभी पार्टी कार्यकर्ताओं ने बहुजन समाज के लोगों में भाईचारा बनाने के उद्देश्य के साथ मनाया है। उनके संघर्ष करने के दौरान फरवरी 2021 में विश्व की प्रसिद्ध टाइम पत्रिका ने उन्हें दुनिया में 100 उभरते नेताओं की अपनी वार्षिक सूची में शामिल किया जोकि भविष्य को आकार दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि बड़े भाई चंद्रशेखर आज़ाद का जन्म 3 दिसंबर 1986 को उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के छुटमुलपुर कस्बा में हुआ। उन्होंने उत्तराखंड के हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय से एलएलबी की पढ़ाई की। उन्होंने संवैधानिक अधिकारों की रक्षा और जातिगत उत्पीड़न का विरोध करने के लिए वर्ष 2015 में भीम आर्मी एकता मिशन संगठन व 15 मार्च 2020 को नोएडा में आज़ाद समाज पार्टी की स्थापना की। इस अवसर पर मंडल फ्रंटल अध्यक्ष एडवोकेट दिनेश कुमार, अर्जुन सिंह आज़ाद, राकेश सैनी, सुरेंद्र लाला, सोहनवीर सिंह, संदीप गोहरा, मनोज कर्दम, नवीन कुमार, योगेंद्र गौतम, रीना वर्मा, राशिद खान, कलवा, मंगत सिंह, पंकज जाटव, श्याम सिंह आज़ाद, वीर सिंह गौतम सहित सैंकड़ों कार्यकर्ता मौजूद रहे।

कटरा थाना पुलिस का कबाड़ी से सांठगांठ का ऑडियो वायरल

पहले उठाया फिर कई दिनों तक थाने में रखने का आरोप

- मोटी रकम लेकर छोड़ने का ऑडियो हो रहा वायरल।
- पुलिस अधीक्षक ने वायरल ऑडियो पर लिया संज्ञान सीओ तिलहर को दिए जांच के आदेश

द अचीवर टाइम्स दीपक सिंह

शाहजहाँपुर। जनपद शाहजहांपुर के कटरा थाने से सम्बंधित एक ऑडियो रिकार्डिंग वायरल हो रही है। जिसमें एक कबाड़ी किसी ब्यक्ति से बात करते हुए कटरा थाना पुलिस पर रुपये लेकर छोड़ने का आरोप लगा रहा है। वही दूसरी ओर बात करने बाला ब्यक्ति भी पुलिस पर आरोप लगाते हुए बोल रहा है कि कटरा थाने की पुलिस निर्दोष लोगों को पकड़कर उनसे रुपये बसूल रही है। आपको बता दे कि यहां पुलिस शिकायत के नाम पर कुछ ऐसे चुनिंदा कबाड़ियों को उठाती हैं जो चोरी के वाहन खरीदकर उन्हें काटने के बाद कबाड़ बना कर मोटी कमाई करते हैं। लेकिन पुलिस के इस कारनामे का जब एक कथित आडियो वायरल हुआ तो तरह तरह के सवाल खड़े होने लगे। वायरल आडियो में उठाये गए कबाड़ियों को कई कई दिन थाने में बिठाकर मोटी रकम लेकर छोड़ने की बात भी हो रही है। यह बाद जब थाना पुलिस को पता चली की कुछ लेंन देंन की ऑडियो वायरल हुई है तब से पुलिस के होश उड़े हुए हैं। दरअसल पूरा मामला जनपद शाहजहांपुर के थाना कटरा से जुड़ा हुआ है। यहाँ करीब 2 माह पूर्व जनपद बरेली के थाना फरीदपुर से एक दरोगा का स्थानांतरण थाना कटरा किया गया। थाना फरीदपुर के कुछ ऐसे चुनिंदा कबाड़ी है जो दरोगा के संपर्क में थे। इसी दौरान थाना कटरा पुलिस ने गोपनीय शिकायत के नाम पर उन कबाड़ियों को उठाकर थाना कटरा ले आये। जिनसे कुछ लोगो के और नाम पता चले और उन लोगो को भी उठाया गया। कई दिनों तक इन सभी कबाड़ियों को थाने में रखा गया और फिर छोड़ दिया गया।ऐसे में अब सवाल यह उठता है कि वायरल आडियो में पुलिस की जिन करतूतों की बात चल रही है अगर वह गलत है तो कटरा पुलिस ने जिन कबाड़ियों को उठाया तो उनमें से किसी के विरुद्ध कोई कार्यवाही क्यों नही की और न ही कबाड़ियों को उठाने की खबर अधिकारियों को है।बहरहाल पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा ने सीओ तिलहर को कटरा इंस्पेक्टर व दरोगा के इस कारनामे के जांच के आदेश दिए है।

खबर शाहजहांपुर इस ऑडियो की पुष्टि नही करता है।

वायरल ऑडियो की जांच सीओ तिलहर को दी गई है। जांच में अगर ऑडियो में कही बाते सच साबित हुई तो कार्रवाई की जाएगी।

अशोक कुमार मीणा पुलिस अधीक्षक शाहजहाँपुर

दो लोग आपस मे बात कर रहे है कोई भी ब्यक्ति किसी के लिए कुछ भी बोल सकता है कबाड़ियों को पूछताछ के लिए लाए थे जिन्हें बाद में छोड़ दिया गया। रुपये लेने का आरोप गलत है।

पवन कुमार पांडेय प्रभारी निरीक्षक कटरा

दुर्घटनाओं से बचावे हेतु छिजरसी पुलिस चौकी प्रभारी ने वाहनों पर लगाए रिफ्लेक्शन

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

हापुड़। जनपद हापुड़ में धीरे धीरे जैसे ठंड बढ़ रही है वैसे ही कोहर भी धीरे-धीरे अपने कदम बढ़ा रहा है जिससे सड़क पर दुर्घटनाएं होने का खतरा बढ़ जाता है ऐसी घटनाओं को रोकने हेतु उनके बचाव के लिए पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा व थाना पिलखुवा प्रभारी निर्देशानुसार पर छिजरसी पुलिस चौकी प्रभारी बनी सिंह ने दुर्घटनाओं से बचाव के लिए लोगों को जागरुक करते हुए ट्रैक्टर ट्राली व अन्य ब्यावासायिक वाहनों पर रिफ्लेक्शन लगाए गए और जिससे वाहनों के पीछे चल रहे वाहनों को घने अंधेरे व कोहरे के कारण रिफ्लेक्टर देखने से पता चल सके कि वाहन आगे चल रहा है। तो वहीं छिजरसी चौकी प्रभारी बनी सिंह ने वाहन स्वामियों को समझाते हुए कहा कि सर्दियों के मौसम में ज्यादा कोहरे की वजह से सामने से आने वाले वाहन दिखाई नहीं देते हैं जिसके कारण आपस में वाहनों के टकराने के कारण दुर्घटनाएं बढ़ती जाती हैं। इसलिए वाहन स्वामी फोग लाइट अवश्य लगे और वाहनों को चलाते समय पूर्णता यातायात नियमों का पालन करें।

खस्ताहाल खण्ड़जे पर जल्द ही शुरू होगा निर्माण कार्य

- ग्राम पंचायत बीबीपुर चिरियारी आंगनवाड़ी केंद्र व आर.सी.सी. रोड का जायजा लेने पहुंचे सचिव - देश दीपक गौड़।

द अचीवर टाइम्स- महेन्द्र कुमार

हनगंज (उन्नाव)। खस्ताहाल खण्ड़जे से परेशान ग्रामीणों ने ग्राम सचिव से मरम्मत व आर.सी.सी रोड बनवाने की लगाई गुहार। जो कि गांव से होकर जाने वाला यही एक मात्र रास्ता है जिससे दोपहिया-चार पहिया वाहन आसानी से निकल जाते हैं। ग्राम पंचायत बीबीपुर चिरियारी में डामर रोड से सटे बीबीपुर आंगनवाड़ी केंद्र के पास जयकरन व लेखपाल के घर से सरकारी गल्ले की दुकान की तरफ जाने वाले रास्ते के बीच में काफी समय से खण्ड़ंजा खस्ता हाल होने के कारण स्कूली बच्चों की गाड़ियां फस जाती हैं व कई बार पलटने से बची हैं ग्रामीणों को डर है कहीं किसी दिन कोई बड़ा हादसा न हो जाए। जो कि गांव का एक मेंन रास्ता है ग्रामीणों की सूचना पर ग्राम सचिव ने मौके पर जाकर आर.सी.सी. रोड व बीबीपुर आंगनबाड़ी केंद्र की लम्बे समय से गिरी हुई दिवार का लिया जायजा कहा जल्द ही निर्माण कार्य होगा शुरू ग्रामीणों को दिलाया पूरा भरोसा ग्राम प्रधान अनुपम सिंह ने भी जताई अपनी सहमती। अपनी कुशल कार्यशैली के कारण ग्राम प्रधान अनुपम सिंह ग्राम पंचायत बीबीपुर ग्रामीणों के दिलों में एक अलग ही पहचान बना रखी है।

जोजफ हेल्थ कम्मनियुटी सेंटर ने मनाया दिव्यांग दिवस समारोह

द अचीवर टाइम्स सुशील अवस्थी

महमूदाबाद सीतापुर। संत जोसफ कम्युनिटी हेल्थ सेंटर महमूदाबाद में क्षेत्रीय दिवांग दिवस समारोह में विधायक आशा मौर्य जी के प्रतिनिधि के रूप में वरिष्ठ भाजपा नेता मोहन प्रसाद बारी जी ने पहुच कर बच्चों का उत्साह वर्धन किया एवं पुरुस्कार का भी वितरण किया गया विधायक प्रतिनिधि रवि अवस्थी, श्याम श्रीवास्तव एवं कई भाजपा नेता उपस्थित रहकर बच्चों को आर्शीवाद दिया

पूर्णाहुति के साथ गायत्री महायज्ञ का समापन भावपूर्ण टोली की विदाई

द अचीवर टाइम्स नीरज शुक्ला

रामनगर बाराबंकी। नगर पंचायत कार्यालय परिसर में चल रहे तीन दिवसीय गायत्री महायज्ञ के तृतीय दिवस पर शांतिकुंज हरिद्वार से पधारी टोली के द्वारा नव कुंडीय गायत्री महायज्ञ पूर्णाहुति एवं पुंसवन संस्कार, नामकरण संस्कार, अन्नप्राशन संस्कार विद्यारम्भ संस्कार, गुरु दीक्षा संस्कार करने के पश्चात कार्यक्रम का समापन हुआ । टोली नायक मुख्य वक्ता बहन सुशीला जी ने संस्कार की महिमा का बखान करते हुए कहा कि मानव के जीवन में संस्कारों का बहुत ही बड़ा महत्व है संस्कार से व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है। संस्कार के द्वारा मनोविकारों का निराकरण कर उसकी सृजनात्मक शक्ति को बढ़ावा दिया जाता है। संस्कार मानव के जीवन को शुद्धि प्रदान करते हैं। संस्कार व्यक्ति को महान बनाते हैं। इस कार्यक्रम में गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट हरिशंकर शुक्ला कमला कान्त शुक्ला दिनेश बाजपेई अवधेश शुक्ला ? सुनील दीक्षित डॉ संजय तिवारी साकेत शर्मा रामानंद शुक्ला शुक्ला योगेंद्र मौर्य सोनेलाल मिश्रा, मौनी दास प्रज्ञेश दीक्षित प्रमोद कुमार राजेंद्र शुक्ला महादेव त्रिपाठी अमरपाल सिंह संजीव गुप्ता भाई लाल पवन नाग अशोक अवस्थी के अतिरिक्त महिला मंडल से बीना शुक्ला उर्मिला बाजपेई लक्ष्मी शुक्ला सोनी गुप्ता आरती तिवारी राजेश्वरी पूप्सा मौर्य मंजूलता शुक्ला आयुषी त्रिपाठी अंजलि द्विवेदी निधि शर्मा रजनी त्रिवेदी पूनम द्विवेदी राजकुमारी विश्वकर्मा, सहित काफी संख्या में बहनों भाइयों ने यज्ञ किया। यज्ञ समापन के पश्चात गायत्री परिवार के कार्यकर्ताओं के द्वारा शांतिकुंज से पधारी टोली की भावपूर्ण विदाई की गई। तत्पश्चात भंडारे का आयोजन किया गया जिसमें हजारों भक्तों ने प्रसाद पाया।

उत्तरकाशी में सिलक्यारा के पास एक और सुरंग से खतरों का रिसाव, ग्रामीणों की बढ़ रही चिंता

एजेंसी

चिन्यालीसौड़ (उत्तरकाशी)। धरांसू बैंड के निकट महरगांव में सुरंग से दो साल पहले पानी का रिसाव शुरू हुआ था जो धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा है। सिलक्यारा सुरंग हादसे के साथ ही उत्तरकाशी जिले की एक और सुरंग में पानी का रिसाव ग्रामीणों के लिए परेशानी का सबब बन गया है। इस सुरंग से इतना पानी बह रहा कि इससे सिंचाई की नहर व जमीनें क्षतिग्रस्त हो गई हैं। ग्रामीण डर के साये में जी रहे हैं। उधर, उत्तराखंड जल विद्युत निगम लिमिटेड (यूजेवीएनएल) का कहना है कि सुरंग के उपचार का काम लगातार जारी है। दरअसल, मनेरी भाली-2 परियोजना की 16 किलोमीटर लंबी सुरंग है। इस सुरंग से पानी जाता है, जिसके बाद धरासूं में बिजली का उत्पादन होता है। धरांसू बैंड के निकट महरगांव में सुरंग से दो साल पहले पानी का रिसाव शुरू हुआ था जो धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा है।

जीपीआर सर्वे सही होता तो 11वें दिन बाहर आ जाते मजदूर, पहले भी हो चुका फेल

हो चुके करोड़ों रुपये खर्च

यूजेवीएनएल इसके उपचार पर अब तक करोड़ों खर्च कर चुका है, लेकिन रिसाव नियंत्रण में नहीं आ रहा है। महरगांव के प्रधान सुरेंद्रपाल का कहना है कि दो साल से यहां पानी का रिसाव काफी तेजी से बढ़ रहा रहा है। गांव वालों की सिंचाई नहर व करीब 10 नाली भूमि क्षतिग्रस्त हो गई है। जगह-जगह भू-कटाव हो रहा है। सुरंग के ऊपर गांव चमियारी को भी बरसात में नुकसान पहुंच सकता है।

अंधेरी सुरंग में कैद के 17 दिन- वायरल हुआ मजदूरों का बनाया वीडियो, दिखाया कैसे लड़ी जिंदगी और मौत की जंग

बताया, सुरंग के ऊपर की ओर से महरगांव से एक-दो किमी दूर यह रिसाव हो रहा है। 304 मेगावाट बिजली उत्पादन करने वाले इस प्रोजेक्ट की सुरंग से भविष्य के नुकसान को लेकर ग्रामीण और अधिक आशंकित हो रहे हैं। उन्होंने मांग की कि इस सुरंग का उपचार तत्काल कराया जाए, ताकि उन्हें नुकसान से निजात मिल सके। कभी-कभी सुरंग से रिसाव हो सकता है। मनेरी भाली की सुरंग से रिसाव का लगातार उपचार किया जा रहा है। जिन ग्रामीणों को नुकसान हुआ, उन्हें मुआवजा भी दिया गया है। हमारे विशेषज्ञ इसके उपचार में जुटे हुए हैं। जल्द ही कोई नतीजा निकलेगा।

जब हनुमान भक्त विधायक ने अफसर पर तानी मुष्ठिका...अब वीडियो वायरल हुआ तो दी सफाई

संवाददाता

देहरादून। भाजपा विधायक दिलीप रावत का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें वह एक अफसर को मुक्का दिखाते नजर आ रहे हैं। हनुमान भक्त भाजपा विधायक दिलीप रावत की परिवहन विभाग के अफसर झड़प हो गई। उन पर धमकाने का भी आरोप है। सोशल मीडिया पर उनका यह वीडियो वायरल तेजी से वायरल हो रहा है।, जिसके बाद अब उन्होंने मामले में अपनी सफाई दी। वायरल वीडियो में दिखाई दे रहा है कि भाजपा विधायक दिलीप रावत अपनी गाड़ी से उतरकर सीधे अधिकारी के पास पहुंचते हैं। यहां पर कई अन्य लोग भी मौजूद हैं। इनके सामने ही विधायक अफसर को मुक्का दिखाते हैं। वीडियो वायरल होने के बाद भाजपा विधायक ने कहा कि हमारे यहां कोटद्वार में सिद्धबली का मेला चल रहा है और इसमें लाखों श्रद्धालु आते हैं। उनका कहना है कि उक्त अधिकारी सुबह से लोगों से अवैध वसूली करने लगे। साथ ही एक व्यक्तिगत आदमी के साथ वह अवैध वसूली कर रहे थे। मंदिर समिति के लोगों ने और स्वयंसेवकों ने जब इस पर आपत्ति जताई तो अधिकारी उनके साथ अभद्रता करने लगे। इसके बाद लोगों ने मुझसे इसकी शिकायत की तो अफसर मुझसे भी अभद्रता करने लगा।

एक नज़र

अब महाकाल लोक की शोभा बढ़ाएंगे बिल्व पत्र और रुद्राक्ष के वृक्ष, श्रद्धालु ले सकेंगे आनंद

एजेंसी

उज्जैन। उज्जैन स्थित महाकाल मंदिर अब अलग-अलग किस्म के फूलों की खुशबू से महकेगा। बता दें कि मंदिर प्रशासन इंदौर के कुछ चुनिंदा नर्सरी संचालक तथा दानदाताओं के सहयोग से महालोक में फूलों के करीब पांच हजार पौधों का रोपण करा रहा है। महाकाल लोक परिसर का वैभव यहां लगी मूर्तियों और श्लोकों से तो है ही लेकिन इसकी सुंदरता और प्राचीन महत्व आने वाले दिनों में यहां लगाए जा रह पेड़-पौधों से भी होगी। अब महाकाल लोक सुंदर और अलग-अलग किस्म के फूलों की खुशबू से महकेगा। मंदिर प्रशासन इंदौर के कुछ चुनिंदा नर्सरी संचालक तथा दानदाताओं के सहयोग से महालोक में फूलों के करीब पांच हजार पौधों का रोपण करा रहा है।

लगाए जाएंगे खुशबू वाले फूलों के पौधे

महाकाल मंदिर के सहायक प्रशासक मूलचंद जुनवाल ने बताया कि महालोक की भव्यता फूलों की सुंदरता और खुशबू से और निखार जाएगी। महाकाल लोक परिसर में बिल्व पत्र, रुद्राक्ष के वृक्ष लगाए गए हैं। अब मूर्तियों के आसपास की क्यारी, पाथवे व अन्य रिक्त स्थान पर देश विदेश की विभिन्न किस्म के सजावटी व खुशबू वाले फूलों के पौधे लगाए जा रहे हैं।

आनंद ले सकेंगे श्रद्धालु

पौधों का रोपण इंदौर के कुछ बड़े नर्सरी संचालक व दानदाता के सहयोग से कराया जा रहा है। इसमें मंदिर समिति पर किसी प्रकार का कोई वित्तीय भार नहीं आएगा। देश विदेश से आने वाले भक्त यहां धर्म, कला, संस्कृति के साथ प्रकृति का भी आनंद ले सकें साथ ही श्रद्धालुओं को भगवान शिव के वन में घूमने का एहसास हो इसलिए पौधे लगाए जा रहे हैं ।

स्कूल, सड़क से लेकर पहाड़ों तक पौधे लगा रहे प्रकृतिप्रेमी, घरों में पौधे तैयार कर दूसरों को दे रहे

इंदौर। पर्यावरण संरक्षण में अहम भूमिका निभा रही है पुष्पित तूलिका, पौधे लगाने के बाद उनकी मानिटरिंग पर भी देते हैं ध्यान एक प्रयास सार्थकता की ओर टैगलाइन के साथ बच्चों को शिक्षा और संस्कार देने का काम करने वाली संस्था पुष्पित तूलिका पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने का भी काम कर रही है। संस्था की अध्यक्ष मणिमाला शर्मा ने बताया कि पर्यावरण संरक्षण के लिए संस्था के विभिन्न सदस्यों द्वारा विगत तीन माह में इंदौर शहर के अलग-अलग स्थान पर लगभग 300 पौधे लगाए गए। संस्था सचिव नमिता दुबे के निर्देशन में सुषमा जैन, रीना वाकडे, अलविंदर कौर, जसबीर सलूजा, उषा कौरान्ने, प्रतिमा दुबे, ऐश्वर्या गर्ग, करुणा कुरेरिया ने नीम, तुलसी, पीपल, बरगद, कनेर, अशोक, गुड़हल, आंवला, सहजन, बादाम, बिल्वपत्र, अमरुद, आम, अनार, जामुन के पौधे लगाए। पितृपर्वत, विभिन्न स्कूलों, कालेजों और गांवों में ना केवल पौधे लगाए वरन पौधों को पूर्ण संरक्षण भी दिया है। इंदौर के बाहर अन्य शहरों में भी पौधारोपण किया गया है। पुष्पित तूलिका ने अपने नाम को सार्थक करते हुए पुष्पीय पौधे भी लगाए। गुलाब, जूही, चमेली, रात रानी, पारिजात, बोगनवेलिया, पलाश आदि पौधे लगा कर अपनी संस्था की खुशबू सभी जगह बिखेरी है। संस्था की उपाध्यक्ष डॉक्टर पूर्णिमा मंडलोई स्वयं अपने घर में गुड़हल, पान, तुलसी और ऑक्सीजन से भरपूर प्लांट तैयार करके लोगों को अपने घरों में लगाने के लिए दे रही हैं। वे स्वयं भी सड़क किनारे इन पौधों को लगाकर लोगों को सुंदर पर्यावरण के प्रति जागरूक कर रही हैं। इतना ही नहीं डॉ मंडलोई पत्र पत्रिकाओं में आलेख लिखकर भी लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक कर रही हैं।

देश की पहली किन्नर पूर्व विधायक के खिलाफ फिर FIR दर्ज, जानें अब पुलिस ने क्यों की कार्रवाई

अनूपपुर। मध्यप्रदेश में अनूपपुर जिले की पहली किन्नर विधायक के खिलाफ कोतवाली पुलिस ने मामला दर्ज किया है। बताया जा रहा है कि आचार संहिता के दौरान पूर्व विधायक ने अपनी पिस्टल को थाने में जमा नहीं किया था। देश की पहली किन्नर विधायक शबनम मौसी के खिलाफ अनूपपुर की कोतवाली पुलिस ने मामला दर्ज किया है। शबनम मौसी ने आचार संहिता के दौरान अपनी पिस्टल को थाने में जमा नहीं किया था, जिसके कारण पुलिस ने धारा-188 एवं 29, 30 आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज किया है। अभी हाल में ही दो ऑटो चालकों से बीच चौराहे पर मारपीट करने पर भी मामला दर्ज हुआ था। बता दें कि मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव को लेकर पूरे प्रदेश में आचार संहिता लगने के बाद अनूपपुर पुलिस ने शस्त्रधारियों को अपने-अपने शस्त्र जमा करने के लिए नोटिस जारी किया था। उसके बाद सभी शस्त्रधारियों ने अपने-अपने शस्त्र नजदीकी थानों में जमा कर दिए थे। वहीं, शबनम मौसी पूर्व विधायक जिनके पास शस्त्र के रूप में पिस्टल था। पिस्टल को जमा करने के लिए नोटिस दिया गया था। यह नोटिस कई बार दी जा चुकी थी। इसके बावजूद उन्होंने लापरवाही बरतते हुए जमा नहीं कराया, जिसको लेकर थाना कोतवाली अनूपपुर में शबनम मौसी के खिलाफ मामला दर्ज हुआ है। वहीं, इस पूरे मामले में अनूपपुर एसपी जितेन्द्र पवार का कहना है कि चुनाव के दौरान आचार संहिता में नोटिस जारी होने के बाबजूद उन्होंने अपना शस्त्र जमा नहीं किया था। इस पर उनके खिलाफ मामला दर्ज हुआ है।

कमलनाथ बोले- मैं PCC कार्यालय में रहकर मतगणना पर रखूंगा नजर, आपके सतत संपर्क में रहूंगा

एजेंसी

भोपाल। विधानसभा चुनाव के परिणाम आने में अब सिर्फ कुछ ही घंटे शेष रह गए हैं। ऐसे में राजनीतिक दल पूरी तरह से मुस्तैद हैं। कांग्रेस ने भी अपनी पूरी तैयारी कर ली है। इसे लेकर पीसीसी चीफ कमलनाथ ने एक्स पर एक पोस्ट के जरिए पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाया। जानें और क्या-क्या कहा...। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव की काउंटिंग को लेकर कांग्रेस किसी प्रकार की कोई लापरवाही नहीं करना चाहती है। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष कमलनाथ ने रविवार को होने वाली मतगणना से पहले शनिवार को अपने कार्यकर्ताओं, प्रत्याशियों और पोलिंग एजेंट्स के साथ बैठक कर उनमें जोश भरने का काम किया। उन्होंने कहा कि वे खुद मतगणना पर अपनी पूरी नजर रखेंगे। इसके साथ ही वे कार्यकर्ताओं के साथ सतत संपर्क में रहेंगे। पीसीसी चीफ कमलनाथ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट साझा कर कार्यकताओं का मनोबल बढ़ाया। उन्हें उनका योगदान याद दिलाया। उन्होंने लिखा कि प्रिय साथियों, यह उत्साह और आत्मविश्वास का समय है। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव की प्रक्रिया करीब डेढ़ महीने पहले प्रारंभ हुई थी और कल तीन दिसंबर को मतगणना के साथ यह संपन्न हो जाएगी। आपने हर चरण पर मन, वचन और कर्म से पार्टी और लोकतंत्र की जो सेवा की है, वह अतुलनीय है।

'एमपी में नया प्रभात होगा'

नाथ ने आगे लिखा कि कल इसी एकाग्रता और समर्पण से मतगणना की प्रक्रिया भी हम सबको मिलकर संपन्न करानी है। मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कार्यालय में मैं स्वयं उपस्थित रहकर मतगणना की प्रक्रिया पर पूरी नजर रखूंगा और आप सबके सतत संपर्क में रहूंगा। तीन दिसंबर को मध्य प्रदेश में नया प्रभात होगा। विश्वास रखिए विजय श्री कांग्रेस का वरण करने जा रही है।

प्रवक्ताओं को मिली जिम्मेदारी

काउंटिंग से पहले शनिवार शाम को पीसीसी में कांग्रेस मीडिया विभाग की भी महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में मीडिया विभाग के अध्यक्ष केके मिश्रा और कांग्रेस के मीडिया सलाहकार पीयूष बबेले सहित सभी उपाध्यक्ष और प्रवक्ता शामिल हुए। बैठक में तीन दिसंबर को होने वाली मतगणना के लिए रणनीति तैयार की गई। सभी प्रवक्ताओं को अलग-अलग जिम्मेदारियां सौंपी गई। इसके साथ पीसीसी में मतगणना के दिन बड़ी एलईडी स्क्रीन पर चुनाव परिणाम देखे जाने का निर्णय लिया गया।

कटक पूर्व जिलाधिकारी भबानी शंकर चइनी की समस्या बढ़ी

एजेंसी

भुवनेश्वर। कटक के पूर्व जिलाधिकरि भवानी शंकर चईनी अब संदेह के घेरे में है. क्योंकि माननीय उच्च न्यायालय उनसे नाराज है. बालू परिवहन को लेकर हाईकोर्ट ने श्री चइनी ??को दंड देने केलिए प्रशासन को आदेश दिया है। कोर्ट ने कहा कि बालू की ढुलाई के संबंध में श्री चैनी का बयान गलत है।

हाईकोर्ट ने कहा, इसके लिए उनके खिलाफ ठोस कदम उठाए जाने चाहिए।

इसमें खुलासा हुआ कि अवैध बालू उठाव और परिवहन को लेकर एक जनहित याचिका दायर की गयी थी. प्रशासन पर पट्टा धारकों के पक्ष में लोगों के हितों की अनदेखी करने का आरोप लगाया गया। इसे लेकर हाईकोर्ट ने जिला प्रशासन से सच्चाई पूछी. प्रशासन की ओर से कहा गया कि ऐसा नहीं हो रहा है और जो हुआ उसके लिए उन पर जुर्माना लगाया गया है. हालांकि, प्रशासन के ऐसे बयान से हाई कोर्ट काफी नाराज हुआ. कोर्ट ने कहा कि जिला कलेक्टर का ऐसा गैरजिम्मेदाराना व्यवहार अस्वीकार्य है. कोर्ट ने कहा कि इसके लिए उनके खिलाफ ठोस कार्रवाई की जानी चाहिए। कोर्ट ने कहा कि इस तरह की कार्रवाई से दूसरों को चेतावनी मिलेगी।

चुनाव में फंसा पेच तो बागियों व निर्दलीयों के हाथ में होगी सत्ता की चाबी

संवाददाता

भोपाल। एग्जिट पोल के बाद मध्य प्रदेश में भाजपा और कांग्रेस दोनों यह दावा कर रहे हैं कि हमारी सरकार आने वाली है। इसके बावजूद ये लोग बागियों से संपर्क साध रहे हैं। विंध्य क्षेत्र से मैहर विधानसभा सीट आती हैं। मध्य प्रदेश में रविवार को चुनाव के नतीजे आ जाएंगे। इससे पहले सियासी दलों ने सीटों को लेकर जोड़ घटाव शुरू कर दिया है। ऐसे में सबकी निगाहें उन बागियों पर टिक गई जो दमदार स्थिति में दिख रहे हैं। यह चेहरे भाजपा और कांग्रेस से ही जुड़े रहे हैं। ऐसे में चर्चा है कि पार्टियों ने इनसे संपर्क करना शुरू कर दिया है। प्रदेश के आधा दर्जन के करीब सीटों पर इनकी जीत दिख रही हैं। हाल ही में आए एग्जिट पोल में ऐसी संभावना दिखी है। एग्जिट पोल के बाद मध्य प्रदेश में भाजपा और कांग्रेस दोनों यह दावा कर रहे हैं कि हमारी सरकार आने वाली है। इसके बावजूद ये लोग बागियों से संपर्क साध रहे हैं। विंध्य क्षेत्र से मैहर विधानसभा सीट आती हैं। भाजपा से बागी नारायण त्रिपाठी यहां अपनी अलग पार्टी बनाकर चुनाव लड़ रहे हैं। वोटिंग के बाद इनकी स्थिति मजबूत नजर आ रही है। साथ ही इनके रिश्ते भाजपा और कांग्रेस दोनों में अच्छे हैं। ऐसे में दोनों ही दल के लोग कथित रूप से इनके संपर्क में हैं। ऐसी ही स्थिति विंध्य में सीधी सीट पर भी है। पेशाब कांड से चर्चा में आए भाजपा विधायक को पार्टी ने इस बार टिकट नहीं दिया। वहां से सीधी सांसद रीति पाठक को मैदान में उतारा है। इसके बाद विधायक केदार शुक्ला बागी बनकर निर्दलीय चुनाव मैदान में उतर गए हैं। कहा जा रहा है कि यहां भी उन मुकाबले को कांटे की टक्कर में बदल दिया है। बुरहानपुर विधानसभा सीट पर भी मुकाबला दिलचस्प है। भाजपा ने यहां से पूर्व मंत्री अर्चना चिटनिस को टिकट दिया है तो पूर्व प्रदेश अध्यक्ष नंद कुमार सिंह चौहान के बेटे हर्ष सिंह चौहान नाराज हो गए हैं। उसके बाद वह निर्दलीय मैदान में हैं। अर्चना की तुलना में हर्ष का पलड़ा भारी दिख रहा हैं। ऐसे में भाजपा उन्हें अपने पाले में करने की जुगत में जुट गई हैं। इसी तरह से महू में भी कांग्रेस के पूर्व विधायक अंतर सिंह दरबार निर्दलीय उतरने से मामला त्रिकोणीय हो गय ा है। भाजपा और कांग्रेस उम्मीदवारों की चिंता बढ़ गई हैं। दरबार यदि बाजी जीत जाते हैं तो कांग्रेस उन्हें मनाने की कोशिश करेगी। यहीं हाल आलोट में भी हैं टिकट नहीं मिलने से नाराज पूर्व सांसद प्रेमचंद्र गुड्डू निर्दलीय मैदान में उतर गए हैं। गुड्डू की गिनती कांग्रेस के कद्दावर नेताओं में होती है। उनके उतरने से कांग्रेस का कही समीकरण बिगड़ेगा। ऐसे में रिजल्ट से पहले गुड्डू पर भी पार्टी की नजर हैं। इसी तरह से बुंदलेखंड और ग्वालियर चंबल की कुछ सीटों पर सपा और बीएसपी का पलड़ा भारी दिख रहा हैं। 2018 के विधानसभा चुनाव में भी बीएसपी ने दो और सपा 1 सीट जीती थी। इस बार भी ऐसे ही आसार दिख रहे हैं। लेकिन जीत के बाद ये दल किसके साथ जाएंगे यह साफ नहीं हैं। 2018 में दोनों ने कांग्रेस का साथ दिया था।

फर्जी पुलिसकर्मी बनकर दो लोगों ने रेलवे स्टेशन पर खड़ी महिला के साथ किया दुष्कर्म, तलाश जारी

एजेंसी

अशोकनगर। अशोकनगर जिले के मुंगावली रेलवे स्टेशन पर दो लोगों ने खुद को जीआरपी अफसर बताते हुए महिला के साथ सामूहिक दुष्कर्म किया। महिला अपने पति के साथ स्टेशन पर ट्रेन का इंतजार कर रही थी। इसी दौरान आरोपियों ने सामूहिक दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया। अशोकनगर में महिलाओं के साथ अपराधों का ग्राफ बढ़ता जा रहा है। पिछले पांच दिन में मुंगावली शहर में लगातार महिलाओं के साथ अपराध देखने को मिल रहे हैं। बुधवार रात को ही मुंगावली एरिया के तहत आने वाले मड़ाऊ खेड़ी गांव में एक नाबालिग के साथ तीन लोगों ने सामूहिक दुष्कर्म किया था तो वहीं शुक्रवार रात को भी रेलवे स्टेशन पर ट्रेन का इंतजार कर रहे दंपती महिला के साथ जीआरपी स्टॉफ बनकर आए लोगों ने दुष्कर्म किया है। बता दें कि मुंगावली की रेलवे स्टेशन के पास एक 30 वर्षीय महिला के साथ दुष्कर्म का मामला सामने आया है। पीड़िता रेलवे स्टेशन पर अपने पति के साथ ट्रेन आने का इंतजार कर रही थी। इसी दौरान दो लोग आए और आकर कहने लगे कि वह लोग जीआरपी स्टॉफ से हैं। पति से बोले कि तुम्हें सहाब बुला रहे हैं। पति के जाते ही उधर दूसरे व्यक्ति ने झाड़ियों में महिला को ले जाकर बारी-बारी से दोनों ने दुष्कर्म किया। घटना शुक्रवार की रात करीब 11 बजे की है। चंदेरी थाना क्षेत्र के एक गांव की महिला और उसका पति दोनों जयपुर मजदूरी करने के लिए जा रहे थे। रात के समय भोपाल जोधपुर ट्रेन से जाना था, लेकिन उनके स्टेशन तक पहुंचने से कुछ समय पहले ही ट्रेन चली गई, जिसके बाद वह अगली ट्रेन आने का स्टेशन पर ही रुककर इंतजार करने लगे। देर रात स्टेशन पर चहल-पहल काफी कम होने लगी। रात करीब 11 बजे दो लोग आए, जिनमें से एक व्यक्ति अपने चेहरे को कपड़े से ढके हुए था। दोनों जाकर पहले तो पास में बैठे रहे, फिर उन दोनों के टिकट चेक करने लगे। आधार कार्ड चेक किया, पूछा तुम कहां जा रहे हो। पति-पत्नी ने कहा कि उनकी ट्रेन चूक गई है अगली ट्रेन आएगी, उसी समय वह टिकट लेकर ट्रेन से जाएंगे। इसके बाद एक व्यक्ति महिला के पति से बोला कि तुम बिना टिकट हो, साहब बुला रहे हैं। वह पति को लेकर कुछ दूर चला गया, जबकि दूसरा व्यक्ति महिला के पास ही खड़ा था, वह कुछ देर बाद कहने लगा कि तुम भी वहीं पर चलो, तुमको भी सहाब बुला रहे हैं। इसके बाद वह महिला को वहां से स्टेशन के पीछे झाड़ियां में ले गया जहां पर उसके साथ दुष्कर्म किया। कुछ देर बाद पति को छोड़कर दुसरा व्यक्ति भी आ गया, उसने भी दुष्कर्म किया। घटना के बाद महिला स्टेशन पर पहुंची, जहां पर कुछ देर बाद कोई व्यक्ति स्टेशन की ओर बाइक से आ रहा था उसे देख दोनों वहां से भाग गए। फिर पीड़िता ने डायल 100 पर उसके साथ हुई घटना की जानकारी दी। रात के समय ही मुंगावली पुलिस स्टेशन पर पहुंची और अशोकनगर जीआरपी पुलिस को सूचना दी गई। सुबह पांच बजे जीआरपी पुलिस स्टेशन पर पहुंची और महिला और उसके पति को ट्रेन से अशोकनगर लेकर आए, जहां पर पीड़िता की शिकायत पर दोनों अज्ञात आरोपियों के खिलाफ दुष्कर्म का मामला दर्ज किया है।

चंडीगढ़ में 18 जनवरी से पक्का मोर्चा लगाएंगे किसान, केंद्र के खिलाफ होगा अनिश्चितकालीन धरना

चंडीगढ़। किसान नेता बलबीर सिंह राजेवाल ने किसान भवन में इस धरने के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस संघर्ष में 5 किसान यूनियन शामिल होने जा रही हैं, संयुक्त किसान मोर्चे को भी इस मोर्चे में शामिल किया जाएगा। पंजाब के किसानों ने चंडीगढ़ में 18 जनवरी से पक्का मोर्चा लगाने का एलान किया है। इस बार केंद्र के खिलाफ अनिश्चितकालीन धरना लगाया जाएगा। किसान नेता बलबीर सिंह राजेवाल ने किसान भवन में यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस संघर्ष में 5 किसान यूनियन शामिल होने जा रही हैं, संयुक्त किसान मोर्चे को भी इस मोर्चे में शामिल किया जाएगा। इस दौराना किसान नेताओं ने पंजाब सरकार द्वारा गन्ने के बढ़ाए दाम को गलत बताया। उनकी दलील थी कि पंजाब में गन्ने की लागत सबसे अधिक है। सरकारी एजेंसी का कहना है कि गन्ने की 470 लागत पड़ती है जबकि सरकार मात्र 11 रुपये बढ़ाकर खुशी जताने की बात कर रही है।

बंगलूरू में कभी टी-20 मैच नहीं हारा ऑस्ट्रेलिया

भारत के लिए डरावने हैं आंकड़े

एजेंसी

बंगलूरू। भारतीय टीम की कोशिश जीत के साथ सीरीज खत्म करने की होगी। वहीं, ऑस्ट्रेलिया के युवा खिलाड़ी अपना दमखम दिखाने के लिए बेताब होंगे। हालांकि, बंगलूरू में कंगारू टीम का रिकॉर्ड शानदार है। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच टी20 सीरीज का आखिरी मुकाबला बंगलूरू के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में है। पांच मैच की सीरीज में भारतीय टीम पहले ही 3-1 की अजेय बढ़त ले चुकी है, लेकिन अब भारत की कोशिश जीत के साथ सीरीज का अंत करने की होगी। वहीं, ऑस्ट्रेलिया के युवा खिलाड़ी इस मुकाबले में अपना दमखम दिखाने के लिए बेताब होंगे। भारत और ऑस्ट्रेलिया पांच मैचों की टी20 सीरीज का पांचवां मैच रविवार, तीन दिसंबर को बंगलूरू के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में खेला जाएगा। मैच शाम 7:00 बजे शुरू होगा। इस मैदान पर ऑस्ट्रेलियाई टीम अब तक कोई टी20 मैच नहीं हारी है। सूर्यकुमार यादव की टीम इस मुकाबले में इतिहास बदलना चाहेगी।

एम चिन्नास्वामी स्टेडियम का टी20 रिकॉर्ड

जीत/हार का रिकॉर्ड

भारत ने एम. चिन्नास्वामी स्टेडियम में छह मैच खेले हैं। उन्होंने दो मैच जीते हैं और तीन हारे हैं, जबकि एक मुकाबला बिना किसी नतीजे के समाप्त हुआ। इसके विपरीत, ऑस्ट्रेलिया ने स्टेडियम में दो मैच खेले हैं और दोनों में जीत हासिल की है।

औसत स्कोर

एम. चिन्नास्वामी स्टेडियम में टी20 में भारत का औसत 138 रन है। वहीं, ऑस्ट्रेलिया का औसत स्कोर 175 रन है।

उच्चतम स्कोर

भारत का सर्वोच्च स्कोर 20 ओवर में 202/6 रहा है, जो 2017 में इंग्लैंड के खिलाफ बना था। उस मैच में भारत ने इंग्लैंड को 75 रन से हराया था। इस मैदान में ऑस्ट्रेलिया के लिए सबसे बड़ा स्कोर 2019 में भारत के खिलाफ आया था, जब उन्होंने 19.4 ओवर में 194/3 रन बनाए थे। ऑस्ट्रेलिया ने इस मुकाबले में भारत को सात विकेट से हराया था।

एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में भारत बनाम ऑस्ट्रेलिया टी20 रिकॉर्ड

भारत और ऑस्ट्रेलिया ने एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में एक-दूसरे के खिलाफ एक मैच खेला है, जिसमें ऑस्ट्रेलिया ने जीत हासिल की थी। इस स्टेडियम में भारत बनाम ऑस्ट्रेलिया मैच का उच्चतम स्कोर 194/3 है जो 2019 में ऑस्ट्रेलिया ने बनाया था। हालांकि, हालिया फॉर्म को देखते हुए भारत इस मैच में पसंदीदा टीम होगी।

कैसी रहेगी पिच?

बेंगलूरू की पिच हमेशा से ही बल्लेबाजों के लिए मददगार रही है। यहां आईपीएल और अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों में भी बड़े स्कोर बनते हैं। इस मुकाबले में भी 200 रन से ज्यादा स्कोर बन सकता है और विपक्षी टीम इसे हासिल भी कर सकती है। हालांकि, स्पिन गेंदबाजों के लिए पिच मददगार रहती है, लेकिन छोटी बाउंड्री होने के कारण कई बार खराब शॉट भी छह रन के लिए सीमा रेखा से बाहर चले जाते हैं। ऐसे में स्पिन गेंदबाजों को पिच का फायदा उठाते हुए एलबीडब्ल्यू और बोल्ड के जरिए विकेट लेने की कोशिश करनी होगी।

कैसा रहेगा मौसम?

मौसम की वेबसाइट एक्यूवेदर के अनुसार, तीन दिसंबर को मैच के दिन बंगलूरू में हल्की बारिश होने की संभावना है। बारिश के आसार 55 प्रतिशत हैं, हवा में 75 प्रतिशत आर्द्रता होगी और हवा की गति 23 किमी/घंटा होगी। अधिकतम तापमान 25 डिग्री सेल्सियस तक जा सकता है और न्यूनतम तापमान 20 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहेगा।

खूबसूरत और निखरी हुई त्वचा का सीक्रेट इंग्रेडिएंट पढ़ें कैसे करें इसका इस्तेमाल

आपके किचन में मौजूद कलौंजी खूबसूरत त्वचा पाने के लिए काफी प्रभावी है। इसमें एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं जो त्वचा पर मौजूद अशुद्धियों को बाहर निकालने में मदद करते हैं। कलौंजी के इस्तेमाल से चेहरे की टैनिंग से लेकर मुंहासों तक की समस्या में निजात पाया जा सकता है। इसके लिए आप कलौंजी का पाउडर इस्तेमाल करना होगा। खूबसूरत और निखरी हुई त्वचा पाना हर किसी की चाहत होती है। इसके लिए हम तरह-तरह के ब्यूटी प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल करते हैं लेकिन खूबसूरत त्वचा का राज हमारे किचन में ही छिपा है। जी हाँ, आपके किचन में मौजूद कलौंजी खूबसूरत त्वचा पाने के लिए काफी प्रभावी है। इसमें एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं जो त्वचा पर मौजूद अशुद्धियों को बाहर निकालने में मदद करते हैं। कलौंजी के इस्तेमाल से चेहरे की टैनिंग से लेकर मुंहासों तक की समस्या में निजात पाया जा सकता है। इसके लिए आप कलौंजी का पाउडर इस्तेमाल करना होगा। इसके लिए कलौंजी को पीसकर पाउडर बना लें और किसी कंटेनर में स्टोर कर लें। आज के इस लेख में हम

आपको बताएंगे कि आप किस तरह कलौंजी का फेसपैक इस्तेमाल करके खूबसूरत और निखरी हुई त्वचा पा सकते हैं कलौंजी के बीजों से बना फेसपैक इस्तेमाल करके आप अपने चेहरे के दाग-धब्बों से छुटकारा पा सकते हैं। इसके लिए कटोरी में एक चम्मच कलौंजी और एक चम्मच दूध मिलाएं। इस पेस्ट को अपने चेहरे और गले पर लगाकर 10-15 मिनट के लिए छोड़ दें। इसके बाद सादे पानी से चेहरा साफ़ कर लें। इससे आपके चेहरे पर मौजूद दाग-धब्बे दूर होंगे और चेहरा निखरा हुआ नज़र आएगा। अगर आप ओपन पोर्स और ड्राई स्किन की समस्या से परेशान हैं तो बाउल में एक चम्मच कलौंजी पाउडर, एक चम्मच ओट्स, आधा चम्मच शहद, आधा चम्मच बादाम का तेल और दूध की क्रीम को एक साथ मिलाकर पेस्ट बना लें। अब इस पेस्ट को अपने चेहरे और गर्दन पर लगाकर 10 मिनट के लिए छोड़ दें। इसके बाद गुनगुने पानी से चेहरा धो लें। इससे आपको खुले रोमछिद्रों और ड्राई स्किन की समस्या से छुटकारा मिलेगा। ऑयली स्किन वालों के लिए कलौंजी के फेसपैक का इस्तेमाल बहुत फायदेमंद होता है। कलौंजी में एंटी बैक्टीरियल गुण होते हैं जो चेहरे पर जमा अशुद्धि को बाहर निकालने में मदद करते हैं। इसके लिए बाउल में एक चम्मच कलौंजी पाउडर, एक चम्मच एलोवेरा जेल, आधा चम्मच स्किम्ड मिल्क और आधा चम्मच नींबू का रस मिलाकर पेस्ट तैयार कर लें। इस पेस्ट को चेहरे और गर्दन पर अच्छी तरह लगाकर 10 से 15 मिनट के लिए छोड़ दें। इसके बाद गुनगुने पानी से चेहरा धो लें। अगर धूप के कारण आपकी स्किन पर सनबर्न या टैनिंग हो गई है तो बाउल में एक चम्मच कलौंजी पाउडर, एक चम्मच चावल का आटा, एक चम्मच शीशम ऑयल, एक चम्मच संतरे के छिलके का पाउडर, 3-4 बूंद लेमन ऑयल और दूध मिलाकर पेस्ट बना लें। इस पेस्ट को चेहरे और गर्दन पर अच्छी तरह लगाकर 10 से 15 मिनट के लिए छोड़ दें। इसके बाद गुनगुने पानी से चेहरा धो लें।

महिलाओं में वैजाइनल फैट है खतरनाक, प्रेगनेंसी में हो सकती है दिक्कत, जानें इसे घटाने के तरीके

हेल्थ एक्सपर्ट्स के मुताबिक, उम्र बढ़ने के साथ वैजाइनल एरिया में फैट जमा होने लगता है। अगर वैजाइना में फैट जमा हो तो इसके कारण नार्मल डिलीवरी में दिक्कत आती है। एक रिपोर्ट में सामने आया है कि वैजाइनल फैट के कारण 92त्न महिलाओं को सी-सेक्शन का सहारा लेना पड़ता है।

अक्सर महिलाएं अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखती हैं लेकिन अपने प्राइवेट पार्ट की देखभाल को नजरंदाज कर देती हैं। ज्यादातर महिलाओं में वेजाइनल हेल्थ को लेकर शर्म और झिझक होती है। लेकिन हमें समझना चाहिए कि वेजाइना भी शरीर के अन्य हिस्सों की तरह एक महत्वपूर्ण अंग है। ज्यादातर महिलाऐं शरीर के फैट पर तो ध्यान देती हैं लेकिन उनका ध्यान वैजाइनल फैट पर नहीं जाता है। जबकि, वैजाइना का फैट बढ़ने से प्रेगनेंसी में समस्याएँ पैदा हो सकती हैं। हेल्थ एक्सपर्ट्स के मुताबिक, उम्र बढ़ने के साथ वैजाइनल एरिया में फैट जमा होने लगता है। अगर वैजाइना में फैट जमा हो तो इसके कारण नार्मल डिलीवरी में दिक्कत आती है। एक रिपोर्ट में सामने आया है कि वैजाइनल फैट के कारण 92त्न महिलाओं को सी-सेक्शन का सहारा लेना पड़ता है। डॉक्टर्स के मुताबिक जब वजन अधिक बढ़ जाता है तो इससे बर्थ कैनाल संकरी हो जाती है और इससे डिलीवरी के समय परेशानी हो सकती हैं। इसके कारण बच्चे को वेजाइना से बाहर आने में दिक्कत होती है और डॉक्टर को सी-सेक्शन करना पड़ता है। ऐसे में बहुत जरुरी है कि अगर आप कंसीव करना चाहती हैं तो अपने वैजाइनल फैट का ध्यान रखें। अगर आपको लगता है कि आपका

आपका घर छोटा हो तो इन 4 स्मार्ट तरीकों से स्पेस को करें इस्तेमाल

आज के इस लेख में हम आपको बताएंगे कि आप कैसे छोटी जगह को स्मार्ट तरीके से इस्तेमाल कर सकते हैं। अगर आप भी अपने घर के किसी छोटे कमरे या जगह को एक नया लुक देना चाहते हैं जिससे कमरा मेसी भी न लगे तो ये टिप्स जरूर फॉलो करें। किसी भी छोटी जगह को ऑर्गनाइज़ और डेकोरेट करना बहुत मुश्किल काम लगता है। अगर कमरा छोटा हो और उसमें चीजें सही ढंग से फिट ना की गई हों तो कमरा अव्यवस्थित लगता है। अक्सर छोटे कमरे को सजाने के लिए हम कई चीजें रख देते हैं जिससे कमरा तंग लगने लगता है। आज के इस लेख में हम आपको बताएंगे कि आप कैसे छोटी जगह को स्मार्ट तरीके से इस्तेमाल कर सकते हैं। अगर आप भी अपने घर के किसी छोटे कमरे या जगह को एक नया लुक देना चाहते हैं जिससे कमरा मेसी भी न लगे तो ये टिप्स जरूर फॉलो करें। छोटी जगहों को सजाते वक्त हमेशा ध्यान दें कि कमरे में बेकार की चीज़ों को ना रखें। कमरे में वही फर्नीचर या सामान रखें जो काम का हो क्योंकि ज़्यादा सामान से कमरा और ज़्यादा छोटा लगेगा। अगर आपके कमरे में बहुत सारी चीजें इधर-उधर रखी होंगी तो इससे कमरा और छोटा नज़र आएगा। इसलिए ध्यान दें कि आपके कमरे में सारी चीज है सही तरह से फिट हों। अगर घर छोटा हो तो आप किचन एरिया का इस्तेमाल स्मार्ट तरीके से करके काफी जगह बचा सकते हैं। आप किचन में ही बेसिन के काउंटरटॉप और खाने की जगह पर दो या तीन कुर्सियों को रख सकते हैं। इससे आप किचन को डाइनिंग स्पेस के तौर पर भी इस्तेमाल कर पाएंगे। आप किचन में काले, ग्रे या व्हाइट कलर का इस्तेमाल कर सकते हैं। बेडरूम घर का ऐसा हिस्सा है जहाँ हम अपनी दिनभर की थकान के बाद समय बिताते हैं। कई बार बेडरूम में इतना ज़्यादा सामान होता है इससे कमरा अव्यवस्थित और छोटा दिखने लगता है। ऐसे में आप बेडरूम में सामान को ऑर्गनाइज़ करने के लिए क्लोजेट आर्गेनाइज़र और स्टोरेज कंटेनर्स का इस्तेमाल कर सकते हैं। अगर आपका घर छोटा है तो आप बालकनी या विंडो एरिया को भी स्मार्ट तरीके से इस्तेमाल कर सकते हैं। आप घर के इस हिस्से को वर्कप्लेस, दोस्तों के साथ हैंगऑउट करने या एकांत में किताब पढ़ने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए बस बालकनी में कुछ गद्दे डालकर उसे मल्टीकलर कुशन से सजाएं।

स्वामी, प्रकाषक, मुद्रक विवेक श्रीवास्तव द्वारा ओम साई क्रियेषन्स, आषा काम्प्लक्े स, इन्दिरा नगर लखनऊ से मुद्रित एवं पहला तल, निधि काम्प्लेक्स, विकास नगर लखनऊ (उ0प्र0) से प्रकाषित।
RNI No.UPHIN/2015/6090 सम्पादक- विवेक श्रीवास्तव, फोन नं0- 8004949556, 7570901365 Email. info@theachievertimes.com किसी भी वाद विवाद का निस्तारण लखनऊ न्यायालय ही मान्य होगा।

समाचार-पत्र का मुख्य उद्देय ग्रामीण भारत का सत प्रतिशत मीडिया कवरेज कर समाज में फैला भ्रष्टाचार समाजिक बुराइयों एवं कुरीतियों को अपने स्तर पड़ताल करके सम्बन्धित उच्चअधिकारियों को ध्यानकर्षण कर उन्हें समाप्त कराना है।